अकादमी परिसर का आकाशीय दृश्य

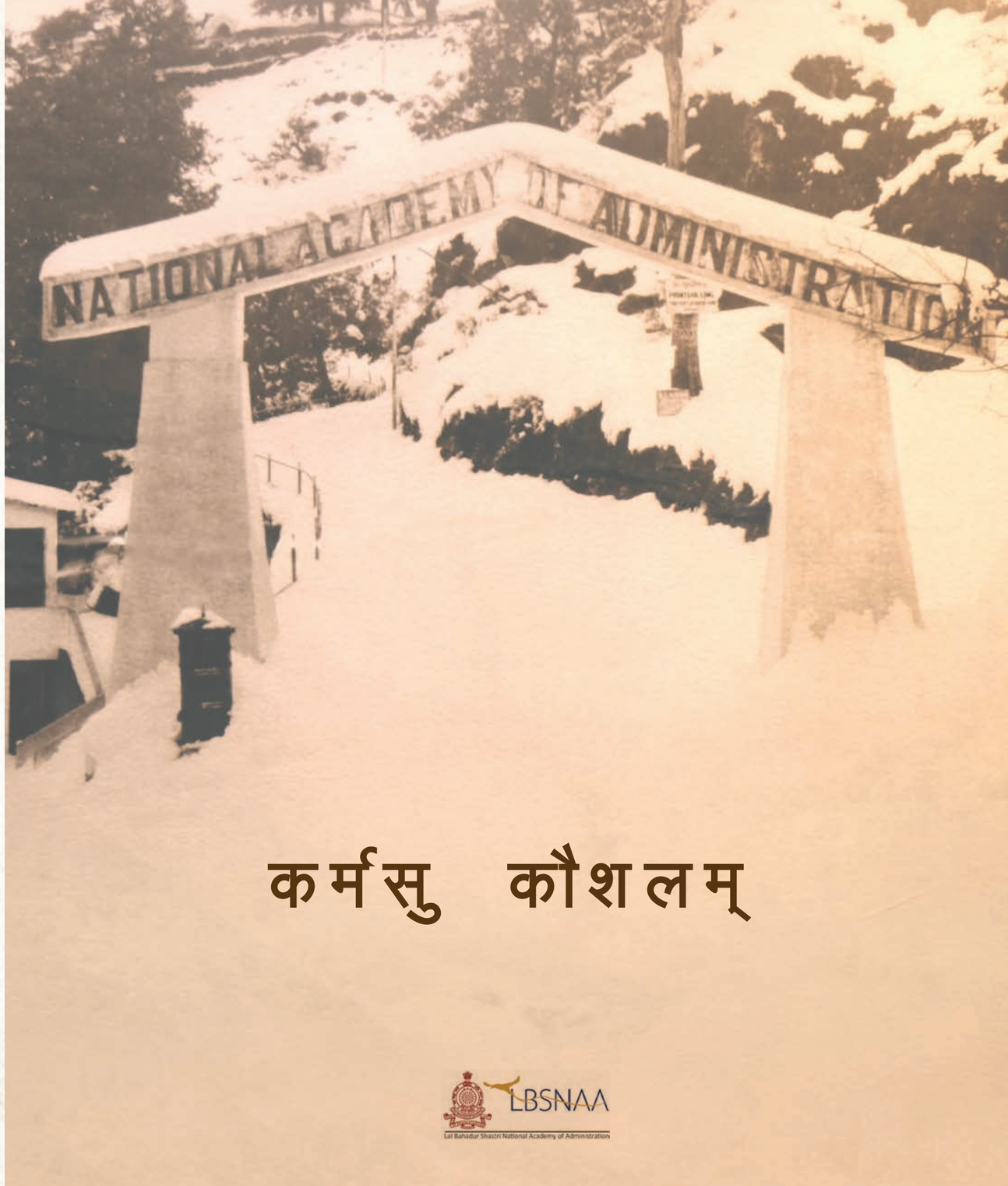

कर्मसु कौशलम्

LBSNAA

Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration

वर्ष 2019 में

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी
(ला.ब.शा.रा.प्र.अ)

मसूरी 248179, उत्तराखंड, भारत, द्वारा प्रकाशित

कॉपीराइट © 2019 ला.ब.शा.रा.प्र.अ.

सर्वाधिकार सुरक्षित.

प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से का पुन: प्रस्तुतिकरण, पुनर्प्राप्ति के लिए संग्रहण या इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग तथा अन्य किसी भी रूप में, प्रेषित किया जाना वर्जित है.

पुस्तक में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास किए गए हैं. अनजाने में हुई कोई भी त्रुटि खेदजनक है. हम उन सभी लोगों को विशेष धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अकादमी में बिताए अपने दिनों की कहानियां उदारतापूर्वक हमसे साझा कीं, साथ ही इस अंक को संभव बनाने के लिए ला.ब.शा.रा.प्र.अ. के प्रत्येक अधिकारियों और कर्मचारियों को आभार.

अनुसंधान, सामग्री और संपादन
भारतीय सांस्कृतिक निधि (इन्टेक) संपादकीय और
रचनात्मक मंडल:
निरुपमा वाई. मॉडवेल
सहायक टीम: अनुराग श्रीनिवासन, तिलक तिवारी,
बिपाशा मजुमदार, हरीश बेंजवाल और तृप्ता सिंह
हिंदी अनुवाद: पारुल अग्रवाल

ला.ब.शा.रा.प्र.अ. संपादक मंडल: आरती अहूजा, मनोज नायर, गौरी पराशर जोशी, कुमुदिनी नौटियाल और अलंकृता सिंह

तस्वीरें
ला.ब.शा.रा.प्र.अ अभिलेखागार
हरीश बेंजवाल के नेतृत्व में इन्टैक टीम
पृष्ठ 76 भी देखें

पुस्तक की रुपरेखा
एआईसीएल कम्यूनिकेशन्स लिमिटेड

प्रिंटिंग
प्रिंट रिसॉर्ट

"मेरे अनुसार शासन का मूल विचार, समाज को संभाले रखना है, ताकि समाज विकसित हो और निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ सके."

~ लाल बहादुर शास्त्री

ऊपर: भारत के माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी, माननीय राज्य मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह और अन्य अतिथियों की उपस्थिति में प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ बातचीत करते हुए
नीचे: माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी, के अकादमी आगमन के चित्र

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

भारत के माननीय प्रधान मंत्री का संदेश

मैं लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी के अपने सुखद और समृद्ध दौरे को याद करता हूं. यह कई मायनों में मेरे लिए सीखने का एक अनुभव था. अकादमी में मैंने पाया, इस महान देश का एक सूक्ष्म प्रारूप, जो हमारी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिबिंब था.

युवा प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ मेरी बातचीत ने उनकी आकांक्षाओं, और सिविल सेवकों के रूप में उनकी भूमिका और उद्देश्य के बारे में, मुझे एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की. मुझे विश्वास है कि अकादमी के प्रति प्रतिबद्ध प्राध्यापक, संरक्षण व प्रशिक्षण की भावना के साथ, युवा सिविल सेवकों को वो कौशल और मूल्य-व्यवस्था प्रदान करेंगे, जो एक नए भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है.

31 अक्टूबर 2017 को भारत
के माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेंद्र मोदी
द्वारा अकादमी को लिखे गए
पत्र से उद्धृत

विषय सूची

निदेशक की कलम से

कल, आज और कल 4

कल, आज और कल
राष्ट्रीय अखंडता: सरदार पटेल की भूमिका
मेटकॉफ हाउस से शार्लेविल तक: जी.बी. पंत, मसूरी और राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी
संसद में हुई बातचीत
अकादमी: प्रारंभिक वर्ष
मेटकॉफ हाउस. शार्लेविल. डाक घर: एनएए
साठ वर्षों की उत्कृष्टता

शीलं परम भूषणम् 22

आधारभूत मूल्य
रहो धर्म में धीर
शीलं परम भूषणम्
योग: कर्मसु कौशलम्
एक विहंगम दृश्य

बदलाव की बयार और एक नई उड़ान 34

बदलाव की बयार...
...और एक नई उड़ान
उत्कृष्टता के केंद्र
उपदेशक

राष्ट्रसेवा में समर्पित 48

प्रशासकों को गढ़ना
व्यक्तित्व निर्माण

एक सांझी तकदीर 58

एक सांझी तकदीर
घर से दूर एक घर
समय की लय में
दोस्ती-यारी के वो दिन
उनके अपने शब्दों में...
संवेदना. ऊर्जा. उत्कृष्टता

निदेशक की कलम से

कर्मसु कौशलम्, इस स्मृति-अंक की प्रस्तावना लिखकर मैं खुद को सौभाग्यशाली और गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं. यह भारत के श्रेष्ठतम संस्थानों में से एक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी द्वारा, छह दशकों तक राष्ट्र की सेवा की बानगी प्रस्तुत करता है. अकादमी का नाम भारत के द्वितीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के नाम पर पड़ा, जिन्होंने हरित क्रांति की शुरुआत कर, राष्ट्र निर्माण में सैनिकों और किसानों के योगदान को *'जय जवान जय किसान'* के नारे से उल्लिखित किया. संस्थान का सूत्र और इसका उद्देश्य 10 अक्टूबर, 1949 को दिए सरदार पटेल के उस भाषण से स्पष्ट हो जाता है, जिसमें उन्होंने कहा था, *''आपके पास एक अखंड भारत नहीं होगा, अगर आपके पास बेहतर अखिल भारतीय सेवाएं नहीं होंगी, जो स्वतंत्र रूप से सोचती हों.''* इन कद्दावर नेताओं के विश्वास और उनके विचारों से प्रेरित होकर अकादमी ने बेहतरीन अफसरों को गढ़ा है. इन अधिकारियों द्वारा अकादमी ने देश में शासन, विकास, समानता और सामाजिक न्याय का एक मज़बूत तंत्र खड़ा किया है.

दुर्लभ तस्वीरों, अनुभवों और स्मृति-चिन्हों का यह विविध संग्रह, अकादमी से जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं और उसकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है. हर तस्वीर अपने में हजारों कहानियां समेटे है, और हर स्मृति, हर कविता अपने समय की चेतना को प्रतिबिंबित करती है. यह संग्रह इस बात का भी साक्षी है, कि हमारा देश और यह संस्थान समय के साथ और सशक्त होते गए हैं.

अकादमी का गीत— *'रहो धर्म में धीर, रहो कर्म में वीर, रखो उन्नत शीर, डरो न'*; अकादमी का सूत्रवाक्य— *'शीलं परम भूषणम्'* अर्थात चरित्र ही सर्वश्रेष्ठ अलंकरण है; और भारतीय प्रशासनिक सेवाओं का सिद्धांत-वाक्य—*'योग: कर्मसु कौशलम्'* अर्थात योग, कर्म में परिपूर्णता की खोज है, सिविल सेवकों की कई पीढ़ियों को आज भी प्रेरित करते हैं. ये अधिकारी देश के अलग-अलग हिस्सों में प्रमुख सरकारी पदों पर काम कर रहे हैं, और सेवानिवृत्ति के बाद संवैधानिक पदों, अकादमिक संस्थानों, नागरिक समाज और कॉर्पोरेट जगत में इन आदर्शों का विस्तारण करते हैं.

माननीय प्रधान मंत्री विशेष रूप से युवा प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ, समय और ऊर्जा व्यतीत कर रहे हैं, ताकि अफसरों में वो चरित्र और स्वभाव पैदा हो सके, जो उन्हें एक राष्ट्रभक्त अधिकारी के रूप में ईमानदार और प्रभावपूर्ण तरीके से, जनसेवा के लिए उन्मुख करे. कई अफसरों को प्रशिक्षण के अंतर्गत 'महत्वाकांक्षी जिलों' में भेजा गया है, ताकि वो लीक से हटकर समाधान ढूंढ सकें. सिविल सेवाओं को 2024 तक भारत की अर्थव्यवस्था को पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का ज़िम्मा भी सौंपा गया है. इसका उद्देश्य गरीबी उन्मूलन और भारत को पारिस्थितिक रूप से दीर्घकालिक विकास की ओर अग्रसित करना है.

फाउंडेशन कोर्स और अन्य पाठ्यक्रमों के ज़रिए अफसरों को *अंत्योदय,* सिद्धांतों-निष्ठा, सम्मान, व्यावसायिकता और सहयोग जैसे आधारभूतों पर अमल के लिए प्रेरित करते हुए, अकादमी इस लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में प्रतिबद्ध है. हम आशा करते हैं कि यह एक ऐसी जगह है, जहां वे गहराई से सोचना, घनिष्ट मित्र बनाना, सहानुभूति और सत्यता जैसे बुनियादी मूल्यों को बनाए रखना सीखेंगे और अपनी योग्यता व उत्तरदायित्व को जहन में रखते हुए भारत और उसके नागरिकों की सेवा करेंगे.

इस प्रक्रिया के दौरान हम आपके सुझाव और विचार जानने के लिए तत्पर हैं, ताकि हम अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पाठ्य-सामग्री में ऐसे सुधार कर सकें जो राष्ट्र-निर्माण जैसे भव्य लक्ष्य की प्राप्ति में हमारे योगदान को सार्थक बनाए रखें.

जय हिन्द.

सितम्बर 1, 2019
मसूरी

संजीव चोपड़ा

अध्याय १

कल, आज और कल

मसूरी स्थित लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (ला.ब.शा.रा.प्र.अ) सन् 1959 से भारतीय सिविल सेवाओं से जुड़े अधिकारियों को प्रशिक्षित कर रही है. स्थापना के शुरुआती वर्षों से ही देश के इस प्रतिष्ठित संस्थान ने राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई है. भारत का प्रशासनिक कार्यभार संभालने वाले अधिकारियों को बेहतरीन प्रशिक्षण प्रदान कर अकादमी ने देश का भविष्य गढ़ने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है. पिछले 60 साल के दौरान अकादमी ने प्रशासनिक सेवाओं को चुनने वाली विलक्षण प्रतिभाओं को तराश कर उन्हें योग्य अफसर बनाने का काम किया है. ये अफसर भारतीय प्रशासनिक ढांचे की रीढ़ हैं.

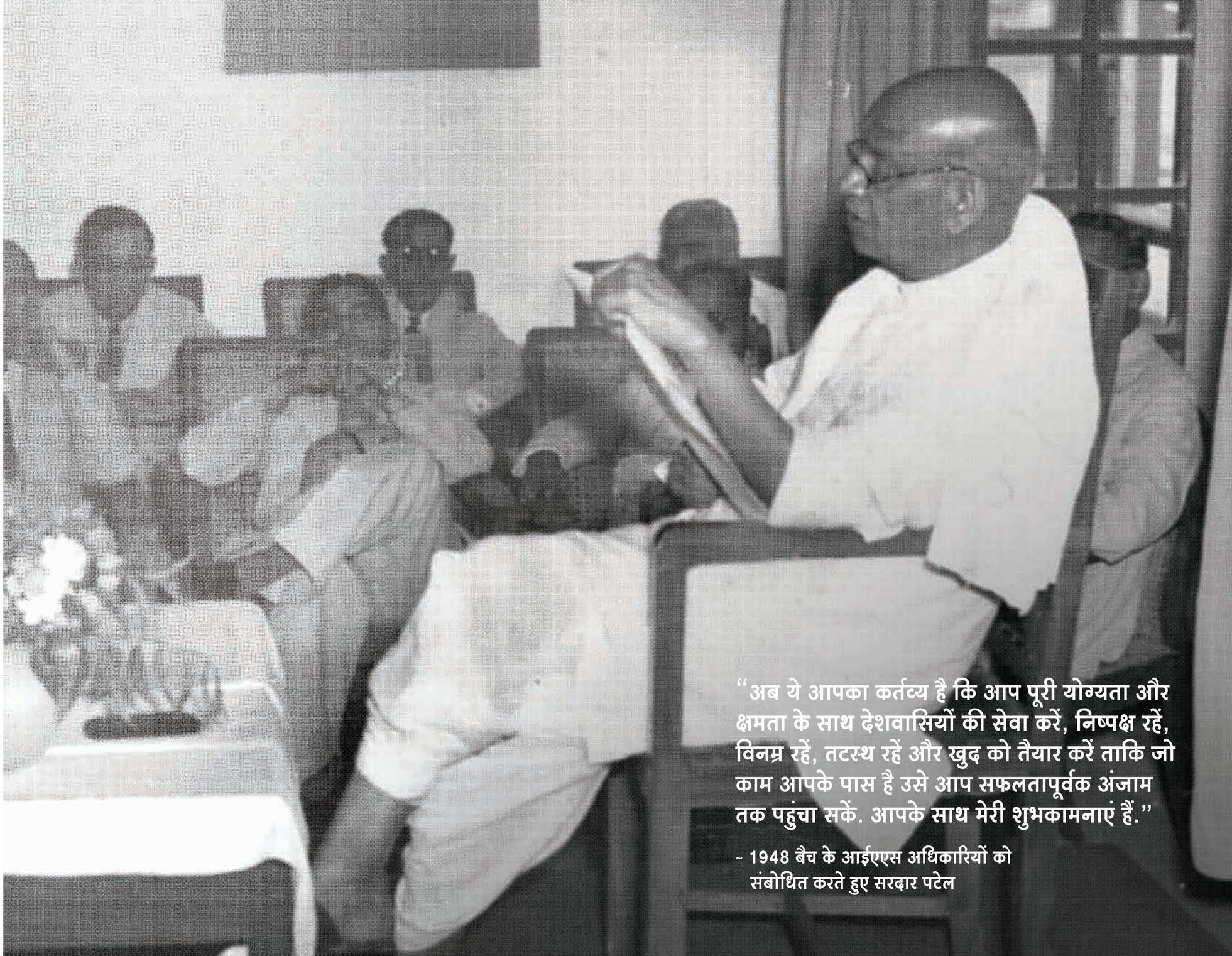

"अब ये आपका कर्तव्य है कि आप पूरी योग्यता और क्षमता के साथ देशवासियों की सेवा करें, निष्पक्ष रहें, विनम्र रहें, तटस्थ रहें और खुद को तैयार करें ताकि जो काम आपके पास है उसे आप सफलतापूर्वक अंजाम तक पहुंचा सकें. आपके साथ मेरी शुभकामनाएं हैं."

~ 1948 बैच के आईएएस अधिकारियों को संबोधित करते हुए सरदार पटेल

कल, आज और कल

दिल्ली के मेटकॉफ हाउस के दृश्य, 1843. सर थॉमस मेटकॉफ द्वारा कमीशन रेमिनिर्सेंसिस ऑफ इम्पीरियल दिल्ली से फोलियो. स्रोत: ब्रिटिश लाइब्रेरी बोर्ड

जून 1863 में आईसीएस में चयनित हुए पहले भारतीय श्री सत्येंद्रनाथ टैगोर अपनी ट्रेनिंग लंदन में पूरी कर 1864 में भारत लौटे.

श्री सुभाष चंद्र बोस भी आईसीएस में चुने गए लेकिन उन्होंने 1921 में यह कहकर इस्तीफा दे दिया कि, ''केवल त्याग और संघर्ष की भूमि पर ही राष्ट्र की इमारत खड़ी हो सकती है''

मेटकॉफ हाउस में सिविल सेवकों का प्रारंभिक प्रशिक्षण

भारत में कंपनी राज से शुरु हुआ सिविल सेवाओं का सफर, लंबा लेकिन दिलचस्प है. इस सफर के दौरान, अकादमी ने खुद को इक्कीसवीं सदी के आधुनिक और प्रगतिशील संस्थान के रूप में लगातार परिवर्तित किया. साथ ही आजाद भारत के बदलते सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने ने पिछले कई दशकों में सिविल सेवाओं का प्रारूप बदला है.

सन् 1858 में भारत के ब्रितानी सरकार के अधीन आने के बाद सिविल सेवाओं के प्रारूप और प्रतिमानों में एक बड़ा परिवर्तन आया. व्यापार और प्रशासन का मिलाजुला काम देखने वाले ब्रितानी अधिकारियों के पास अब राज्य से जुड़ी कई तरह की जिम्मेदारियां थीं. उनका कार्यभार और काम करने के तरीके दोनों, बुनियादी रूप से बदल गए. साम्राज्य के प्रवर्तन में मजिस्ट्रेट और कलेक्टर के कार्यालयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

मेरिट के आधार पर सिविल सेवाओं के लिए पहली प्रतियोगी-परीक्षा सन् 1855 में लंदन में आयोजित हुई. हालांकि इस प्रतियोगिता में भारतीयों की भागीदारी पर लगभग रोक थी. सभी वरिष्ठ और महत्वपूर्ण पद ब्रितानियों के लिए आरक्षित थे. इस रवैये ने महत्वपूर्ण और ऊच्च सेवाओं के 'भारतीयकरण' की बहस को जन्म दिया, लेकिन 'भारतीयकरण' की असल शुरुआत पहले विश्व युद्ध के बाद ही हुई क्योंकि अब विश्व के राजनीतिक हालात बदल चुके थे और राष्ट्रीय आंदोलन के जरिए स्वराज की मांग उठ रही थी. दीपक गुप्ता (आईएएस 1974) अपनी किताब *द स्टील फ्रेम: हिस्ट्री ऑफ द आईएएस* में लिखते हैं, *"... भारतीयकरण' का सकारात्मक प्रभाव ये हुआ कि इससे भारतीयों की योग्यता सामने आई, जो मेरिट के आधार पर यूरोपीय नागरिकों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सेवाओं में दाखिल हुए और उन्होंने प्रशासनिक जिम्मेदारियों को निष्पक्षता और दक्षता के साथ निभाने की काबिलियत दिखाई. कुल मिलाकर ये आत्मविश्वास भी पैदा हुआ कि भारत अपनी व्यवस्था का संचालन अपने ही अधिकारियों के जरिए भलीभांति कर सकता है."*[1]

इस प्रकार भारत में आधुनिक सिविल सेवा की नींव पड़ी. सन् 1858 से 1947 तक के ब्रितानी राज के दौरान चुने गए अफसरों को भारत और विदेशों में मौजूद अलग-अलग संस्थानों में प्रशिक्षण दिया जाता था. सेवा में चयनित अनुबंधित और गैर-अनुबंधित, भारतीय और विदेशी उम्मीदवार, ऑक्सफोर्ड, केमब्रिज और डबलिन के ट्रिनिटी कॉलेज में प्रशिक्षण पाते थे. आने वाले सालों में ये प्रशिक्षण दिल्ली के ऐतिहासिक मेटकॉफ हाउस में दिया जाने लगा, जो अब रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) का मुख्यालय है.

राष्ट्रीय अखंडता: सरदार पटेल की भूमिका

भारत की आज़ादी के कुछ साल बाद तक भारतीय सिविल सेवा (आईसीएस) ने प्रशासनिक देख-रेख का काम जारी रखा. भारत को मिली संप्रभुता के मद्देनज़र नई सरकार और प्रशासनिक महकमे ने प्रत्यक्ष रूप से देश की अखंडता और एकता को बनाए रखने की ज़रूरत महसूस की. संविधान सभा में हुई बहस (3:37) के मुताबिक, *''राष्ट्र की अखंडता को लेकर पनप रही चिंता और आशंका के बीच, संघीय योजना के तहत, सभी सरकारी संरचनाओं में 'एकरूपता' स्थापित करने की कोशिश की गई.''* इस 'एकरूपता' को एकीकृत न्याय-व्यवस्था, बुनियादी कानून और अखिल भारतीय सेवाओं के ज़रिए स्थापित किया गया. आर.के.डार (आईएएस 1968) अपनी किताब, *गवर्नेंस एंड द आईएएस: इन सर्च ऑफ रिजिलियंस* में लिखते हैं, *''संविधान सभा ने अखिल भारतीय सेवा को देश में अखंडता और एकता बनाए रखने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा.''*[2]

सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक व्यवस्था में अखिल भारतीय सेवाओं के लिए एक विशिष्ट स्थान की वकालत की. भारत सरकार में गृहमंत्री के पद पर काम करने के अनुभव के चलते वो इन सेवाओं को दिए जाने वाले विशिष्ट दर्जे की अहमियत से वाकिफ़ थे.

अक्टूबर 1946 में बुलाई गई प्रांतीय प्रमुखों की बैठक में पटेल ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, *"...ये न केवल उचित है बल्कि जरूरी है. अगर हम इन सेवाओं को कारगर और कुशल बनाना चाहते हैं, तो एक केंद्रीय प्रशासनिक सेवा बनाई जाए, जिसे हम वो ताकत और अधिकार दें जिसकी जरूरत प्रांतों को होगी, साथ ही केंद्रीय स्तर पर अफसरों को जोड़ा जाए, जैसा कि हम अभी कर रहे हैं. इससे केंद्र में काम कर रहे सरकारी कर्मियों को अनुभव का लाभ मिलेगा और व्यवस्था कुशल होगी, साथ ही जिला प्रशासन संभालने का उनका अनुभव उन्हें लोगों से जुड़ने का अवसर देगा."*[3]

नवंबर 1949 में जब अखिल भारतीय सेवाओं को संवैधानिक गारंटी प्रदान करने पर संविधान सभा में बहस (10:51) हो रही थी, तब सरदार पटेल ने कुछ वर्गों में मौजूद आशंकाओं का निवारण करने की पहल करते हुए कहा, *"ब्रितानी राज्य ख़त्म हो जाएगा—और आपके पास एक संगठित भारत नहीं होगा, अगर आपके पास बेहतर अखिल भारतीय सेवाएं नहीं होंगी, जो स्वतंत्र और सुरक्षित हों अपने विचार प्रकट करने के लिए...ये लोग (अखिल भारतीय सेवाओं से जुड़े अधिकारी) एक जरिया हैं. इन्हें हटा दें तो मुझे भारत में हर तरफ सिवाय उथल-पुथल और अव्यवस्था के कुछ दिखाई नहीं देता."*[4]

बहस और विमर्श के आखिरी चरण में सरदार पटेल, डॉ. बी.आर. आंबेडकर और श्री एन. गोपालस्वामी अयंगार की दलीलों और प्रबोधनों ने ही संविधान सभा द्वारा अखिल भारतीय सेवाओं को संवैधानिक दर्जा दिलाया. संविधान के अनुच्छेद 312 ने न सिर्फ अखिल भारतीय सेवाओं और भारतीय पुलिस सेवा को संवैधानिक दर्जा दिया, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि अगर राज्यों की परिषद (राज्य सभा) बहुमत द्वारा पारित प्रस्ताव के ज़रिए देशहित में एक या एक से ज़्यादा अखिल भारतीय सेवाओं को लागू करना चाहती है, तो संसद, कानूनी प्रक्रिया के ज़रिए इस तरह की और सेवाओं को लागू कर सकती है.

अखिल भारतीय सेवाओं को एक अनूठा दर्जा देने के पीछे मकसद था कि प्रशासनिक व्यवस्था और कार्य-प्रणाली में एकरूपता स्थापित की जा सके और केंद्र में मौजूद प्रशासनिक मशीनरी राज्यों के जमीनी हालात पर पकड़ रख सके.

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, भारत के संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष

श्री एन. गोपालस्वामी अय्यंगार, भारत के संविधान की मसौदा समिति के सदस्य

मेटकॉफ हाउस से शार्लेविल तक: जी.बी. पंत, मसूरी और राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी

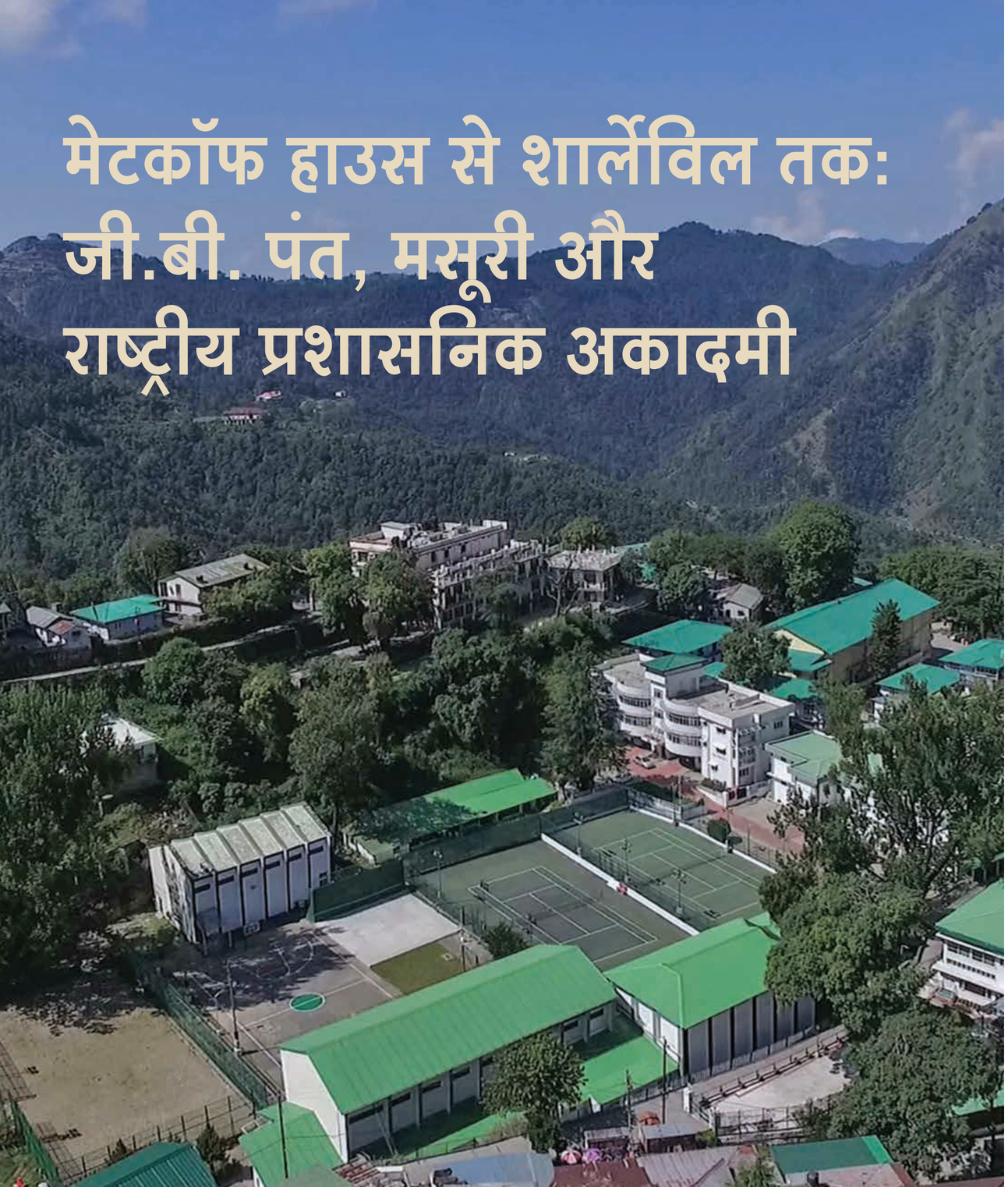

भारत में लोक सेवा आयोग पहली बार 1926 में भारत सरकार अधिनियम, 1919 के प्रावधानों के तहत स्थापित किया गया. इसका उद्देश्य था सिविल सेवा को राजनीतिक प्रभाव से बचाना और इसे स्थायित्व और सुरक्षा प्रदान करना. वर्ष 1937 में आयोग को, भारत सरकार अधिनियम, 1935 के प्रावधानों के तहत संघीय लोक सेवा आयोग के रूप में पहचान मिली. वर्ष 1950 में, भारतीय संविधान लागू होने के बाद इसे संघ लोक सेवा आयोग का नाम दिया गया. आयोग का काम था एक प्रतियोगी परीक्षा के जरिए सिविल सेवकों का चुनाव करना. वर्ष 1957 में यूपीएससी द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में उन चुनौतियों का उल्लेख किया गया है, जिनका संस्थान ने सामना किया. दिलचस्प है, कि यूपीएससी द्वारा इस रिपोर्ट को जारी करने के एक महीने बाद ही, तत्कालीन गृहमंत्री पंडित जी.बी. पंत ने आईएएस और दूसरे कैडर की सेवाओं के लिए अलग से एक प्रशिक्षण संस्थान बनाने की जरूरत ज़ाहिर की. उनका मानना था कि दिल्ली स्थित मेटकॉफ हाउस, जहां से अबतक अफसरों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था, अब पर्याप्त नहीं था.

साल 1958 में पंडित पंत ने लोक सभा में औपचारिक रूप से घोषणा की कि सरकार एक राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी की स्थापना करने जा रही है, जहां सिविल सेवाओं के नव-नियुक्तों को प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि वो भारत के संविधान में मौजूद मूल्यों की रक्षा कर सकें. गृह मंत्रालय ने दिल्ली स्थित 'आईएएस ट्रेनिंग स्कूल' और शिमला स्थित 'आईएएस स्टाफ कॉलेज' को राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी के रूप में सम्मिलित करते हुए मसूरी के शार्लेविल एस्टेट में स्थानांतरित करने का फ़ैसला किया. पंडित पंत का मानना था कि सभी अफसरों का प्रशिक्षण एक ही स्थान पर होने से उनके बीच परस्पर सहयोग की भावना पैदा होगी. 15 अप्रैल 1958 को लोक सभा में दिए एक भाषण में उन्होंने कहा:

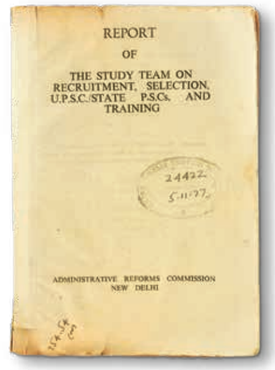
REPORT
OF
THE STUDY TEAM ON RECRUITMENT, SELECTION, U.P.S.C./STATE P.S.Cs. AND TRAINING

24422
5.11.77

ADMINISTRATIVE REFORMS COMMISSION
NEW DELHI

> "हममें से कई लोगों ने आज़ादी मिलने के बाद और कई जो प्रशासनिक कार्य-प्रणाली से पहले से जुड़े थे, उन्होंने भारतीय सेवाओं में दृष्टिकोण और प्रारूप संबंधी उचित बदलाव के लिए ईमानदार प्रयास किए हैं. हम एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी स्थापित किए जाने की प्रस्तावना करते हैं, ताकि चुने गए अफसर जहां भी काम करें, प्रशासनिक अधिकारी की तरह या फिर लेखाकार या राजस्व अधिकारी के रूप में, उनमें सेवा का जज़्बा हो और वो अपने कर्तव्यों का निर्वहन इस तरह करें कि उनकी कार्यक्षमता बढ़े और जनता व उनके बीच सामंजस्य और समन्वय हो." [5]

क्योंकि हर तस्वीर कुछ कहती है...

हैप्पी वैली अतिथि गृह में लगी वीथिका

संसद में हुई बातचीत

अप्रैल 15, 1958

पंडित जी.बी. पंत ने संसद में घोषणा की कि वो एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी स्थापित करने की प्रस्तावना करते हैं, ताकि सभी अधिकारी प्रशासनिक सेवा की भावना को आत्मसात कर सकें.

अप्रैल 16, 1958

श्री के.सी. रेड्डी (तत्कालीन निर्माण, आवास और आपूर्ति मंत्री) ने बताया कि सरकारी अधिकारी इस बाबत जमीन अधिकृत करने के लिए मसूरी गए हैं, और अलग-अलग निजी-संपत्ति-मालिकों से उनकी बातचीत हो रही है.

नवंबर 20, 1958

निर्माण, आवास और आपूर्ति मंत्री से आईएएस प्रशिक्षण संस्थान को मसूरी स्थानांतरित किए जाने संबंधी सवालों का जवाब देने को कहा गया. संसदीय दस्तावेज़ों के सहारे, लोक सभा में हुई उस बहस को पुनर्रावृत्त किया जा रहा है:

श्री अनिल के. चंदा (निर्माण, आवास और आपूर्ति मंत्री): *"मसूरी में आईएएस प्रशिक्षण संस्थान के लिए उचित जगह अधिकृत करने को लेकर अब भी विचार किया जा रहा है."*

श्री भक्त दर्शन द्वारा पूछा गया सवाल: *"क्या वजह है कि उचित स्थान के तौर पर गृह मंत्री जी.बी पंत द्वारा खुद शार्लेविल होटल का विकल्प सुझाए जाने के बावजूद इस निर्णय में देरी हो रही है."*

श्री अनिल के. चंदा: *"यह एक तरह का व्यावसायिक समझौता है. हम एक निजी संपत्ति का अधिग्रहण करने जा रहे हैं और जाहिर है कि हम मुनासिब दाम तय करना चाहते हैं."*

श्री वासुदेवन नैयर द्वारा पूछा गया सवाल: *दिल्ली के बजाय मसूरी में इस स्कूल की स्थापना से क्या कोई विशेष लाभ होगा?*

श्री अनिल के. चंदा: *"कुछ विशेष लाभ हैं जैसे कि ये जगह दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं. हम पूरे भारत की बात कर रहे हैं. ये स्कूल किसी एक राज्य के लिए नहीं बल्कि पूरे भारत के लिए है. इसके फायदे हैं: दिल्ली के निकट, बेहतर जलवायु और वन अनुसंधान संस्थान व देहरादून के मिलिट्री स्कूल से इस जगह की नजदीकी जहां इन अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होंगी."*

अगस्त 14, 1959

प्रश्न संख्या 449: आईएएस प्रशिक्षण संस्थान को मसूरी स्थानांतरित किए जाने की दिशा में अब तक क्या प्रगति हुई है.

श्री अनिल के. चंदा का जवाब: *"संस्थान को मसूरी में स्थापित करने संबंधी तैयारियां लगभग पूरी होने वाली हैं. उम्मीद है कि इस महीने के अंत तक प्रशिक्षण संस्थान मसूरी में स्थापित हो जाएगा."*

पूछा गया कि मामले में देरी की क्या वजह है: श्री अनिल के. चंदा: *"हमने इमारत को अधिकृत करने के लिए अपने अधिकारियों को भेजा है. जैसा कि मैंने कहा, बहुत मुमकिन है कि इस महीने के अंत तक स्कूल मसूरी में स्थानांतरित हो जाए."*

पूछा गया कि इस बात में कितनी सच्चाई है कि जिस मूल्य पर सरकार शार्लेविल एस्टेट को अधिकृत कर रही है वह बाजार मूल्य से अधिक है:

श्री अनिल के. चंदा: *"मुझे नहीं लगता कि ऐसा है. यह एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसमें ज़मीन, इमारत और फर्नीचर जैसी कई चीजें शामिल हैं. क्रॉकरी, कटलरी और दूसरी उपभोग्य सामग्री के साथ इस पूरी संपत्ति को कुल* **4 लाख** *में ख़रीदा गया है."*[6]

अकादमी के प्रारंभिक वर्ष

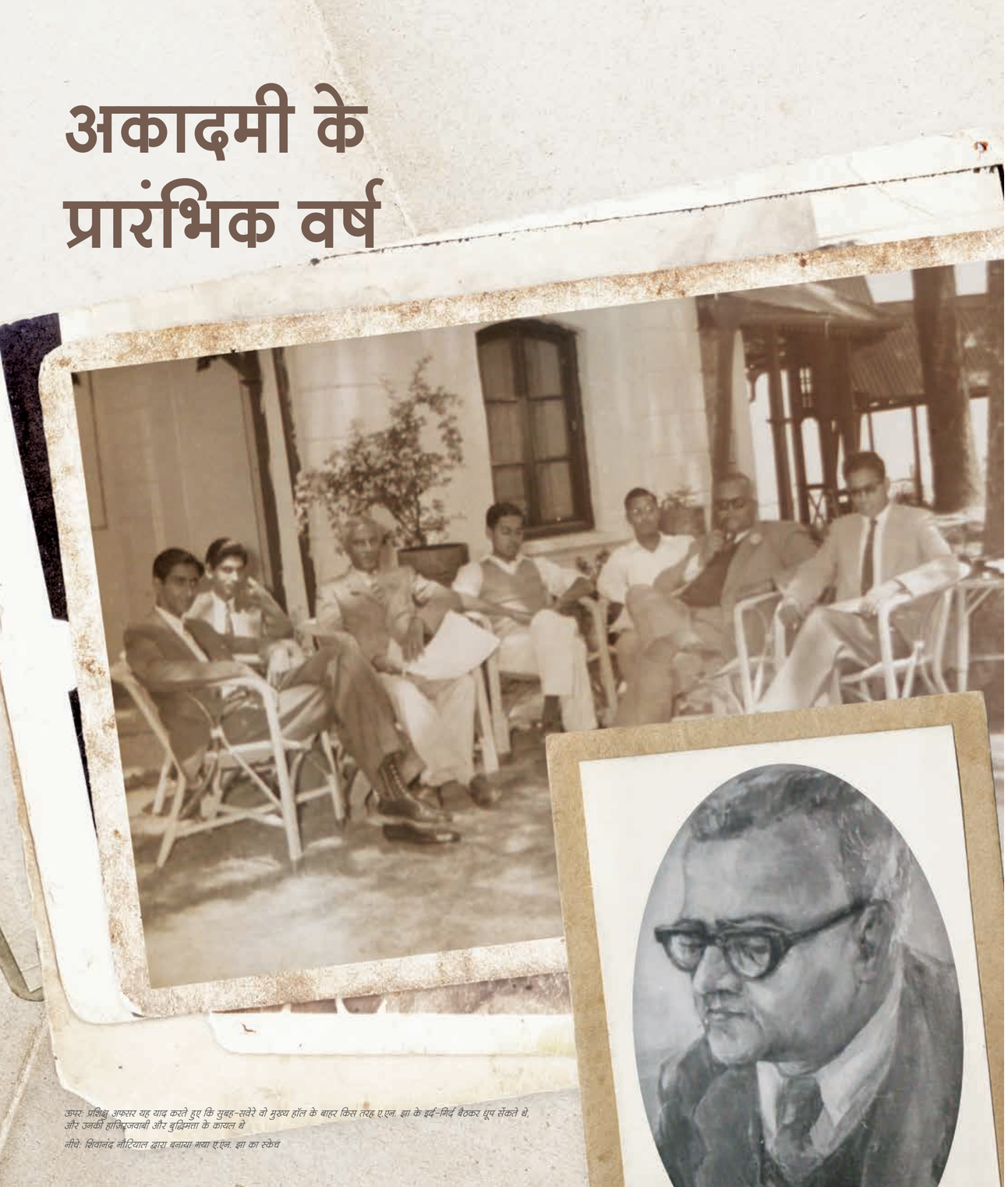

ऊपर: प्रशिक्षु अफसर यह याद करते हुए कि सुबह-सवेरे वो मुख्य हॉल के बाहर किस तरह ए.एन. झा के इर्द-गिर्द बैठकर धूप सेंकते थे, और उनकी हाज़िरजवाबी और बुद्धिमत्ता के कायल थे

नीचे: शिवानंद नौटियाल द्वारा बनाया गया ए.एन. झा का स्केच

आर.के. त्रिवेदी

हैप्पी वैली अतिथि गृह

मसूरी में अकादमी की स्थापना, वर्ष 1959 में हुई. इसके साथ ही परिसर में निदेशक का दफ़्तर, भाषा विभाग (नवीनीकरण के बाद जिसका नाम शार्लेविल रखा गया), सरदार पटेल हॉल और हैप्पी वैली गेस्ट हाउस भी स्थापित किए गए.

वर्ष 1959 बैच के आईएएस अधिकारी एन.एन वोहरा अकादमी को मेटकॉफ हाउस से मसूरी पुनर्वासित करने को लेकर कहते हैं, *''हम मेटकॉफ हाउस में एक प्रशिक्षु के तौर पर अपनी नई ज़िंदगी में ढले ही थे, कि अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के हमें मसूरी जाने के लिए तैयार होने को कहा गया. स्थानांतरण को लेकर दी गई वजहों में सबसे दिलचस्प थी: 'दिल्ली से उलट, पहाड़ों के बीच ऐसी कोई चीज़ नहीं होगी जिससे प्रोबेशनर अफसरों का ध्यान भटके, इसलिए वो प्रशिक्षण पर पूरी तरह ध्यान-केंद्रित कर पाएंगे.''*[7]

आदित्य नाथ झा (आईसीएस 1937), को अकादमी का पहला निदेशक चुना गया, एक कद्दावर नेता जिन्होंने आने वाले सालों में सेवाओं के लिए सबसे ऊंचे मानदण्ड तय किए.

अकादमी और मसूरी में उसके स्थानांतरण पर बात करते हुए अकादमी के पहले उप निदेशक आर.के. त्रिवेदी (आईएएस 1943) बताते हैं कि ये पूरी योजना पंडित जी.बी.पंत द्वारा बनाई और क्रियान्वित की गई. वो कहते हैं, *''हालांकि अखिल भारतीय सेवाओं की नींव सरदार पटेल ने रखी, उसके उम्मीदवारों का चयन मेरिट के आधार पर, बेहद कठिन प्रतियोगी परीक्षा के ज़रिए किया जाता था और चयन के बाद दिल्ली स्थित आईएएस ट्रेनिंग स्कूल का प्रशिक्षण उससे भी कठिन था लेकिन, वो पंडित पंत ही थे जिन्होंने मसूरी में राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी की परिकल्पना की. उन्होंने पूरी व्यवस्था में इस तरह के बदलाव किए कि प्रतिभाशाली अफसरों को 'ग्राम्य-संवेदना' के साथ प्रशिक्षित किया जा सके. भारत दर्शन, ब्लॉक विकास अधिकारी (बीडीओ) के साथ कुछ दिन काम करने का अनुभव और गांवों की नियमित यात्राओं को प्रशिक्षण का अहम हिस्सा बनाया गया.''*[8]

मशहूर 'हरी स्टेशनरी' के मालिक राजिंद्र कुमार इस संबंध में कहते हैं, *''इस प्रकिया की शुरुआत त्रिवेदीजी द्वारा कुछ प्रोबेशनर अफसरों को साइट के मुआइने के लिए मसूरी ले जाने से हुई. मेरे पिताजी से भी इस दल में शामिल होने को कहा गया यह देखने के लिए कि क्या कैंटीन को भी स्थानांतरित किया जा सकता है. अगस्त 1959 में हम मसूरी शिफ्ट हो गए. उस वक्त अकादमी में 113 (आईएएस, आईएफएस और सीएस) प्रोबेशनर थे.''*[9]

मसूरी के लोगों को आज भी याद है कि किस तरह 1959 के दो वाकयों ने मसूरी शहर को हमेशा के लिए बदल दिया. अकादमी यहां स्थानांतरित हुई और भारत में शरण लेने के लिए दलाई लामा के साथ आए तिब्बतियों ने हैप्पी वैली को अपना घर बनाया. मसूरी अचानक वो शहर हो गया जहां नौकरशाही, पुलिस या अखिल भारतीय सेवाओं से जुड़ा हर व्यक्ति प्रशिक्षण पाने आता, और इससे शहर का रुतबा बढ़ा.

मेटकॉफ हाउस. शार्लेविल. पीओ एनएए

शार्लेविल होटल का सबसे पहला ज़िक्र *गाइड टू मसूरी* (1907) में मिलता है, जिसमें नजदीकी ज़िलों और सुदूर इलाकों का विस्तार से ब्यौरा दिया गया है. एफ. बॉडीकॉट द्वारा अलग-अलग स्रोतों से इकट्ठा की गई इस जानकारी के मुताबिक, *''परिसर की मुख्य इमारत जनरल विलकिंसन द्वारा बनवाई गई थी, जिन्होंने 1854 में देहरा के महंत से चाजौली की ज़मीन अधिकृत की.1884 में उसका मालिकाना हक़ मिस्टर वुल्जलर को मिला और इसके बाद वही हमेशा इसके मालिक रहे.''* [10]

हैप्पी वैली का मैदान 1904 में ब्रूवर वी.ए मैकिनॉन ने अधिकृत किया. टेनिस कोर्ट के साथ उन्होंने वहां हैप्पी वैली क्लब की स्थापना की और पोलो ग्राउंड पर जिमख़ाना बनाया गया. 'पागल जिमख़ाना' का पहला रिकॉर्ड 19 जून 1943 में मिलता है जब उसके ज़रिए द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंतरराष्ट्रीय राहत संस्था रेड क्रॉस के लिए चंदा इकट्ठा दिया गया.

साल 1958-59 में जब सरकार ने शार्लेविल को ख़रीदने की पेशकश की तबतक होटल के रूप में उसकी प्रसिद्धि और मुनाफ़ा काफ़ी हद तक घट चुका था.

पचास के दशक के अंत में संसदीय कार्यवाही के बाद अकादमी ने मसूरी के शार्लेविल में एक नए सफर की शुरुआत की. स्थानांतरण के लगभग दो दशक के बाद शार्लेविल परिसर में अकादमी का तेज़ी से विस्तार हुआ. अकादमी में प्रशिक्षु अधिकारियों की संख्या में उछाल आया और बढ़ती संख्या को समायोजित करने के लिए दो नए हॉल तथा स्टेपलटन व इंदिरा भवन जैसी इमारतों को अधिकृत किया गया. साल 1975 से 1978 के बीच गंगा, कावेरी और नर्मदा नाम से तीन बहुमंज़िला छात्रावास बनाए गए.

24 मई 1984 को बिजली के शार्ट-सर्किट से लगी आग ने वीआईपी गेस्ट रूम, लाईब्रेरी, डाइनिंग हॉल, निदेशक आवास और मुख्य ब्लॉक को लपेटे में ले लिया. इस आग में शार्लेविल की लगभग सभी पुरानी इमारतें हमेशा के लिए राख़ हो गईं.

1991 में उत्तरकाशी में आए भीषण भूकंप ने लेडीज़ ब्लॉक और जी. बी. पंत ब्लॉक को बहुत नुकसान पहुंचाया. इसके बाद इन इमारतों को ध्वस्त कर कार्लिंदी गेस्ट हाउस और ध्रुवशीला बनाया गया.

पिछले कई वर्षों में अकादमी विक्सित हुई है, और इसको विश्व-स्तरीय बनाने के लिए बुनियादी सुविधायें उपलब्ध कराई गयी हैं.

अकादमी में उप डाकघर

सम्पूर्णानंद सभागार

ध्रुवशिला ब्लॉक

भूटान का शाही सिविल सेवा आयोग

अकादमी ने न सिर्फ भारतीय नागरिकों को अफसरों में तब्दील किया है बल्कि पड़ोसी देश भूटान के सिविल सेवकों को भी बेहतरीन प्रशिक्षण दिया है. हर साल भूटान के शाही सिविल सेवा के सदस्य में प्रशिक्षण के लिए आते हैं.

भूटान के शाही सिविल सेवा आयोग (आरसीएससी) और लोक संघ सेवा आयोग (यूपीएससी) के बीच पहला समझौता (एमओयू) 2005 में हुआ, ताकि दोनों देशों के लोक सेवा आयोग समान आदर्शों और सिद्धांतों पर काम कर सकें और उनके बीच एक सूत्र कायम हो. [11]

साठ वर्षों की उत्कृष्टता

1958
राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी की स्थापना के लिए तत्कालीन केंद्रीय गृह मंत्री पंडित गोविंद बल्लभ पंत ने लोकसभा में घोषणा की

1959
अकादमी को मसूरी में स्थापित किया गया, और इसके साथ निदेशक कार्यालय, भाषा ब्लॉक (जिसे बाद में नवीकरण के बाद चार्लेविल का नाम दिया गया), सरदार पटेल हॉल (एसपीएच) और हैप्पी वैली गेस्ट हाउस भी स्थापित हुए

1960
आई.ए.एस., आई.एफ.एस., आई. पी.एस. और केंद्रीय सेवाओं के लिए एक सामान्य फाउंडेशन कोर्स की शुरुआत की गई

1969
अकादमी में प्रशिक्षण का एक सैंडविच पैटर्न पेश किया गया जिसमें चरण-I, संबंधित राज्य कैडर में जिला प्रशिक्षण और इसके बाद चरण- II शामिल था

1970
अकादमी ने गृह मंत्रालय के अंतर्गत स्थापना की तारीख़ से 1970 तक और फिर 1977 से 1985 तक कार्य किया.

1970 – 1977
अकादमी ने सचिवालय के अंतर्गत कार्य किया

1972
अकादमी का नाम बदलकर 'लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी' कर दिया गया

1973
इसके बाद, 'राष्ट्रीय' शब्द जोड़ा गया और यह 'लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी' के नाम से जाना गया

1975 – 1978
गंगा, कावेरी और नर्मदा छात्रावासों का निर्माण किया गया

1984
मई 1984 में कैम्पस का एक हिस्सा, जिस में अधिकारियों का मेस, लाइब्रेरी, वीआईपी गेस्ट हाउस और निदेशक का आवास था, वह एक आग की दुर्घटना में नष्ट हो गया

1985
अकादमी ने भारत सरकार के कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के अंतर्गत काम करना शुरू किया

1988
एनआईसी प्रशिक्षण इकाई की स्थापना की गयी

1989
ग्रामीण अध्ययन केंद्र (जिसे शुरू में भूमि सुधार इकाई कहा जाता था) की स्थापना की गई

1991
अक्टूबर 1991 में, उत्तरकाशी भूकंप ने लेडीज़ ब्लॉक को और जी.बी. पंत ब्लॉक को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया, और इन दो स्थलों पर बाद में ध्रुवशिला और कालिंदी का निर्माण किया गया

सम्पूर्णानंद सभागार को उत्तर प्रदेश के राज्य सरकार द्वारा, उस राज्य के दूसरे मुख्या मंत्री के सम्मान में बनाया गया

1992
भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने करमशीला ब्लॉक का उद्घाटन किया

1995
राष्ट्रीय लिंग केंद्र, जो की सोसायटी पंजीकरण अधिनियम-1860 के तहत एक पंजीकृत समाज है, उसकी स्थापना की

1996
कालिंदी गेस्ट हाउस और ध्रुवशिला का उद्घाटन तत्कालीन केंद्रीय कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री और संसदीय कार्य, श्री एस.आर. बालासुब्रमण्यम ने किया

2004
अस्पताल ब्लॉक का उद्घाटन तत्कालीन गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल ने किया आपदा प्रबंधन केंद्र का भी उद्घाटन किया गया

2010
ज्ञानशिला एकेडमिक ब्लॉक और सिल्वरवुड एक्जीक्यूटिव हॉस्टल का उद्घाटन किया गया

2012
महानदी कार्यकारी छात्रावास का उद्घाटन किया गया

2015
कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री, डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा आधारशिला ब्लॉक का उद्घाटन किया गया

2016
सेंटर फॉर कोऑपरेटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट का नाम बदलकर सेंटर फॉर पब्लिक सिस्टम्स मैनेजमेंट (CPSM) कर दिया गया

2017
प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मोनास्ट्री एस्टेट में नए छात्रावास, घुड़सवारी और घोड़े के अस्तबल और निवास और पोलो ग्राउंड में सिंथेटिक ट्रैक की नींव रखी

2018
चाणक्य हॉल का उद्घाटन किया गया

अध्याय २

शीलं परम भूषणम्

मेटकॉफ हाउस में 21 अप्रैल 1947 को दिए एक विशेष भाषण में सरदार वल्लभभाई पटेल ने तत्कालीन बैच के समक्ष, आज़ाद भारत में प्रशासनिकों की ज़िम्मेदारियों और उनसे उम्मीदों पर अपनी सोच ज़ाहिर की. इस भाषण में सरदार पटेल ने उन सभी कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का ज़िक्र किया जिनके ज़रिए 'सुराज्य' की अवधारणा सिद्ध हो और अच्छी शासन-प्रणाली की नींव पड़े.

सरदार पटेल द्वारा 1947 में दिया गया भाषण

पटेल ने निष्पक्षता, सच्चरित्रता और निष्ठा को इस लक्ष्य की पहली सीढ़ी माना. उन्होंने प्रशासनिकों से इन सिद्धांतों पर अडिग रहने की अपील की और *''परस्पर सौहार्द व 'दल की भावना'''* का आह्वान किया जिसके बिना, *''सेवाएं अपना अभिप्राय खो देंगी.''* उन्होंने कहा, *''आपको इस बात का गर्व होना चाहिए कि आपको सेवाओं से जुड़ने का मौका मिला, जिसकी मर्यादा, प्रतिष्ठा और प्रतिष्ठा से आप अपने पूरे सेवाकाल के दौरान बंधे रहेंगे.''* अपने भाषण में उन्होंने सिविल सेवकों से बिना पुरस्कार की कामना किए, सेवा की सच्ची भावना के साथ प्रशासनिक काम में जुटे रहने, की अपील की. [12]

साल 1948 के बैच से सरदार पटेल की हुई इस बातचीत को याद करते हुए कृपा नारायण (आईएएस 1948) कहते हैं,

स्वतंत्रता के बाद आईएएस अफसरों के पहले बैच के साथ सरदार पटेल

''आपको देश की सर्वोच्च सेवा के लिए चुना गया है जो आपको एक प्रतिष्ठित ज़िंदगी और सुरक्षा प्रदान करेगी. याद रखिए कि भविष्य में आप महत्वपूर्ण पदों पर होंगे. अब ये आपका कर्तव्य है कि आप पूरी योग्यता और क्षमता के साथ देशवासियों की सेवा करें. निष्पक्ष रहें, विनम्र रहें, तटस्थ रहें और खुद को तैयार करें ताकि जो काम आपके पास है उसे आप सफलतापूर्वक अंजाम तक पहुंचा सकें.'' [13]

ये सुशासन के वही सूत्र हैं जिन्हें अकादमी अपने प्रशिक्षुओं में स्थापित करना चाहती है. सेवाओं की विविधता और इनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों को देखते हुए, अकादमी प्रशिक्षुओं को वो योग्यता और कौशल भी प्रदान करती है, जिसके जरिए वो इन अवसरों का भरपूर इस्तेमाल कर सकें.

आधारभूत मूल्य

अकादमी जिन आधारभूत मूल्यों का अनुमोदन करती है वो इस प्रकार हैं:

सत्यनिष्ठा अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में संगत और तटस्थ रहें. ये आपको विश्वसनीय बनाएगा. दोष-सिद्धि में साहस दिखाएं और उनके सामने भी निडर होकर सच बोलें जो बेहद सक्षम और बलवान हों. कभी भी, किसी भी रूप में भ्रष्टाचार सहन न करें चाहे वो--नगद, वस्तु या बौद्धिक रूप में हो.

सम्मान जाति, धर्म, रंग, लिंग, आयु, भाषा, क्षेत्र, विचारधारा और आर्थिक-सामाजिक भिन्नता और विभिन्नता को खुले दिल से अपनाएं. सभी के साथ विनम्रता और सहानुभूति से पेश आएं. भावनात्मक रूप से स्थिर रहें और अभिमान नहीं बल्कि आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ें.

व्यावसायिकता अपने दृष्टिकोण में न्यायसंगत तथा अराजनैतिक रहें; काम और उसके नतीजे के लिए प्रतिबद्ध रहते हुए अपनी ज़िम्मेदारी को पेशेवर ढंग से निभाएं. नियमित रूप से सुधार एवं उत्कृष्टता का लक्ष्य रखें.

परस्पर सहयोग सब के साथ गंभीरता और गहराई से जुड़कर, विचार और कर्म में सहयोग के ज़रिए मतैक्य बनाएं. दूसरों को प्रोत्साहित करें, टीम की भावना विकसित करें और दूसरों से सीखने में हिचक न रखें. पहल करने को तत्पर रहें और अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करें.

वंचितों की सेवा लोगों के साथ बातचीत करते और संपर्क साधते हुए मानवीय रहें; ज़रूरतमंदों की आवाज़ बनें और उनके साथ हो रहे किसी भी तरह के अन्याय से निपटने के लिए तत्पर रहें. ऐसा करने में आप सफल होंगे अगर ये काम पूरी निष्ठा, सम्मान, पेशेवर नज़रिए और परस्पर सहयोग के साथ किया जाए.

मिशन कथन

हमारा लक्ष्य है
गुणात्मक प्रशिक्षण द्वारा कार्यकुशल और जवाबदेह सिविल सेवा का निर्माण करके, सुशासन स्थापित करने में हाथ बंटाना और इसके लिए अकादमी में सहयोगपूर्ण, नैतिक–मूल्य प्रधान व पारदर्शी परिवेश स्थापित करना।

MISSION STATEMENT
We seek to promote good governance, by providing quality training towards building a professional and responsive civil service in a caring, ethical and transparent framework.

अकादमी की प्रशिक्षण-प्रक्रिया इस तरह रची गई है कि प्रशिक्षु अधिकारी संस्थान के साथ गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं. देश के अलग-अलग हिस्सों से आए भिन्न पृष्ठभूमि के लोग, यहां तक की भूटान की शाही सिविल सेवा के विदेशी सदस्य भी अकादमी की एकजुटता में शामिल रहते हैं. यही वो भाव है जो इस संस्थान की पूंजी है. अकादमी की परंपरा और मूल्यों पर अटूट विश्वास और उसकी विरासत को साथ लेकर चलने की आकांक्षा, अधिकारियों के दृष्टिकोण को परिभाषित करती है.

अकादमी का गीत और उसका सूत्रवाक्य प्रारंभ से ही इस जुड़ाव पर बल देते हैं.

2019 में अकादमी की हीरक जयंती को चिह्नित करने के लिए जारी किया गया विशेष कवर

2009 में अकादमी की स्वर्ण जयंती के अवसर पर जारी स्मारक डाक टिकट

डॉ जितेंद्र सिंह, माननीय राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार, अकादमी के हीरक जयंती समारोह में

रहो धर्म में धीर

बांग्ला में लिखा गया यह गीत बंगाली गीतकार, संगीतकार और गायक श्री अतुल प्रसाद सेन (1871-1934) की रचना है. अकादमी ने इसकी संरचना में बदलाव कर इसमें हिंदी, तमिल और मराठी की पंक्तियां जोड़ीं ताकि उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण भारत की भाषाई विविधता को शब्दों के जरिए बांधा जा सके.

हओ धरमेते धीर, हओ करमेते बीर, । बंगला ।
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय।
भूलि भेदाभेद ज्ञान, हओ शबे आगुआन
शाथे आछे भगबान – हबे जॉय। (धुन)
रहो धर्म में धीर, रहो कर्म में वीर । हिंदी।
रखो उन्नत शिर – डरो ना।
नाना भाषा, नाना मत, नाना परिधान, । बंगला।
बिबिधेर माझे देखो मिलन महान।
देखिया भारते महाजातिर उत्थान
जागो जान मानिबे बिश्शय।
जागो मान मानिबे बिश्शय। (धुन)
उल्लत्तिल उरूडियाय सेयल विरमुडन । तमिल।
तलै निमरिन्दु निर्पाय नी।
रहो धर्म में धीर, रहो कर्म में वीर । हिंदी।
रखो उन्नत शिर – डरो ना।
भूलि भेदाभेद ज्ञान, हओ शबे आगुआन, । बंगला।
शाथे आछे भगबान – हबे जॉय। (धुन)
व्हा धर्मात धीर, व्हा करणीत वीर। । मराठी।
व्हा उन्नत शिर – नाही भय
नाना भाषा, नाना मत, नाना परिधान, । बंगला।
बिबिधेर माझे देखो मिलन महान।
देखिया भारते महाजातिर उत्थान
जागो जान मानिबे बिश्शय
जागो मान मानिबे बिश्शय।
हओ धरमेते धीर, हओ करमेते बीर
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय।
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय।।

अकादमी गीत का हिंदी अनुवाद

रहो धर्म में धीर, रहो कर्म में वीर
रखो उन्नत शिर – डरो ना
भूलो भेद सभी, आगे बढ़े चलो
है ईश्वर तुम्हारे साथ, विजय सुनिश्चित करो
भिन्न भाषाएं, भिन्न लोग, भिन्न परिधान
करो भिन्नता में भी, एकता का आह्वान
देख भारत का उदय, भारत की ऊंची शान
विश्व में गूंजे, भारत का प्रशस्ति गान
विश्व में गूंजे, भारत का प्रशस्ति गान [14]

शीलं परम भूषणम्

Sheelam Param Bhushanam

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक् संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा बलवतां धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं **शीलं परम भूषणम्** ।।

~ भर्तृहरि नीति शतक से

'ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्यसंयम अर्थात निराभिमान, ज्ञान का शांति, शास्त्र पढ़ने का क्षमा, धर्म का निश्चलता और सब गुणों का आभूषण केवल शील है.'

योगः कर्मसु कौशलम्

Yogaḥ Karmasu Kauśalam

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व
योगः कर्मसु कौशलम्।।२.५०।।

~ भगवत गीता,
अध्याय 2, श्लोक 50

भगवत गीता के अध्याय 2, श्लोक 50 में कृष्ण अर्जुन को 'स्थिप्रज्ञ' होने का ज्ञान देते हैं — वो व्यक्ति जिसे समबुद्धि प्रदत्त है और जो हर परिस्थिति में अपने कर्म और विचारों पर अडिग है, यह आदर्श व्यक्ति बदलाव की हर बयार से बदलता नहीं, और कर्म में श्रेष्ठता के प्रति प्रतिबद्ध है. वह केवल कर्म की ओर उन्मुख है. वह कर्म में कुशलता के द्वारा 'योग' प्राप्त करता है.

*

एक विहंगम दृश्य

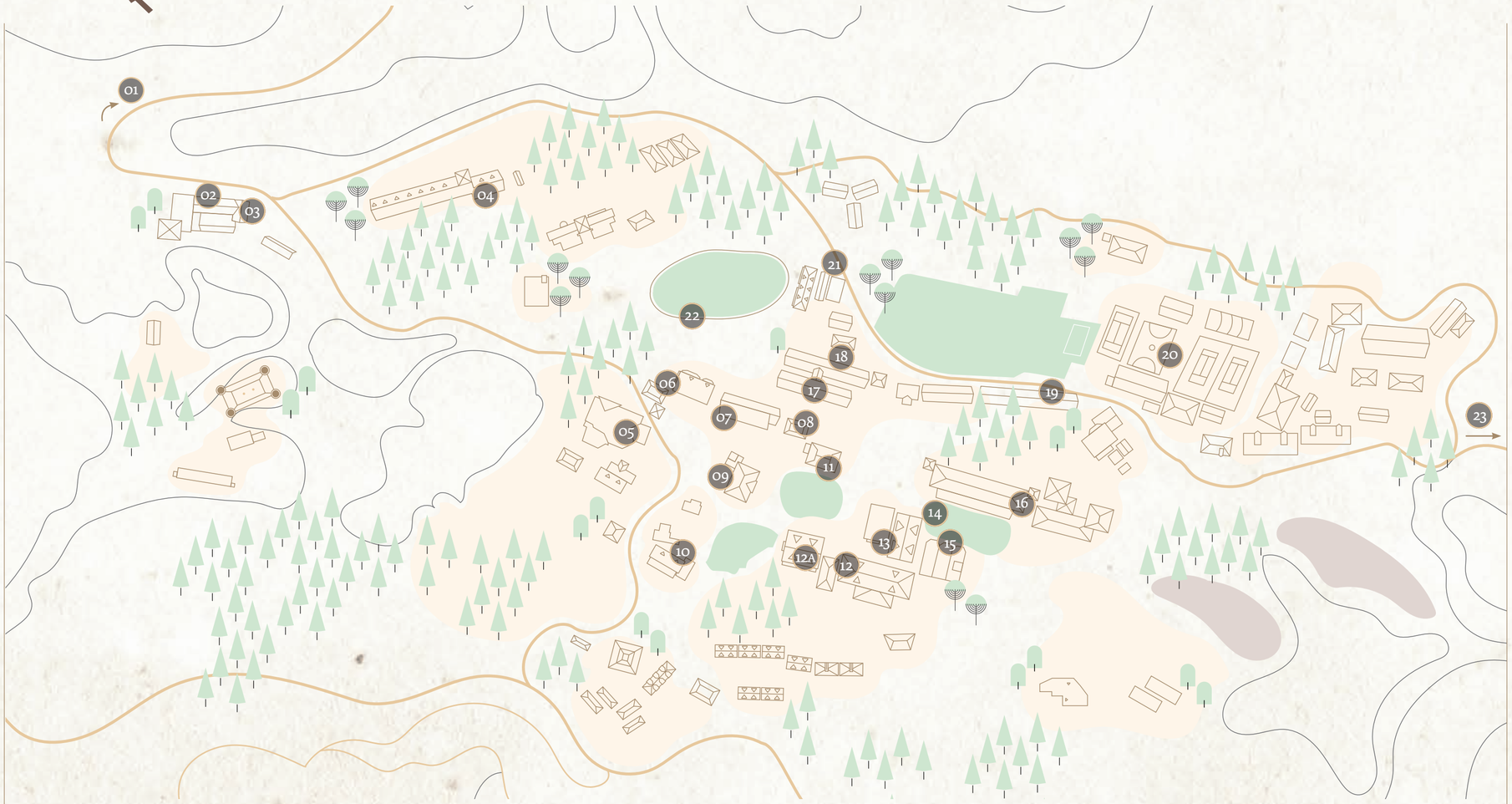

LBSNAA
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration

01
इंदिरा भवन परिसर की ओर

02
शार्लेविल कैफे और स्मारिका की दुकान

03
प्रवेश द्वार

04
सिल्वरवुड कार्यकारी छात्रावास

05
सम्पूर्णानन्द सभाघर

06
पुराना रिसेप्शन

07
सरदार पटेल विशाल कक्ष

08
चाणक्य विशाल कक्ष

09
भाषा ब्लॉक

10
कालिंदी अतिथि गृह

11
निदेशक कार्यालय

12
कर्मशिला ब्लॉक

12A
जी.बी. पंत हॉल

13
ध्रुवशिला ब्लॉक

14
ए.एन. झा चौक

15
ज्ञानशिला ब्लॉक

16
महानदी कार्यकारी छात्रावास और हैप्पी वैली ब्लॉक

17
नर्मदा कार्यकारी छात्रावास

18
कावेरी कार्यकारी छात्रावास

19
गंगा कार्यकारी छात्रावास

20
हैप्पी वैली खेल परिसर

21
सामुदायिक केंद्र

22
सवारी का मैदान

23
पोलो मैदान की ओर

*लाल चोंच वाली ब्लू मैगपाई को अकादमी के प्रतीक चिन्ह में दर्शाया गया है

अध्याय ३

बदलाव की बयार और एक नई उड़ान

सिविल सेवकों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार करने के लिए, जिनपर राष्ट्र निर्माण और फिर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने की दोहरी ज़िम्मेदारी हो एक अलग किस्म की दूरदर्शिता चाहिए. एक ऐसी दूरदृष्टि जो उन सिद्धांतों पर आधारित हो, जो उच्च कोटि की प्रतिबद्धता, उत्साह और सेवा-भाव को उद्वेलित कर सकें.

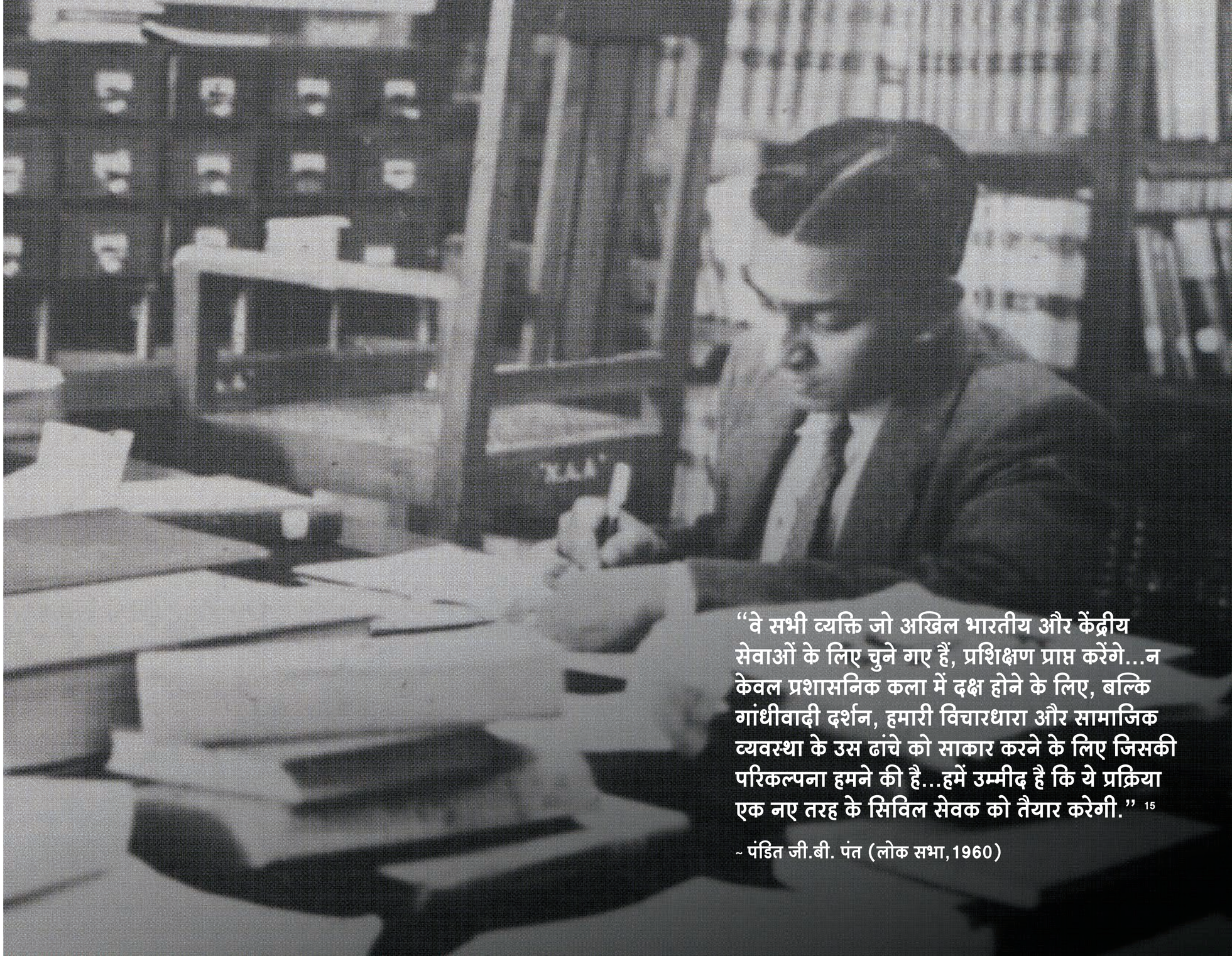

"वे सभी व्यक्ति जो अखिल भारतीय और केंद्रीय सेवाओं के लिए चुने गए हैं, प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे...न केवल प्रशासनिक कला में दक्ष होने के लिए, बल्कि गांधीवादी दर्शन, हमारी विचारधारा और सामाजिक व्यवस्था के उस ढांचे को साकार करने के लिए जिसकी परिकल्पना हमने की है...हमें उम्मीद है कि ये प्रक्रिया एक नए तरह के सिविल सेवक को तैयार करेगी." [15]

~ पंडित जी.बी. पंत (लोक सभा,1960)

बदलाव की बयार...

जिस देश में ज्यादातर मुद्दे बहुआयामी हों और विभिन्नताओं के चलते परत दर परत नई चुनौतियां पेश करें वहां इस दूरदर्शिता का खाका गढ़ना कोई मामूली उपलब्धि नहीं है. अकादमी के सामने एक जटिल चुनौती है, और वो है प्रशिक्षु अधिकारियों को इस अनूठे परिवेश में, जमीनी स्तर पर काम करने के लिए, बौद्धिक रूप से तैयार करने की. साथ ही 'फाउंडेशन कोर्स' के दौरान अलग-अलग सेवाओं में चुने गए अफसरों को एकजुट कर, उनमें दल-बल की भावना विकसित करना भी एक महत्वपूर्ण किंतु कठिन काम है. इसके अलावा अकादमी का लक्ष्य है, खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों के ज़रिए अधिकारियों में अनुशासन, सही मूल्य और ऐसी प्रवृत्तियां पैदा करना जो उन्हें ज़िम्मेदारियों को निभाने में सक्षम बनाएंगे.

इस खेल में आगे रहने के लिए जरूरी है समय के साथ बदलना और नई परिस्थितियों के लिए तैयार रहना; यानी प्रशिक्षण प्रणाली, अध्ययन साम्रगी और अध्यापन में नए सुझावों को लगातार शामिल करना. अपने बैच की चालीसवीं वर्षगांठ के समारोह में शामिल होने मसूरी आई बी. भामथी (आईएएस 1979) अकादमी की इस अनुकूलनशीलता को बयान करते हुए कहती हैं, *"अकादमी अपने कार्यक्षेत्र से जुड़ा एक महान संस्थान है, जिसका पाठ्यक्रम लगातार बदलता है ताकि अधिकारियों को बदलती परिस्थितियों के लिए तैयार किया जा सके".* इसी बैच की जोहरा चटर्जी कहती हैं, *"अकादमी के पास अब आधुनिकतम तकनीक से लैस बुनियादी ढांचा है, बेहतरीन फैकल्टी है, और हम ये देख सकते हैं कि प्रशिक्षु अधिकारियों को नई तकनीक के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है".*

साठ के दशक में, अकादमी में पढ़ाए जाने वाले विषय उस समय के प्रासंगिकता के मुद्दे पर केंद्रित थे. समय के साथ पाठ्यक्रम और अध्यापन-कला में बदलाव के अलावा राष्ट्र-निर्माण में सिविल सेवाओं की भूमिका और सेवाओं के प्रति नज़रिए में भी एक बदलाव आया है. वर्तमान निदेशक, संजीव चोपड़ा (आईएएस 1985) के मुताबिक, सरकारी अफसर अब खुद को प्रशासक नहीं बल्कि विकास अनुदेशक की भूमिका में देखते हैं. अपनी सभी ज़िम्मेदारियों के साथ वो समाज के सबसे गरीब और कमज़ोर तबके के प्रति उन्मुख हैं.

इन बदलावों के बावजूद, पाठ्यक्रम को लेकर बनाया गया प्रारंभिक वर्षों का बुनियादी ढांचा अब भी प्रासंगिक है, जैसे शारीरिक अनुकूलता के लिए रची गई दिनचर्या, प्रशिक्षुओं के बीच बेहद लोकप्रिय भारत दर्शन कार्यक्रम और विभिन्न गतिविधियों में प्रशिक्षुओं की भागीदारी. हालांकि, विषयों, पाठ्य-सामग्री और सीखने के तरीकों में आमूलचूल बदलाव हुए हैं, ताकि उन्हें 'इंटरैक्टिव' और 'इंक्लूसिव' बनाया जा सके. नए तरीकों को अमल में लाने के लिए व्याख्यानों को कम कर असली मुद्दों और उदाहरणों, रोल-प्ले और क्षेत्रीय दौरों पर ज़ोर दिया गया है, ताकि अफसरों में समसामयिक भारत और उसकी समस्याओं के प्रति संवेदना पैदा हो. विशेष निदेशक आरती आहूजा (आईएएस 1990) के मुताबिक, *"वर्तमान पीढ़ी सवाल पूछने की इच्छुक और सीखने को उत्सुक है. अगर हम इस भावना को न समझें और इस जरूरत को पूरा न कर पाएं तो यह निराशाजनक होगा."* समसामयिक मुद्दों की ओर इशारा करते हुए वो कहती हैं कि, बदलते भारत में एसिड अटैक पीड़ितों, ट्रांसजेंडरों, यौनकर्मियों, जबरन विवाह के पीड़ितों और बाल यौन शोषण जैसे मुद्दों की समझ और उनके साथ जुड़ाव जरूरी है.

इस सबके बीच जो नहीं बदला है वो है नई से नई चीज़ों को सीखने और समझने का जज़्बा. अकादमी से प्रशिक्षण पाने वाले वरिष्ठ अधिकारी आज भी यहां होने वाली बहसों और बातचीत की उत्कृष्टता की मिसाल देते हैं. वो नहीं भूलते कि किस तरह उनसे हमेशा ये अपेक्षा की जाती थी कि वो अपनी सोच पर सवाल उठाएं और अपने पूर्वानुमानों को चुनौती दें. ये रवायत आज भी कायम है. ऐसी ही एक बहस का हवाला देते हुए अनुदीप डुरीशेट्टी (आईएएस 2018) कहते हैं,

एक कक्षा सत्र

"जैसे-जैसे बहस आगे बढ़ी मेरी दिलचस्पी यह जानने में नहीं थी कि कौन सी टीम विजेता होगी, क्योंकि बहस और बातचीत अपने आप में इतनी रोचक थी. इससे एक बात जो मेरे भीतर घर कर गई वो है — बातचीत और विचार-विमर्श की ताकत." [16]

एफसी कोर्स की नींव

...और एक नई उड़ान

'विंटर स्टडी टूर' के दौरान सशस्त्र बलों के साथ होने वाला प्रशिक्षण

अकादमी के पाठ्यक्रम का अहम हिस्सा है, 'फाउंडेशन कोर्स' जो अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्रीय सेवाओं को एकरूपता प्रदान करता है. यह कोर्स प्रशिक्षुओं के बीच परस्पर सहयोग की भावना पैदा करता है, जो अकादमी के बुनियादी मूल्यों में से एक है. प्रशिक्षु अधिकारियों के शारीरिक सौष्ठव को चुनौती देने वाली गतिविधियां और बौद्धिक रूप से उन्हें सचेत और प्रेरित करने वाली चर्चाएं, पंद्रह हफ्तों के फाउंडेशन कोर्स को, एक अविस्मरणीय अनुभव बनाती हैं.

फाउंडेशन कोर्स के बाद जहां अन्य सेवाओं से जुड़े अधिकारी विशिष्ट संस्थानों में जाकर अपनी सेवा संबंधी प्रशिक्षण को पूरा करते हैं वहीं आईएएस सेवाओं से जुड़े अफसर अकादमी में कुछ और वक्त बिताते हैं. आने वाला साल उनके लिए कार्यक्षेत्र के लिए अनुभव करने, समाविष्ट करने और सैद्धांतिक रूप से समझने का मिलाजुला अवसर लेकर आता है. 'विंटर स्टडी टूर' जिसमें कई तरह की गतिविधियां और नागरिक समाज से जुड़ी संस्थाओं के साथ काम करने के अवसर शामिल है, इस विशाल लोकतंत्र के यथार्थ और आम नागरिकों के जीवन की वास्तविकताओं को नजदीक से देखने-समझने का मौका देता है. फैज़ 1 के बाद जिलाधिकारी और जिला मजिस्ट्रेट के अधीन रहकर मिलने वाला प्रशिक्षण (डिस्ट्रिक्ट ट्रेनिंग) अफसरों को उनके कार्यभार और जिम्मेदारियों से पूरी तरह अवगत करा देता है. अकादमी में प्रशिक्षण का दूसरा चरण, अफसरों को फील्ड में हुए अनुभवों और जानकारियों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने का समय देता है.

हालांकि अकादमी के साथ जुड़ाव यहीं ख़त्म नहीं होता. विगत वर्षों में ऐसे कई मध्यचरण पाठ्यक्रम जोड़े गए हैं जो नौकरी-पेशा तथा नौकरी में कुछ साल गुज़ार चुके अधिकारियों को विभिन्न स्तरों पर बातचीत करने, सीखने और एक दूसरे के अनुभवों को साझा करने का मौका देते हैं.

वर्ष 2001 में कारगिल युद्ध के बाद एक 'संयुक्त सिविल-सैन्य कार्यक्रम' शुरु किया गया जिसका मकसद था, राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर एक ऐसा मंच तैयार करना जहां सिविल सेवक और सशस्त्र-बल के अधिकारी, विचारों का आदान-प्रदान कर सकें और राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर पैदा होने वाली चुनौतियों पर विमर्श हो सके.

देश-दुनिया के सबसे गहन मुद्दों से निपटने के लिए अधिकारियों का प्रशिक्षण आधुनिकतम और विश्व स्तरीय सुविधाओं के बिना मुमकिन नहीं. शिक्षा और पाठ्यक्रम को समृद्ध करने के लिए अकादमी ने नई तकनीक और सुविधाओं से लैस पुस्तकालय, डिजिटल तकनीक के जरिए पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा तथा अध्ययन के कई नए केंद्र स्थापित किए हैं.

उत्कृष्टता के केंद्र

ग्रामीण अध्ययन केंद्र राज्यों द्वारा कार्यान्वित भूमि सुधार नीतियों और गरीबी उन्मूलन योजनाओं के मूल्यांकन के लिए जिम्मेदार है. यह काम जिला प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्ष अधिकारियों द्वारा जुटाए गए सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर किया जाता है. [17]

आपदा प्रबंधन केंद्र, आपदा प्रबंधन के अलग-अलग पहलुओं से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रम और पाठ्यक्रम तैयार करता है. यह केंद्र कई तरह की गोष्ठियां, कार्यशालाएं, सम्मेलन और अध्ययन मंडलों को भी प्रायोजित करता है, ताकि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा मिले और नई जानकारियां सामने आएं. [18]

राष्ट्रीय लिंग केंद्र में अलग-अलग पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं के ज़रिए वैचारिक और विश्लेषणात्मक स्तर पर 'जेंडर' की अवधारणा को समझने संबंधी प्रशिक्षण दिए जाते है. यह केंद्र, लिंग-विमर्श के जरिए 'जेंडर' संबंधित नीतियों के निर्माण में सहायता प्रदान करने और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय समूहों के लिए सलाहकार का काम करता है. [19]

सार्वजनिक प्रणाली प्रबंधन केंद्र का लक्ष्य अफसरों को कार्यकुशल बनाना है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि राज्य के सेवा वितरण कार्य प्रभावी रूप से हों. सेमिनार और कार्यशालाओं के जरिए यह केंद्र समय-समय पर अधिकारियों को नए सिद्धांतों और प्रशासनिक कार्य से जुड़ी सर्वोत्तम तकनीक से परिचित कराने की भूमिका निभाता है.

अकादमी के कामकाज और जीवनचर्या से जुड़े हर पहलू में एक तरह की तत्परता और तैयारी का एहसास होता है, क्योंकि अकादमी का मिशन है अनुशासन और अध्ययन का एक ऐसा माहौल तैयार करना जहां सीखने की प्रक्रिया कभी रुके नहीं, हमेशा जारी रहे.

इक्कीसवीं सदी ने हमारे समक्ष जो चुनौतियां पैदा की हैं उनसे निपटने में अकादमी एक अर्थपूर्ण भूमिका निभाना चाहती है. अकादमी के पूर्व निदेशक पद्मवीर सिंह (आईएएस 1977) हमारे समय के इस कलेवर को परिभाषित करते हुए कहते हैं,

''एक ऐसा रोमांचक समय जब चरित्र और नैतिकता जैसी भावात्मक अवधारणाएं, काम करने के हुनर जैसी ठोस विशिष्टताओं के साथ मिलकर एक नई और हर तरह से जुड़ी हुई दुनिया का भविष्य तय करेंगी.'' [20]

डॉ. जितेंद्र सिंह, राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय द्वारा आधारशिला ब्लॉक का उद्घाटन

ऊपर: माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी अकादमी में प्रशिक्षु अधिकारीयों के साथ बातचीत करते हुए
नीचे: सीखने और बढ़ने के लिए उत्सुक प्रशिक्षु अधिकारी

उपदेशक

अकादमी के पूर्व निदेशकों के योगदान को नमन *

ए.एन. झा
01.09.1959 – 30.09.1962

एम.जी. पिम्पुटकर
04.09.1965 – 29.04.1968

डी.डी. साठे
19.03.1969 – 11.05.1973

एस.के. दत्ता
13.08.1963 – 02.07.1965

के.के. दास
12.07.1968 – 24.02.1969

*अकादमी के प्रत्येक पूर्व निदेशक का कार्यकाल उनके नाम के नीचे दर्शाया गया है

राजेश्वर प्रसाद
11.05.1973 – 11.04.1977

बी.सी. माथुर
17.05.1977 – 23.07.1977

जी.सी.एल. जोनेजा
23.07.1977 – 30.06.1980

पी.एस. अप्पू
02.08.1980 – 01.03.1982

आई.सी. पुरी
16.06.1982 – 11.10.1982

आर. शास्त्री
09.11.1982 – 27.02.1984

उपदेशक

के. रामानुजम
27.02.1984 - 24.02.1985

आर.एन. चोपड़ा
06.06.1985 - 29.04.1988

बी.एन. युगांधर
26.05.1988 - 25.01.1993

एन.सी. सक्सेना
25.05.1993 - 06.10.1996

बी.एस. बासवान
06.10.1996 - 08.11.2000

वजाहत हबीबुल्लाह
08.11.2000 - 13.01.2003

बिनोद कुमार
20.01.2003 - 15.10.2004

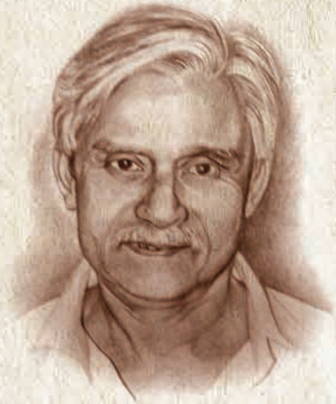

डी.एस. माथुर
29.10.2004 - 06.04.2006

रुद्र गंगाधरन
06.04.2006 - 02.09.2009

पद्मवीर सिंह
02.12.2010 - 28.02.2014

राजीव कपूर
20.05.2014 - 09.12.2016

उपमा चौधरी
11.12.2016 - 31.12.2018

स्केच कलाकार: अंजलि थापा

अध्याय ४

राष्ट्रसेवा में समर्पित

बहुत से लोग इस बात की तस्दीक करेंगे कि सिविल सेवाओं की चयन प्रक्रिया—जिसमें यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करना शामिल है—देश की कठिनतम प्रतियोगी परीक्षाओं में से एक है. लेकिन, चयन प्रक्रिया की चुनौतियां एक अधिकारी के जीवन में आने वाली कठिनाईयों और चुनौतियों का अंश-मात्र है. अकादमी में प्रवेश के बाद ही एक अधिकारी का जीवन सही मायनों में शुरू होता है. ये वो अखाड़ा है जहां युवा प्रशिक्षु को तराश कर प्रशासकों की शक्ल दी जाती है.

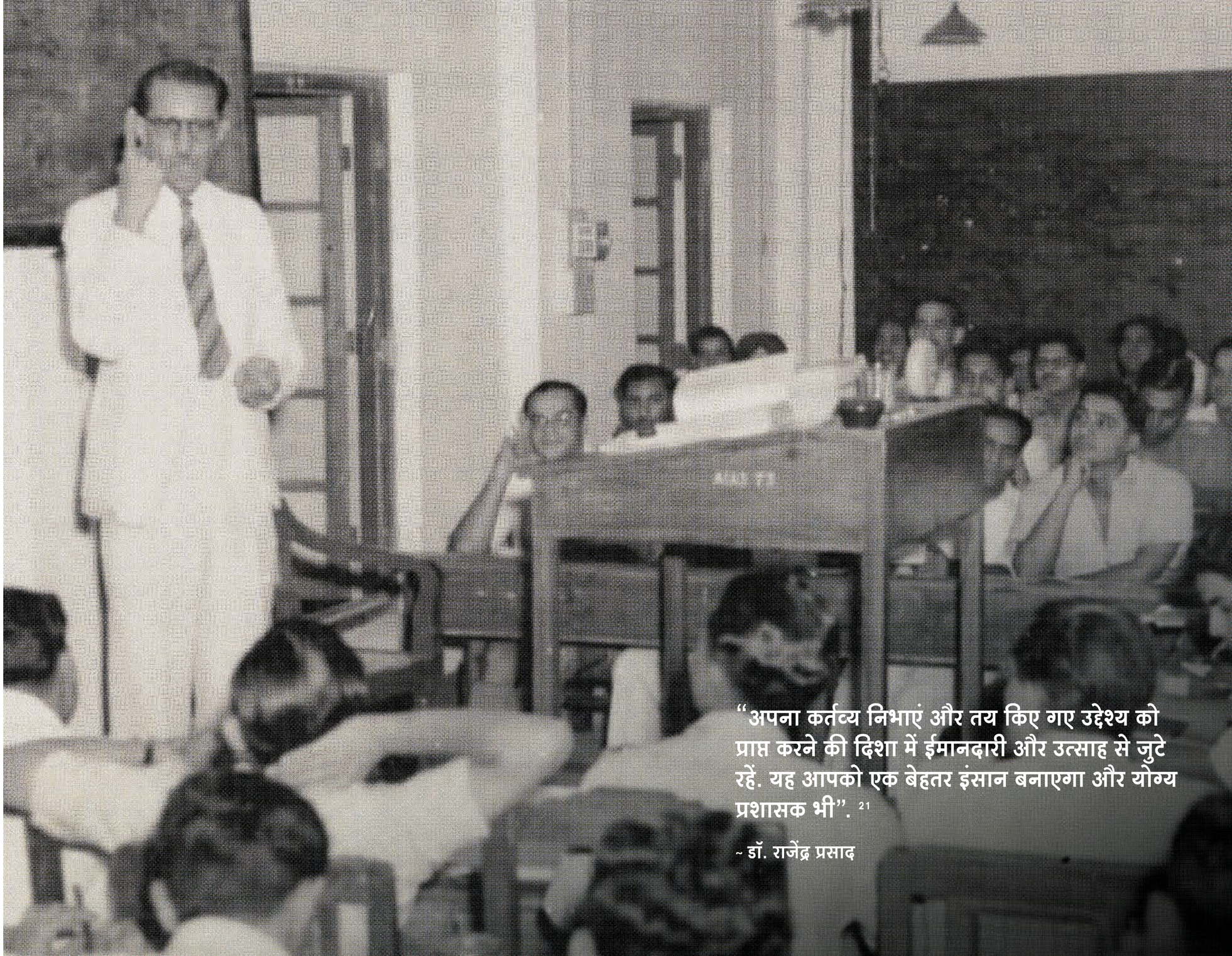

“अपना कर्तव्य निभाएं और तय किए गए उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में ईमानदारी और उत्साह से जुटे रहें. यह आपको एक बेहतर इंसान बनाएगा और योग्य प्रशासक भी”. [21]

~ डॉ. राजेंद्र प्रसाद

प्रशासकों को गढ़ना

जाविद चौधरी (आईएएस 1967) अपनी किताब *द इंसाइडर्स व्यू: मेमॉयर्स ऑफ अ पब्लिक सर्वेंट* में लिखते हैं, *"हमारे प्रशिक्षकों ने अपने व्यवहार, विचार और मूल्यों से हमारे मन-मस्तिष्क में जनहित और सेवाओं के प्रति ऐसा उत्साह भर दिया जिसने हमें वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष रूप से काम करने के लिए प्रेरित किया. अगर हम सेवाओं के मानकों पर खरा उतरना चाहते थे तो निष्कलंक और अवगुणरहित निजी आचरण सबसे अहम था."* [22]

कक्षाओं में होने वाला अध्यापन, अतिथि-वक्ताओं के साथ बातचीत और वाद-विवाद व प्रश्नोत्तरी इत्यादि का आयोजन प्रशिक्षुओं को बौद्धिक रूप से दक्ष और तीक्ष्ण बनाता है. शारीरिक प्रशिक्षण, साहसिक खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों का उद्देश्य प्रशिक्षुओं में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और परस्पर सहयोग सहित समस्याओं के निदान का कौशल विकसित करना है. शारीरिक प्रशिक्षण की महत्ता को अकादमी के पीटी प्रशिक्षक एस.एस. राणा से बेहतर शायद ही कोई समझ पाए. अकादमी में आने वाले अफसरों को उन्होंने लंबे समय तक प्रशिक्षित किया. वो मानते हैं कि सुबह का व्यायाम व्यक्ति को अनुशासित रखता है, और दिनभर के काम के लिए तैयार करता है. साथ ही साहसिक खेलों जैसे राफ्टिंग और ट्रेकिंग से व्यक्ति का आत्म विश्वास और आंतरिक बल बढ़ता है. प्रशिक्षु अधिकारियों को वो राष्ट्र का असली स्तंभ मानते हैं, *"जिनका कर्तव्य लोगों की सेवा करना है, और यह प्राध्यापकों की ज़िम्मेदारी है कि वो न सिर्फ प्रशिक्षुओं को इस पहलू से अवगत कराएं बल्कि खुद उनके सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करें."* वरिष्ठ उप निदेशक मंसूर हसन खान (आईडीएएस 2002) संक्षेप में कहते हैं,

"बात पाठ्यक्रमों को सही तरह से लागू करने की हो या फिर खेल, पढ़ाई, खान-पान या छात्रावास प्रबंधन की, हम कभी असफल नहीं हुए. ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे पास हर चीज़ की देखभाल और निरीक्षण के लिए एक मज़बूत तंत्र है. हम हमेशा एक विकल्प तैयार रखते हैं. यह एक ऐसा संस्थान है जहां लोग काम करने में खुशी महसूस करते हैं."

शारीरिक स्वास्थता, प्रशिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आयाम है

प्रशिक्षुओं को ऐसी परिस्थितियों में रखा जाता है जहां उन्हें आगे बढ़कर जिम्मेदारियों का सामना करना पड़े. अकादमी में अपने पहले दिन से वो तड़के सुबह उठते हैं! प्रशिक्षण के अपने दिनों को याद करते हुए इल्हेजे हिमातो ज़िमोमी (आईएफएस 1993) कहते हैं, *"सुबह के पांच बजे हों या छह यह मायने नहीं रखता. हम में से अधिकांश लोगों के लिए, एस.एस. राणा की सीटी मानो आधी रात में बज उठती थी. हमने अकादमी के अपने साथी अफसरों को बाद में, और मसूरी की ठिठुरती सुबह को पहले जाना."* [23] सुबह से शाम तक प्रशिक्षुओं का दिन पढ़ाई और अलग-अलग गतिविधियों के बीच तालमेल बैठाने में बीतता है. कई प्रशिक्षु बताते हैं कि कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जब कोई विशेष कार्यक्रम या गतिविधि आयोजित न की जाती हो. अकादमी में पहले एक प्रशिक्षु अधिकारी और अब एक उप निदेशक की भूमिका निभा रहीं अलंकृता सिंह (आईपीएस 2008) को लगता है कि, *"अकादमी की रोज़मर्रा ज़िंदगी तब भी एक रोलर-कोस्टर की सवारी थी और आज भी वैसी ही है."*

व्यक्तित्व निर्माण

अलग-अलग गतिविधियों और समितियों में भागीदारी प्रशिक्षु अधिकारियों को अपनी सोच की परिपाटी से बाहर निकलने और पूर्व धारणाओं को चुनौती देने का अवसर देती है. अकादमी के आधारभूत मूल्यों की ओर उन्मुख होकर वो ऐसी सोच विकसित कर पाते हैं जो भविष्य के प्रशासकों से अपेक्षित है. प्रशांत कुमार मिश्रा (आईएएस 1972) अपनी किताब, इन क्रेस्ट ऑफ़ ए मीर्निंगफुल लाइफ: ऑटोबिओग्राफी ऑफ़ ए सिविल सर्वेंट में कहते हैं,

घुड़सवारी प्रशिक्षक नवल सिंह पूर्व निदेशक एस. के. दत्ता द्वारा फहराये गए झंडे को सुरक्षित करते हुए

"मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हमें श्रमदान का मूल्य और महत्व समझाया गया. हर दिन हम, 'चल दनादन फावड़े' गीत गाते हुए शारीरिक श्रम करते थे. यहां तक कि निदेशक के मार्गदर्शन में श्रमदान के ज़रिए हमने घुड़सवारी का पूरा ट्रैक तैयार किया".[24]

घुड़सवारी, प्रशिक्षु अधिकारियों के बीच चर्चा का एक संवेदनशील और विवादास्पद विषय रहा है, खासकर उन दिनों में जब वह एक अनिवार्य गतिविधि थी. पी. अब्राहम (आईएएस 1962) अपनी किताब *मेमॉयर्स ऑफ एन आईएएस ऑफिसर: फ्रॉम पावरलेस विलेज टू यूनियन पावर सेक्रेटरी* में लिखते हैं, *"...प्रारंभिक प्रशिक्षण के तौर पर...अधिकारियों को बेहतर बनाने और संवारने के लिए यह एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक गतिविधि थी, जो अफसरों को धैर्य और आत्मविश्वास के साथ कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार कर सके,"* [25] अन्य लोगों के लिए यह एक ऐसी कसरत है जो सहिष्णुता और विद्रोह के बीच एक महीन रेखा खींचती है.

अकादमी से विदा लेते समय लिखी जाने वाली टिप्पणियों में एक प्रशिक्षु अधिकारी ने लिखा, 'घुड़सवारी बेहद मजेदार थी'; वहीं एक अन्य प्रशिक्षु ने व्यंग्य किया, 'घुड़सवारी बहुत मजेदार थी... घोड़ों के लिए!' के.जे.एस. चतरथ (आईएएस 1967) कहते हैं, *'हर परिवीक्षाधीन (प्रोबेशनर अफसर) जिसने अकादमी में सवारी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है, नवल सिंह साहब की स्पष्ट और कड़क आवाज़ को याद रखेगा, जो कहते थे--'घोड़ा नहीं संभलता, ज़िला कैसे संभालोगे."* [26]

मृणालिनी गार्डे (आईएएस 1962), जो अपने बैच की एकमात्र महिला प्रोबेशनर अफ़सर थीं, घुड़सवारी के दौरान घोड़े से इतनी बार गिरीं कि नवल सिंह ने खुद सिफारिश की, कि उन्हें इस गतिविधि से छूट दी जाए. किंतु गार्डे को ये स्वीकार्य नहीं था. उन्होंने अभ्यास और प्रयास जारी रखा और अंत में घुड़सवारी की अनिवार्य परीक्षा, पहले प्रयास में उत्तीर्ण की, जबकि उनके साथ के कई 'अनुभवी' अफ़सर विफल हुए, और अगले साल उन्हें फिर वापस आना पड़ा. कभी हार न मानने की यही भावना एक प्रशिक्षु अधिकारी को, देश की सेवा में समर्पित एक पेशेवर सेवक के रूप में गढ़ती है.

हिमालय के पहाड़ी इलाके में ट्रेकिंग को लेकर बात करते हुए अतुल आनंद (आईएएस 1994) कहते हैं, *"वो साहसिक खेलों में भाग लेने की भावना के साथ, हमारी शक्ति और स्थिरता की परीक्षा थी".* हल्के-फुल्के अंदाज में वो कहते हैं,'' *अकादमी में कोई लाड़ नहीं करता और जो इस अपेक्षा के साथ आए थे उनकी उम्मीद पर जल्द ही पानी फिर गया.../इसलिए जब हमने पूछा / 'सांप के काटने पर हम क्या करें', तो हमारे अनुदेशक ने बिना किसी लाग-लपेट के दो टूक जवाब दिया, 'हमने सभी*

सावधानियां बरती हैं, लेकिन फिर भी अगर आपकी लापरवाही के चलते सांप आपको काट ले, तो अपने अंतिम शब्द बोलें और अपने निर्माता से मिलने के लिए तैयार हो जाएं." [27]

अकादमी में प्रशिक्षण के दौरान, भले ही कुछ प्रशिक्षु अधिकारीयों को इनमें से कुछ गतिविधियाँ पसंद नहीं आयीं हों लेकिन अधिकांश इनकी महत्ता और प्रासंगिकता को मानते हैं. सौम्या पांडे (आईएएस 2017) ने शुरू में ट्रेकिंग की आवश्यकता को लेकर सवाल उठाया (क्योंकि उनका मानना था कि वो 'अफ़सर' हैं, 'पर्वतारोही' नहीं) लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि शारीरिक योग्यता बेहद ज़रूरी कौशल है, ख़ासकर कानून और व्यवस्था बनाए रखने जैसी ज़रूरतों के लिए. ज़फ़र इकबाल (आईएएस 2017) स्वीकार करते हैं, *"अकादमी में जो सिखाया जा रहा है उसका 80 फीसदी भी अगर मैं अपने कार्यक्षेत्र में लागू कर सकूं तो यह बहुत अच्छी बात होगी. कुछ नया सीखने और नए दोस्त बनाने के मामले में यहां का वातावरण वास्तव में अच्छा है... यह आगामी जीवन में हमारी बहुत मदद करेगा."*

कई प्रशिक्षु अधिकारीयों के लिए, देश और उसकी स्थितियों को लेकर एक मजबूत समझ बनाने की शुरुआत 'भारत-दर्शन' से होती है. इस दौरान वो एक नए दृष्टिकोण से भारत को समझने की यात्रा पर निकलते हैं और देश की विविधता को एक नए नज़रिए से देखते हैं. कई लोग सिविल सेवा में शामिल होने के अपने उद्देश्य को इस दौरान परिभाषित कर पाते हैं. छह से सात सप्ताह के भीतर पूरे भारत की यात्रा को इस तरह सुनियोजित किया जाता है कि प्रशिक्षु भूगोल, संस्कृति और सामाजिक-आर्थिक पहलुओं से जुड़ी देश की ज़मीनी वास्तविकताओं से खुद को जोड़ पाएं. प्रशिक्षण के दौरान सशस्त्र बलों, गैर-सरकारी संगठनों, आदिवासी गांवों और सार्वजनिक क्षेत्रों से संलग्न होकर काम करने का अनुभव, उनके लिए आंखें खोलने वाला होता है. इस दौरान वो उन जटिल, बहुआयामी और बहुस्तरीय समस्याओं के प्रति समझ पैदा करते हैं जिनका सामना वो भविष्य में करेंगे. प्रशिक्षु अधिकारी इस बात की सराहना करते हैं कि हर वो जगह जहां उन्हें जाने का अवसर मिलता है उनके लिए प्रेरणा और सीखने का स्रोत साबित होती है. वो इस बात को भी समझते हैं कि देश की विविधता न केवल एकता का स्रोत है, बल्कि ताकत और सौंदर्य का भी. इस यात्रा के ज़रिए वो प्रत्यक्ष अनुभवों का मूल्य समझते हैं.

वर्ष 2017 बैच की आईएएस वंदना गर्ग और उनके साथियों को नक्सलवाद की स्थिति को समझने के उद्देश्य से झारखंड के गुमला इलाके की यात्रा पर ले जाया गया. उन्हें इस बात पर बेहद आश्चर्य हुआ कि वो, *'जहां भी गए बेहद अपनेपन से स्वागत किया गया. उस दिन मुझे विश्वास हो गया कि आईएएस अधिकारी होना एक बड़ा उद्देश्य है, और अपने काम के ज़रिए हमें इसे चरितार्थ करना होगा."*

अध्याय ५

एक सांझी तक़दीर

स्मृतियों के गलियारों से गुज़रते हुए, अकादमी के दिनों को याद करते पूर्व छात्र, अक्सर एक बहुरूपी दुनिया में पहुंच जाते हैं, जहां रंग-बिरंगी यादें हैं, और उनसे जुड़े स्मृति-चित्र. भावनाओं और पुरानी दोस्ती के इन दिनों की यात्रा एक पल के लिए भी नीरस या बोझिल नहीं होती. अधिकांश लोगों के लिए, फाउंडेशन कोर्स की तीव्र गति धीरे-धीरे मंथर होकर, एक ठहराव को जन्म देती है. फिर भी प्रशिक्षण के पहले व दूसरे चरण और उसके बाद शुरु होने वाले पाठ्यक्रमों के दौरान, निश्चित समय-सीमा के भीतर काम करने का दबाव लगातार बना रहता है.

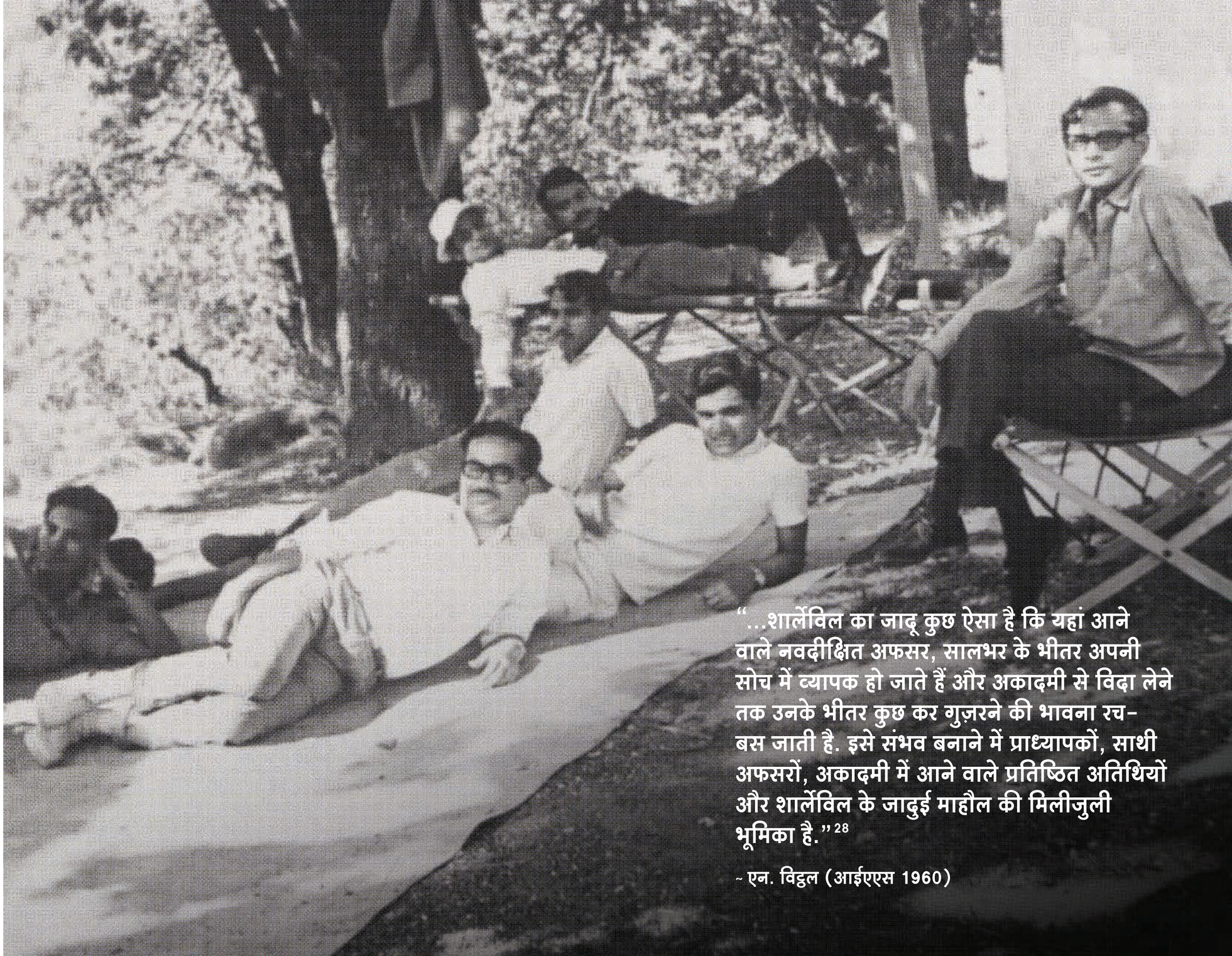

"...शार्लेविल का जादू कुछ ऐसा है कि यहां आने वाले नवदीक्षित अफसर, सालभर के भीतर अपनी सोच में व्यापक हो जाते हैं और अकादमी से विदा लेने तक उनके भीतर कुछ कर गुज़रने की भावना रच-बस जाती है. इसे संभव बनाने में प्राध्यापकों, साथी अफसरों, अकादमी में आने वाले प्रतिष्ठित अतिथियों और शार्लेविल के जादुई माहौल की मिलीजुली भूमिका है."[28]

~ एन. विट्ठल (आईएएस 1960)

एक सांझी तक़दीर

अकादमी में बिताए उन दिनों को एक बार फिर जी लेने की उत्कंठा हर बैच के पुनर्मिलन समारोह में स्पष्ट दिखाई देती है. दिलचस्प यह है कि परंपरा के मुताबिक ये पुनर्मिलन समारोह, अकादमी के मौजूदा कनिष्ठ अधिकारियों द्वारा आयोजित किए जाते हैं. ये रवायतें अकादमी से विदा ले चुके अधिकारियों को एक बार फिर 'घर' लौटने का एहसास कराती हैं, और अफसरों की अलग-अलग पीढ़ियों के बीच मित्रता, परस्पर सहयोग और ताल-मेल को बढ़ावा देती हैं. इस मेल-मिलाप के दैरान उनके मन-मस्तिष्क में जो नई स्मृतियां बनती हैं वो बीते समय के संस्मरणों के साथ गुथ सी जाती हैं.

तो आखिर इस संस्थान में ऐसा क्या है जो सभी बैच के अधिकारियों के बीच ऐसी कड़ियां बना देता है, कि वो संस्थान को कभी भूल नहीं पाते? क्या है जो अकादमी को असाधारण बनाता है?

वर्ष 1973 बैच की आईएएस कल्याणी चौधरी इसे, *"मसूरी में गढ़ा गया एक ऐसा फार्मुला मानती हैं जो निष्ठा और वफादारी की ऐसी कड़ियां बनाता है, जिससे देश हो या विदेश, अधिकारी हमेशा बंधे रहते हैं".* अकादमी के भीतर के जीवन की एक बानगी प्रस्तुत करते हुए वो कहती हैं कि,

"ये आदर्शों और आकांक्षाओं की एक ऐसी दुनिया है जहां मौज और विद्रोह के लिए भी जगह सुनिश्चित है. यहां अलग-अलग सेवाओं को चुनकर आने वाले अधिकारी संत भी हैं और शठ भी."[29]

शुडें शेंरिंग (आईएएस 1972) के मुताबिक, *"ये एक तरह का भाईचारा है...भिन्न पृष्ठभूमि के लोगों की एक बिरादरी जो जीवनभर साथ रहती है और अपनी नियति को एक दूसरे के साथ 'जुड़ा हुआ' देखती है."* वर्ष 1968 बैच के आईएएस ललित माथुर कहते हैं, *" जब मैंने संयुक्त निदेशक के तौर पर अलग-अलग जगहों की यात्राएं कीं तब मैंने ये समझा कि शार्लेविल को लेकर लोगों के मन में कितना सम्मान है. जहां भी मैं गया, मैंने लोगों में एक अलग किस्म का उत्साह देखा. एक ऐसी गर्मजोशी और अपनापन जो उनके अलग पीढ़ियों के होने, अलग जगहों पर काम करने या बेहद व्यस्त होने पर भी फीका नहीं पड़ता. मुझे लगता है कि हमारे भीतर का 'प्रोबेशनर' हमें कभी नहीं छोड़ता! "*

प्रशिक्षु अधिकारी अक्सर खुद को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं, जो एक परिवार या कुटुम्ब का माहौल पैदा करती हैं. ऐसे समय में औपचारिकता और अनुशासन की परिधि को लांघ कर उनके बीच कई स्थाई गठजोड़ बन जाते हैं. मसलन एक ही कमरे में साथ रहना, आंधी हो या बर्फ गंगा हॉस्टल से ऊंचाई पर स्थित अपनी कक्षाओं में जाना, पीटी के अभ्यास के लिए तड़के-अंधेरे बिस्तर छोड़ निकल पड़ना, हाथ-पांव टूटने के ख़तरे के बीच घुड़सवारी का दिल दहलाने वाला प्रशिक्षण, या फिर प्राध्यापकों द्वारा दिए गए काम को तय समय-सीमा में खत्म करने का दबाव. इस सब के बीच उनमें साथी अफसरों के साथ बन रहे जटिल और सरल संबंधों को समझने और निभाने की ललक भी रहती है. रणदीप डी. (आईएएस 2006) इसे, सिविल सेवाओं में *'बपतिस्मा की प्रक्रिया'* मानते हैं, जो अकादमी में क़दम रखने के साथ ही शुरु हो जाती है.[30]

एक तरफ स्फूर्तिदायक खेल व जोश भरी चर्चाएं और दूसरी तरफ शांत-निर्मल शामें जहां कई प्रेम-प्रसंग शुरु हुए — अकादमी का जीवन अपनी ही लय में चलता है. इस क्रम में जोड़ दीजिए, साहसिक खेलों का रोमांच, जिसे मुमकिन है कि बहुत से लोग पहली बार अनुभव कर रहे हों, और टीम का साथ देने के लिए अपनी ही सीमाओं को लांघने की ललक, तो यह समझना कठिन नहीं होगा कि अफसरों के बीच, उम्रभर रहने वाली दोस्ती और अपनापन कैसे पनपता है.

घर से दूर एक घर..

मन-मस्तिष्क को स्वस्थ कर देने वाली मसूरी की पहाड़ी, हवा और यहां के निर्मल परिदृश्य को शब्दों में बांधते हुए गोपालकृष्ण गांधी (आईएएस 1968) कहते हैं कि इस उदात्त पृष्ठभूमि में, *"आपके बालों को उम्मीद और विश्वास की बयार से सहलाने का सामर्थ्य है."* [31] वरिष्ठ बैच के अधिकारी याद करते हैं, कि घुड़सवारी के दौरान गिरने पर कैसे नवल सिंह घुड़सवार के बजाय घोड़े को सहलाते थे, कैसे बरेटो अपना रेस्त्रां चलाता, कैसे 'व्हिसपरिंग विंडोज़' पर अनियमितता के चलते कई बार प्रतिबंध लगा, कैसे हरी स्टेशनरी पर पॉकेट संविधान से लेकर सोलर टोपी तक सबकुछ मिल जाता था, और अकादमी में मिलने वाली अग़म चंद और दिलबहादुर की कड़क चाय जो किसी को भी तरोताज़ा कर दे.

बीते दशकों में अकादमी में हुए बदलावों के बावजूद, अपने बैच के गोल्डन जुबली समारोह में भाग लेने आए ब्रायन अल्बुकर्क (आईपीएस 1969) संतुष्ट हैं कि, *"अकादमी ने अपनी आत्मा को बचाए रखा है...यह सब आपको पचास साल पहले के दौर में वापस ले जाता है...मुझे लगता है कि अकादमी ने समय के साथ चलते हुए, अपनी आत्मा को अक्षुण्ण बनाए रखने में अद्भुत सफलता हासिल की है."* जी.आर. जोशी (आईएएस 1969) जो इस पुनर्मिलन समारोह में शामिल होकर उतने ही आह्लादित हैं कहते हैं, *"हमारे लिए यहां हर तरफ अद्भुत स्मृतियां बिखरी हैं... इस तरह अपनी मातृ-संस्था और अपने पुराने परिवार के पास वापस लौटना मेरे लिए गर्व की बात है. अकादमी बदलावों से गुजरी है लेकिन 'हैप्पी वैली' अब भी मौजूद है, और हमारे निदेशक का ब्लॉक भी वहीं है. हमें इस बात पर गर्व है, क्योंकि ये दोनों स्थान अकादमी से जुड़े पुराने लोगों के लिए अब भी मौजूद हैं; अब हम अकादमी के पुराने सदस्य हैं, इसलिए हमारे लिए इन चीज़ों का बहुत महत्व है."*

निरंतरता की यह भावना अकादमी के वातावरण में रची-बसी है, और सभी पीढ़ियों, बैच के अफसरों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों में मौजूद है. अकादमी का एक अभिन्न हिस्सा वो लोग भी हैं जो इसे चलाने में अहम भूमिका निभाते हैं. मेस का संचालन करने वाले लोग, माली, सफाईकर्मी और लिपिक-कर्मचारी सभी पूरी दक्षता और अनुशासन के साथ काम करते हैं, और खुद को मिलने वाली सुविधाओं और इससे मिलने वाली संतुष्टि का ज़िक्र करते हैं. हेड वेटर के रूप में अकादमी से हाल ही में सेवानिवृत्त हुए जगदीश ऐसी संस्था का हिस्सा बनकर खुश हैं, जो अपने लोगों की देखभाल करती है: *"यदि आपको जरूरत है, तो अकादमी और प्रशिक्षु अधिकारी सबसे पहले आपकी मदद के लिए खड़े होंगे. वो आपको मौत के कगार से भी पीछे खींच लेंगे, जैसा कि मेरी पत्नी और कई अन्य लोगों के मामले में हुआ."* पिछले तीस साल से अकादमी में काम कर रहे नारायण बुनकर कहते हैं, *"मैंने जीवन में जो कुछ भी सीखा है, वह इस अकादमी के कारण."* अपनी टीम के साथ, अकादमी में दिखने वाले रंग-बिरंगे फूलों और शानदार लॉन की देखभाल करने वाले माली अत्मा राम कहते हैं, *"अकादमी न केवल इस देश के भावी आईएएस अधिकारियों को प्रशिक्षित करती है बल्कि हम सभी को ज़िंदगी में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित करती है."*

अकादमी के गेट के ठीक बाहर मौजूद अपनी दुकान पर मोहम्मद वसीम, पिछले कई दशकों से प्रशिक्षुओं के बाल काट रहे हैं. वो कहते हैं, *"जब मैं पहली बार 1975 में अकादमी में आया था, तो 25 पैसे में बाल काटता था. अगर मेरे पास खुले पैसे नहीं होते थे, या फिर कोई ग्राहक बाकि बचे पैसे रख लेने की उदारता दिखाता था, तो मैं उस दिन का काम खत्म कर दुकान बंद कर देता था... अकादमी ने मुझे बहुत कुछ दिया है और मैंने भी इस उदारता का हक अदा करने की कोशिश की है. साल 1984 में लगी आग के बाद हम इतने दुखी हुए कि मानो हमारा अपना कोई, जिसे हम बहुत पसंद और प्यार करते थे, इस दुनिया से चला गया."*

अकादमी में काम करने वाली महिलाओं के लिए भी एक संगठन चलाया जाता है जिसका नाम है, वाणी. भाषा विभाग से जुड़ी अलका कुलकर्णी बताती हैं, *"वाणी, अकादमी में काम करने वाली महिलाओं द्वारा और उनके लिए चलाया जाने वाला एक सहायता-समूह है. वाणी हमारी अपनी पहल है, जहां महिलाएं एक-जुट होकर अपनी बात कह सकती हैं, अपनी समस्याओं पर विमर्श कर सकती हैं, और अपने अनुभव बांट सकती हैं. इसके अंतर्गत हम स्वास्थ्य-जांच भी कराते हैं. हम उन्हें बचत और 'जेंडर' से जुड़े मुद्दों पर जागरूक भी बनाते हैं. इसके अलावा कई और गतिविधियां हैं, जैसे मिलजुल कर त्योहार मनाना आदि."*

मोहम्मद वसीम अपने बाल काटने के सैलून पर

अकादमी में वाणी की पहल

समय की लय में

समय के साथ चलते हुए और यहां के निवासियों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अकादमी ने अपनी सुविधाओं में लगातार सुधार किया है. शुरुआती वर्षों में जो अफसर प्रशिक्षण के लिए यहां आए, उनके पास कई ऐसे अनुभव हैं जो हास्यास्पद हैं और बुनियादी सालों के संघर्ष का ब्यौरा देते हैं. भावुकता में डूबे इन अनुभवों से सुनहली स्मृतियों और अपनेपन की महक आती है. अकादमी में आने वाली हर पीढ़ी ने ये प्रयास किया कि उसे जो भी सुविधाएं और संसाधन मिलें उनका इस्तेमाल कर अपना लक्ष्य पूरा करें. वर्ष 1959 बैच के आईएएस अधिकारी प्रतीप कुमार व्यंग्य करते हुए कहते हैं,

“हमारा नाम मेटकॉफ से भी जुड़ा और शार्लेविल से भी. मई से सितंबर की भीषण गर्मी हमने दिल्ली में बिताई और कड़कड़ाती ठंड का सामना करने के लिए हम मसूरी आ गए.” [32]

अब वो दिन नहीं रहे जब गरम पानी बाल्टियों में पहुंचाया जाता था और मुख्य गेट के बाहर स्टेपलटन छात्रावास में रखे जुगाड़ू शौचालय या ‘थंडर बॉक्स’, क्योंकि तब इस छात्रावास में आधुनिक शौचालय नहीं थे. वो दिन भी अब नहीं रहे जब अतिरिक्त मक्खन या दूध लेने के लिए पर्ची पर हस्ताक्षर करने पड़ते थे. हालांकि मेस का कार्यभार संभालना आज भी दुधारी तलवार पर चलने के बराबर है. एस.के. मोडवेल (आईएएस 1959) ‘आलू आंदोलन’ के उन दिनों को याद करते हुए कहते हैं, *‘मेस समिति का अध्यक्ष चुने जाने के बाद मैं तुरंत काम पर लग गया, और इस बात पर जोर दिया कि पिंटू जो हमारा केटरर था, वो हर बार के भोजन में आलू जरूर शामिल करे. इस बात पर हंगामा हो गया, खासकर दक्षिण भारत से आने वाले हमारे दोस्तों की तरफ से, जो सांबर खाने के आदी थे. वो ‘आलू ही आलू, आलू हटाओ’ का नारा देते हुए आर.के. त्रिवेदी के पास पहुंचे जो उस वक्त के बेहद लोकप्रिय उप-निदेशक थे. इसके बाद लंबी बहस हुई और तय किया गया कि साम्यावस्था बनाने के लिए आलू और सांबर दोनों साथ रहेंगे’’.* आज की आधुनिक मेस सालभर, कई सौ की संख्या में अफसरों को, संतुलित मेन्यू पेश करती है.

अस्सी के दशक के बाद अकादमी में बहुत कुछ बदला है, खासकर 1984 में अकादमी में लगी भीषण आग के बाद. यदुवेंद्र माथुर (आईएएस 1986) आगजनी की घटना के बाद के कुछ सालों को याद करते हुए कहते हैं, *“अब सुविधाएं जबरदस्त हैं. हमारे समय में पूरी अकादमी के लिए दो कंप्यूटर थे. हम सभी गंगा छात्रावास में रहते थे और यदि हमारे लिए कोई टेलीफोन कॉल आया, तो हमें छात्रावास से भागकर उस एक टेलीफोन तक पहुंचना होता था. वो दिन बड़े मजेदार थे!’’*

दोस्ती-यारी के वो दिन

भारत दिवस समारोह

''अकादमी में आने वाले हर प्रशिक्षु अधिकारी, अथक प्रयास के बाद यहां पहुंचे हैं और उन्हें इस सफलता का उत्सव मनाने का अधिकार है, लेकिन वो अपनी ज़िम्मेदारी को लेकर भी पूरी तरह सजग है.''

चुने गए हर उम्मीदवार को, अकादमी एक ऐसा अधिकारी बनने के लिए प्रेरित करती है, जिसकी लोगों को आवश्यकता है; जो सत्यनिष्ठ हो, जिसमें कौशल हो और जुनून हो कुछ कर दिखाने का. स्वाभाविक है कि इस तरह की संस्था के साथ एक धीर-गंभीर छवि जुड़ जाए, जहां आज्ञाओं का कड़ा पालन करना आनिवार्य हो. लेकिन, अकादमी में कदम रखते ही ये अनुमान और धारणाएं हवा हो जाती हैं. वर्तमान निदेशक संजीव चोपड़ा कहते हैं, *"अकादमी का वातावरण बेहद जीवंत और प्रफुल्लित करने वाला है, जहां प्रशिक्षक और प्रशिक्षु अपनी इच्छा से आते हैं. यही वजह है कि अकादमी अपने मिशन में कभी फेल नहीं हुई."* वो कहते हैं, *"हर कोई यहां खुशी मना रहा है, लेकिन यह एक सजग किस्म का उत्सव है."*

सांस्कृतिक गतिविधियां अधिकारियों के प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं. वो न केवल उन्हें व्यक्तिगत प्रतिभा का प्रदर्शन करने को प्रेरित करती हैं, बल्कि एक-दूसरे की सांस्कृतिक धरोहर को सराहने और देश की समग्र संस्कृति को जानने का अवसर भी प्रदान करती हैं. प्रत्येक पीढ़ी ने नृत्य, नाटक, संगीत, साहित्य या दृश्य कला के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त किया है, और अकादमी ने हमेशा उन्हें प्रोत्साहित किया है. 'भारत दिवस' ऐसा ही एक अवसर है जब रंग, नाटकीय-प्रतिभा और दोस्ती के रंग में रंगे प्रशिक्षु, पारंपरिक कपड़े पहनते हैं, क्षेत्रीय व्यंजनों का आनंद लेते हैं, और देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आए अफसरों के साथ अपनी संस्कृति साझा कर गौरवान्वित महसूस करते हैं. ये उत्सव पीछे छोड़ जाते हैं अनमोल स्मृतियां, और कभी न टूटने वाले संबंध.

उनके अपने शब्दों में...

हिमालय की हरी-भरी पहाड़ियों के बीच स्थित अकादमी और मसूरी शहर के बीच एक अनूठा संबंध है. इतिहासकार और लंबे समय से मसूरी के निवासी गोपाल भारद्वाज कहते हैं, *"इसमें कोई संदेह नहीं है कि अकादमी ने मसूरी की अर्थव्यवस्था को बहुत लाभ पहुंचाया है. आज भी अकादमी की रसोई से जुड़ी जरूरतें, बेकरी संबंधी सामान, मसूरी शहर से ही आता है. संस्थान के होने से मसूरी की प्रतिष्ठा बढ़ती है...वह देश के प्रमुख संस्थानों में से एक है. अकादमी जब से यहां स्थानांतरित हुई है पर्यटन को बढ़ावा मिला है, शहर में हलचल बढ़ी है, और हैप्पी वैली अब शहर के संभ्रांत इलाकों में से एक है."*

इस बात की पुष्टि करते हुए, लाइब्रेरी प्वांइट के नजदीक कपड़ों की दुकान चलाने वाले मिल्खी राम कहते हैं,अकादमी, मसूरी शहर और यहां के लोगों की शान है. *"अकादमी ने हमेशा इस शहर और यहां के लोगों की मदद की है. एक काम जो मुझे सहसा याद आता है वो है यहा के रिक्शा-चालकों की स्थिति में बदलाव."*

मसूरी के हाथ-रिक्शा का मर्सिया

औपनिवेशिक काल से ही मसूरी की सड़कों पर हाथ-रिक्शा चलते थे, जिन्हें हाथ से खींच कर सवारी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था. गुलामी के इस प्रतीक को अकादमी के 1993, 1994 और 1995 बैच के प्रशिक्षु अधिकारीयों ने हमेशा के लिए खत्म किया. उन्होंने रिक्शा चालकों के साथ संपर्क साधा और उन गांवों का दौरा किया जहां से वे पलायन कर मसूरी आते थे. इसके अलावा रिक्शा चालकों के लिए टीबी स्वास्थ्य केंद्र भी चलाए गए. प्रशिक्षु अधिकारियों ने साइकिल रिक्शा का एक नया मॉडल तैयार किया जो पहाड़ियों के लिए उपयुक्त था, और नगर निगम अधिकारियों से हाथ-रिक्शा को कानूनी रूप से बंद करने, और नए साइकिल रिक्शा का परमिट जारी करने की वकालत की. उन्होंने नए रिक्शा खरीदने के लिए अनुदानों का इंतज़ाम किया और इन नए रिक्शों के निर्माण का बंदोबस्त कर अंततः हाथ-रिक्शा को साइकिल रिक्शा से बदल दिया. इस काम को करने में अधिकारियों ने सिविल सेवा की सर्वश्रेष्ठ परंपराओं- करुणा, नवाचार, साझेदारी और दृढ़ता का परिचय दिया, जो एक न्यायपूर्ण और मानवीय भारत के निर्माण के लिए जरूरी है. उन्होंने न केवल इन सिद्धांतों का मूल्य समझा बल्कि उन्हें साकार भी किया.

कर्मशिला ब्लॉक में मौजूद फलक

बीते वर्षों में अकादमी ने बहुत बदलाव देखा है. छात्रावास और स्टाफ क्वार्टर बनाने के लिए कई नए क्षेत्रों को अधिकृत किया गया. हैप्पी वैली स्थित तिब्बती बस्ती के निवासी धुंडुप, प्रशिक्षु अधिकारीयों को बास्केटबॉल सिखाने में मदद करते थे, और उस समय को याद करते हैं जब अकादमी में मौजूद अधिकारी स्थानीय स्कूलों के साथ दोस्ताना मैच खेलते थे. धुंडुप कहते हैं, *"मुझे याद है कि 1962-63 में अकादमी में केवल एक टेनिस कोर्ट था. हमारे पास गंगाराम नाम का एक बॉल-पिकर था, जो अधिकारियों के बीच बेहद लोकप्रिय था. वह बैडमिंटन और टेनिस का अद्भुत खिलाड़ी था. अकादमी आज भी प्रतिभाओं का अखाड़ा है, और इस संस्थान का नाम हर तरफ जगमगा रहा है."*

जैक्सन टेलर्स के मालिक आर.के. खन्ना वर्ष 1951 से मसूरी में हैं. उनके पिता ने अंग्रेजों से अपनी दुकान खरीदी थी. वह अकादमी के साथ तब से जुड़े हैं जब वर्ष 1959 में संस्थान, दिल्ली से मसूरी स्थानांतरित हुआ. वो कहते हैं, *"हर साल दिवाली में सैकड़ों प्रोबेशनर अफ़सर मेरे घर उत्सव मनाने आते थे. श्री एम.जी. पिम्पुटकर बहुत सख्त अधिकारी थे और प्रशिक्षु अधिकारी उनसे बात करने से भी डरते थे. वे मेरे पास आए और मुझे चुनौती दी कि मैं उनसे बात करूं. मैं यूं ही उनके पास गया और उनसे कहा कि 'उन्होंने जो सूट पहना है, वह पुराने डिजाइन का है, और मैं इसे नए फैशन के मुताबिक ठीक कर सकता हूं.' पिम्पुटकर को यह बात ठीक लगी और तब से हम अच्छे दोस्त बन गए."*

फोटोग्राफर और लेखक गणेश सैली अकादमी के साथ अपने लंबे जुड़ाव को याद करते हुए बताते हैं कि 1995 में जब उन्होंने पढ़ाना शुरु किया तो कक्षाएं छोटी होती थीं क्योंकि प्रोबेशनर अफसरों की संख्या तब 80 से 100 के बीच थी. हालांकि समय अब बदल गया है. वो कहते हैं, *"अब मामला शैंपेन की तरह है, और हर तरफ बुलबुले हैं! नए छात्रों को पढ़ाना बेहद दिलचस्प अनुभव है. आपको साफ तौर पर यह पता होना चाहिए कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं, क्योंकि अब छात्र बेहद सजग हैं. उन्हें कोई झांसा नहीं दे सकता. या तो आप अपने विषय को वाकई अच्छे से जानते हैं, या कुछ नहीं जानते. अकादमी में पढ़ाना एक शानदार अनुभव रहा है."*

मसूरी में रहने वाले और पहाड़ों की दुनिया को अपनी कहानियों में समेटने वाले प्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉन्ड के पास भी अकादमी से जुड़ी कुछ यादें हैं. वो कहते हैं, *"मुझे अकादमी का पुस्तकालय बेहद पसंद था. वो बहुत व्यापक था, लेकिन 1984 की भीषण आग में वो जल गया. एक लेखक के रूप में, मुझे यह जानकर बहुत खुशी होती है कि इस तरह का एक पुस्तकालय मौजूद है, जिसका लोग उपयोग कर सकते हैं."*

संवेदना. ऊर्जा. उत्कृष्टता

कुल मिलाकर अकादमी केवल सिविल सेवाओं के लिए एक प्रशिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि स्वयं अपने आदर्शों पर निर्मित एक प्रतिष्ठान है, जो जीवन के प्रति उल्लास की भावना रखता है. इस संस्थान में बसे लोग प्रेम और उत्साह के भाव से ओत-प्रोत हैं. ये लोग भाईचारे और साथ चलने की भावना से बंधे हैं, और देशवासियों के लिए कुछ करने की इच्छा रखते हैं. ये वो जगह है जहां आने के बाद अफसरों का उद्देश्य और उनके व्यक्तिगत विकास का लक्ष्य एक हो जाता है. जहां संवेदना और श्रेष्ठता एक दूसरे की साझेदार हैं. एक छोटे से पहाड़ी शहर में बना एक परिसर और इसकी मोहक इमारतें, हमें गहरे स्तर पर विस्मित कर जाती हैं. यहां विश्वास और वैचारिक शक्ति से ओतप्रोत मानवीयता, साल दर साल वातावरण को और विलक्षण बनाती है. हर घर की तरह यह घर भी, परस्पर अपनी ओर खींचता है.

अकादमी में 94वें फाउंडेशन कोर्स का बैच

हुनर के आभूषण

अकादमी के इस प्रांगण में हर कौशल
सिखलाते हैं,

अधिकारी व्यक्तित्व विकास कर कुशल
प्रशासक बन जाते हैं।

ये रत्न देश के होनहार, ये हैं देश के
कर्णधार,

इस विद्यामंदिर में इन्हें हुनर के आभूषण
पहनाते हैं।

यह देवभूमि, यह कर्मभूमि इसमें कर
अपनी साधना,

समर्पित भाव से अपने कर्तव्य पथ पर
बढ़ जाते हैं।

कभी धुंध, बारिश और कभी सूरज की
आंख मिचौनी है,

ये अद्भुत पल जीवन की स्मरणीय
सौगात बन जाते हैं।

इतने आगे बढ़ों कि थोड़ा उठना पड़े
आसमां को,

यदि निष्ठा हो प्राणों में, तो हर पर्वत
झुक जाते हैं।

कुमुदिनी नौटियाल
(प्रोफ़ेसर, हिंदी, ला.ब.शा.
रा.प्र.अ.)

ला.ब.शा.रा.प्र.अ.

पर्वतों की गोद में, बसा यह संस्थान।
शास्त्री जी के सपनों को, देता है सम्मान।

स्वर्ग समान है धरोहर इसकी,
खिली-खिली सी है कार्लिदी की धरती।
धूप की बाहों में है आती, शीत लहर की पावन गति।

हरियाली ही हरियाली है छाई,
ला.ब.शा.रा.प्र.अ. के चारों ओर।
देख यह नजारा है खिल जाते, चंदा और चकोर।

फूल और पत्ते कर देते हैं, ऐसा अजब सा जादू।
नहीं रह पाता भंवरों को,
अपने ऊपर बिल्कुल भी काबू।

धुंध में है लुका छिपी खेलते,
गंगा, कावेरी और नर्मदा।
बर्फ के आंगन में है जगमग हो उठती,
अकादमी की मर्यादा।

कर्मठ माली भईया के उपकार हैं,
हर तरफ यह मुस्कान हैं।
ओस की बूंदों से है सजती संवरती,
हरी भरी यह घास है।

ईश्वर की है यह सौगात, वानर सेना है हर द्वार।
उछलते कूदते हैं दर्शाते,
वह इस मौसम से है अपना प्यार।

पूरा मसूरी महक उठता है,
यहां के फूलों की खुशबू में।
रंग-बिरंगी तितलियों की, दिनभर चलती गुफ्तगू में।

लगता नहीं है जग में होगी, ऐसी रौनक और कहीं।
देश का भविष्य है संवरता, और कहीं नहीं बस यहीं।

अंकिता आनंद (आईएएस 2015)

लौटना

लौटना घर कभी आते नहीं हैं हम घर लौटते हैं
लौटना यह हिंदी व्याकरण की क्रिया न जाने क्यों जाकर घर से ही जुड़ जाती है
ओ हमारी मातृ संस्था हम लौटे हैं तुम्हारे पास जैसे कोई लौटता है
घर हम लौटे हैं जैसे पंछी लौटते हैं घौसलों में जैसे मौसम लौटते हैं
वादियों में जैसे चाँद लौटता है आसमान में सुबह लौटती है
धरा में स्मृतियाँ लौटती है मन में हम जाएं कहीं भी लौटेंगे यहाँ यहीं तो घर है
और जड़ें हैं यहीं यहीं से तो शुरू हुई थी हमारी यात्रा

अनूप कुमार (आईएएस 1990)

अकादमी के पूर्व निदेशक पद्मवीर सिंह द्वारा बनाया गया स्केच

सफल यात्रा की
शुरुआत एक छोटे से
क़दम से होती है...

निदेशक का ब्लॉक

उद्धृत अंश

1. **गुप्ता, दीपक.** 2019. *'द स्टील फ्रेम: हिस्ट्री ऑफ़ द आईएएस'.* नई दिल्ली: रोली बुक्स
2. **डार, आर.के.** 1999. *'गवर्नेंस एंड आईएएस: इन सर्च ऑफ रिजीलिएंस'.* नई दिल्ली: मैकग्रा हिल.
3. **डार, आर.के.** 1999. *'गवर्नेंस एंड आईएएस: इन सर्च ऑफ रेजिलिएशन'.* नई दिल्ली: मैकग्रा हिल.
4. **कानून और नीति अनुसंधान केंद्र.** 2017. संविधान सभा में हुई बहस http://cadindia.clpr.org.in/constitutionšassemblyšdebates/volume/10
5. **लोकसभा सचिवालय.** 1958. *मार्च से अप्रैल 1958 के बीच लोकसभा में हुई बहस.* नई दिल्ली: राष्ट्रीय अभिलेखागार.
6. **लोकसभा सचिवालय.** 1959. *अगस्त से नवंबर 1959 के बीच लोकसभा में हुई बहस.* नई दिल्ली: राष्ट्रीय अभिलेखागार.
7. **वोहरा, एन.एन. 2010.** रिमेंम्बरिंग आवर एल्मा-माटर'. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--44. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
8. **त्रिवेदी, आर.के. 2010.** ऑपरेशन शार्लेविल. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--1-2. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
9. **हरि, राजिंदर कुमार. 2010.** अकादमी की स्वर्ण जयंती. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--209. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
10. **बॉडीकॉट, एफ. 1907.** *'गाइड टू मसूरी'.* मसूरी: मफसिलाइट प्रिंटिंग वर्क्स.
11. **भारत, प्रधान मंत्री कार्यालय. 2016.** *कैबिनेट ने यूपीएससी और रॉयल सिविल सर्विस कमीशन,* भूटान के बीच एमओयू को मंजूरी दी. https://www.pmindia.gov.in/en/newsšupdates/cecast-approves-mou-between-upsc-and-royal-civil-service-commission
12. **वांगचुक, रिनचेन नोरबू. 2018.** *'द बेटर इंडिया'.* https://www.thebetterindia.com/163334/sardar-vallabhbhai-patel-ias-news/.
13. **नारायण, कृपा. 2010.** रिफ्लेक्शन इन द मिरर के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--6. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
14. **लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी. 2016.** *अकादमी गीत.* https://www.lbsnaa.gov.in/cms/academy-song.php.
15. **लोकसभा सचिवालय. 1960.** *मार्च से अप्रैल 1960 के बीच लोकसभा में हुई बहस.* नई दिल्ली: राष्ट्रीय अभिलेखागार.
16. **दुरीशेट्टी, अनुदीप. 2018.** *क्यों जरूरी हैं वार्तालाप अनुदीप दुरीशेट्टी का ब्लॉग (ब्लॉग),* 14 अक्टूबर, 2018. https://anudeepdurishetty.in/why-conversations-matter/.
17. **लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी. 2016.** *ग्रामीण अध्ययन केंद्र.* https://www.lbsnaa.gov.in/lbsnaašsub/index.php?crs.
18. **लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी. 2016.** *आपदा प्रबंधन केंद्र.* https://www.lbsnaa.gov.in/lbsnaašsub/index.php?cdm.
19. **लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी. 2016.** *राष्ट्रीय लिंग केंद्र.* https://www.lbsnaa.gov.in/lbsnaašsub/index.php?ngc.
20. **सिंह, पदमवीर. 2010.** अकादमी: अतीत, वर्तमान और भविष्य. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--218. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
21. **धार, टी.एन. 2010.** भारत के प्रथम राष्ट्रपति को याद करते हुए. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--26. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
22. **चौधरी, जाविद. 2012.** *'इनसाइडर्स व्यू: द मेमॉयर्स ऑफ ए पब्लिक सर्वेंट'.* एनए: पेंगुइन वाइकिंग.
23. **शिमोमी, इल्ज़े हिमातो. 2010.** राणाज व्हिसल. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--179. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
24. **मिश्रा, प्रशांता कुमार. 2017.** *'इन क्रेस्ट ऑफ अ मीनिंग फुल लाइफ: ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए सिविल सर्वेंट'.* नई दिल्ली: कोणार्क प्रकाशन.
25. **अब्राहम, पी. 2009.** *'मेमॉयर्स ऑफ एन आईएएस ऑफिसर: फ्रॉम पावरलेस विलेज टू यूनियन पावर सेक्रेटरी'.* नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट प्रकाशन.
26. **चतरथ, के.जे.एस. 2010.** मसूरी- स्वीट एंड सार. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--77. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
27. **आनंद, अतुल. 2010.** लुकिंग बैक. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--182. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
28. **विट्ठल, एन. 2010.** माई ईयर एट शार्लेविल. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत- 51. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
29. **चौधरी, कल्याणी. 2010.** मसूरी मिक्स. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत- 114-15. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी।
30. **देव, रणदीप. 2010.** लाइफ एंड टाइम्स एट द अकेडमी में: मेमॉयर्स ऑफ 2006 बैच प्रोबेशनर. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--201. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
31. **गांधी, गोपालकृष्ण. 2010.** रेमिनिसेंसस ऑफ द अकेडमी. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--86. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
32. **लाहिरी, प्रतीप कुमार. 2010.** रीकॉलिंग 1959. के.जे.एस. चतरथ और वी.के. अग्निहोत्री द्वारा संपादित, *'फ्रॉम मेटकाफ हाउस टू शार्लेविल'* से उद्धृत--37. मसूरी: लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी.
33. **रजनी सेखरी सिब्बल (आईएएस 1986).** कविता का स्रोत: सिब्बल, आर.एस. (2016). *'क्लाउड एंड बियॉन्ड'.* नई दिल्ली, भारत: विस्डम ट्री.
34. **सुमिता मिश्रा (आईएएस 1990).** कविता का स्रोत: मिश्रा, एस. (2012). *'ए लाइफ ऑफ लाइट'.* पंजाब, भारत: यूनिस्टारबुक्स प्रकाशन.

फोटो क्रेडिट:

पृष्ठ 6: रेमिनिसेंसिस ऑफ इम्पीरियल दिल्ली, 1843, से फ्रोलियो. सर थॉमस मेटकाफ द्वारा कमीशन.
स्रोत: http://www.bl.uk/onlinegallery/onlineex/apac/addorimss/ f/019addor0005475u00084vrb.html.

भारद्वाज, गोपाल. पृष्ठ 14-15: ऊपर पृष्ठ 20: नीचे बाएं; पृष्ठ 68: पृष्ठभूमि. कांबले, चंद्रकांत. (आईएएस 1991). पृष्ठ 32: ऊपरी बायां कोना.
मॉडवेल, रजत. (आईएएस 1990). पृष्ठ 20: ऊपर दाएं; पृष्ठ 39: नीचे बायां कोना; पृष्ठ 41: ऊपर; पृष्ठ 56: ऊपर. सिन्हा, समीर. (आईऍफ़ओएस 1990). पृष्ठ 39: मध्य दाएं, नीचे दाएं. श्रीवास्तव, वैभव.(आईएएस 2018). पृष्ठ 56: नीचे बाएं; अंतिम पृष्ठ.

2018 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी अपने शीतकालीन अध्ययन दौरे पर
(फोटो: वैभव श्रीवास्तव, आईएएस 2018)

KARMASU KAUŚALAM

EXCELLENCE IN ACTION

LBSNAA
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration

Published in 2019 by
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration (LBSNAA) Mussoorie 248179, Uttarakhand, INDIA

Copyright © 2019 LBSNAA

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

All efforts have been made to ensure accuracy in the contents of the book. Any error is unintentional and regretted.

Special thanks to all individuals who generously shared their stories and all the officers and staff at LBSNAA who helped in the making of this volume.

Research, Content and Editing
Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) Editorial and Creative Team:
Nerupama Y. Modwel
Assisted by
Anuraag Srinivasan, Tilak Tewari,
Bipasha Majumder and Gunjan Joshi

LBSNAA Editorial Team:
Arti Ahuja, Manoj Nair, Gauri Parasher Joshi,
Kumudini Nautiyal and Alankrita Singh

Photographs
LBSNAA Archives
INTACH Team, led by Harish Benjwal
See also page 76

Book Design
AICL Communications Limited

Printing
Print Resort

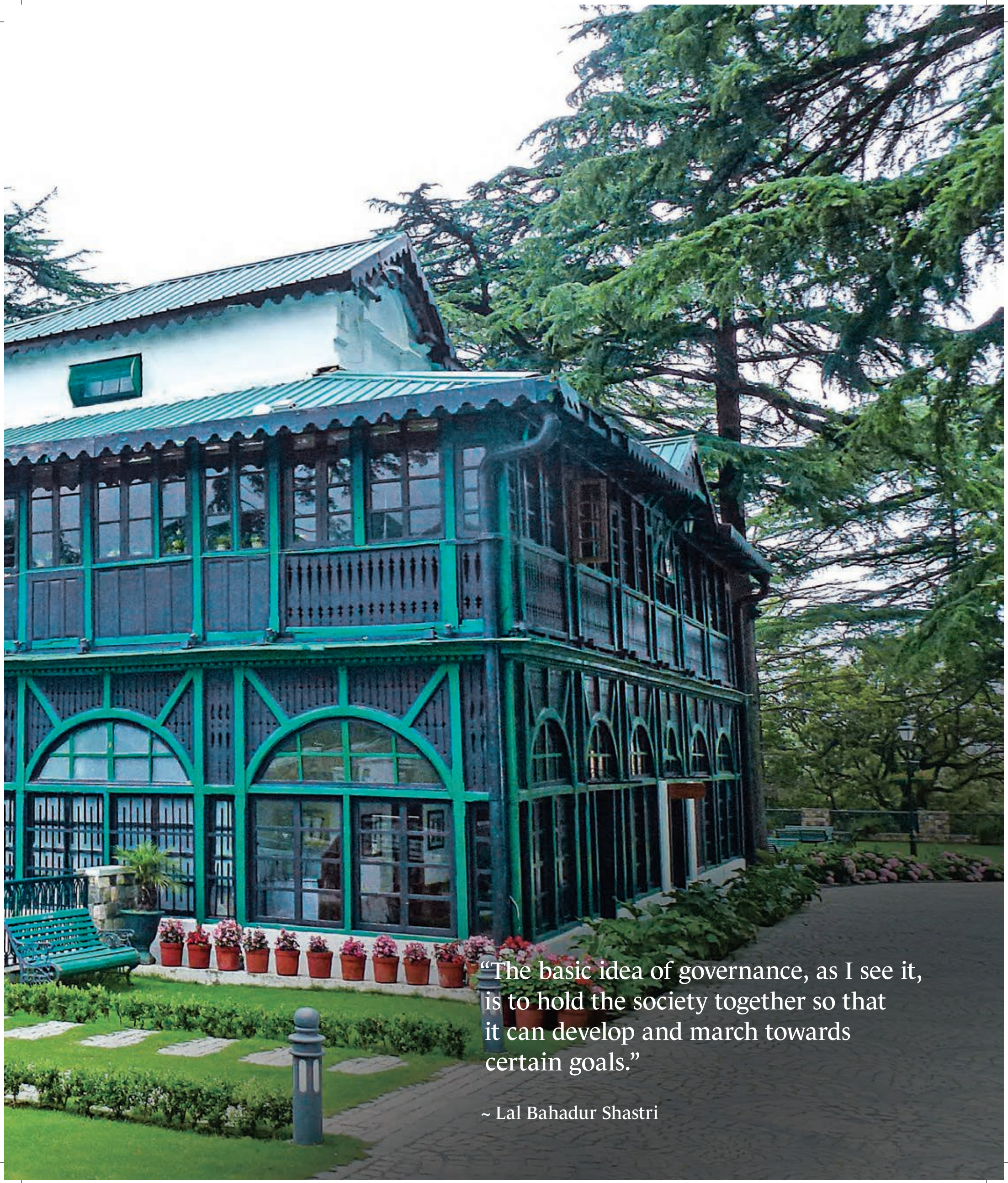

"The basic idea of governance, as I see it, is to hold the society together so that it can develop and march towards certain goals."

~ Lal Bahadur Shastri

Top: Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, interacts with Officer Trainees as Hon'ble MoS Dr. Jitendra Singh and other dignitaries look on

Bottom: Images from the Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi's visit to the Academy in 2017

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

Prime Minister

New Delhi
October 31, 2017

Dear Director, Faculty and Officer Trainees,

Today, on the occasion of the birth anniversary of Sardar Patel, I recall warmly, my pleasant and enriching visit to the Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration. It was, in many ways, a learning experience for me. I found at the Academy, a microcosm of our great nation, reflective of our rich cultural mosaic.

My conversations with the young Officer Trainees of the 92nd Foundation Course provided a valuable insight into their aspirations, and thoughts regarding their role and purpose as civil servants. I too, could share with them some of my experiences in administration and public life. I am sure, the dedicated faculty, would, in the spirit of mentorship, nurture and equip the young civil servants with the skill sets and value systems necessary to create a New India.

I shall also cherish the moments spent with my young friends at the Lalita Shastri Balwadi.

May the mighty Himalayas bestow all those who pass the gates of the Academy with compassion, wisdom, strength and character in the service of our great nation.

With warm regards,

Yours sincerely,

(Narendra Modi)

Smt. Upma Chawdhry
Director
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration
Charleville, Mussoorie,
Uttarakhand - 248179

Contents

FROM THE DESK OF THE DIRECTOR

1 | THEN. NOW. FOREVER 4

Then. Now. Forever

Integrating the Nation: The Role of Sardar Patel

From Metcalfe House to Charleville: G.B. Pant, Mussoorie and the National Academy of Administration

Conversations in Parliament

The Academy: Early Years

Metcalfe House. Charleville. Post Office: NAA

Sixty Years of Excellence

2 | SHEELAM PARAM BHŪSHANAM 24

Core Values

Raho Dharma Mein Dheer

Sheelam Param Bhūshanam

Yogaḥ Karmasu Kauśalam

A Bird's-eye View

3 | WINDS OF CHANGE AND WINGS TO FLY 36

Winds of Change...

... And Wings to Fly

Centres of Excellence

The Mentors

4 | IN SERVICE OF THE NATION 50

Moulding Administrators

Building Character

5 | A SHARED DESTINY 62

A Shared Destiny

Home Away from Home

In Sync with the Times

Bonhomie

Vox Populi

E^3 – Empathy. Energy. Excellence

From the Desk of the Director

I am privileged to write this preface to *Karmasu Kaušalam: Excellence in Action*, the publication to mark six decades of service to the nation from one of India's finest institutions. The Academy is named after Lal Bahadur Shastri, our second Prime Minister, who ushered in the Green Revolution and brought to centre stage the significant nation-building contributions of the soldier and the farmer through his astute slogan: '*Jai Jawan Jai Kisan*'. The institution's *raison d'être* stems from Sardar Patel's speech of October 10, 1949, in which he said, "*You shall not have a united India, if you have not a good All India Service that has the independence to speak its mind*." Inspired by the strength of conviction of these stalwart leaders, the Academy has shaped some of our nation's best women and men—in the past, present, and aims to do so in the future—and their work on governance and development interventions, on equity and social justice.

This eclectic collection of photographs, memorabilia and recollections showcases the historic moments and milestones in the life of the Academy. Each picture speaks more than a thousand words, and each recollection and poem reflects the *zeitgeist* of the times gone by, even as the collection itself captures how the institution and the nation are growing from strength to strength.

The Academy song '*Raho dharma mein dheer, raho karma mein veer, rakho unnat sheer, daro na*: Be strong in your faith, be firm in your action, march ahead with conviction and dispense with fear', along with the motto of the Academy: '*Sheelam Param Bhūshanam:* Character is the supreme embellishment', and the crest of the IAS: '*Yogaḥ Karmasu Kauśalam*: Yoga is the quest for perfection in action', continue to inspire generations of our alumni who occupy key positions in government across our diverse nation, and post-retirement in constitutional bodies, academia, civil society and the corporate world.

The Hon'ble Prime Minister has been investing considerable time and energy in our young Officer Trainees to ensure that they imbibe the ethos that drives us all to deliver public service honestly and effectively. Many of them have been sent to 'aspirational districts' for exposure, training and promoting out-of-the-box solutions. The Civil Services have also been tasked with the objective of making India a $5 trillion economy by 2024, aiming to eliminate poverty and put India on an unstoppable trajectory of ecologically sustainable development.

The Academy commits itself to working towards this goal by encouraging officers to accept and abide by the core values of *Antyodaya*, integrity, respect, professionalism and collaboration amongst the Civil Services—during the Foundation Course and in all the other courses that follow. This is a space where we hope they will learn to think deeply, forge friendships, hone core values of empathy and honesty, and cogitate upon their responsibility and ability to serve India and its citizens to the best of their abilities.

We look forward to your suggestions and views that will enable us to improve the content and structure of our training programmes, so that we continue to contribute effectively towards nation-building.

Jai Hind.

September 1, 2019
Mussoorie

Sanjeev Chopra

CHAPTER 1

THEN. NOW. FOREVER

The Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration (LBSNAA) at Mussoorie has been training officers of the Civil Services of India since 1959. Since its establishment, this premier institution has played a critical role in nation-building by serving as an effective catalyst in the moulding of the country's administrators. Over the last sixty years, it has influenced hundreds of young minds, turning entrants to the services into capable officers who constitute the backbone of the country's administrative structure.

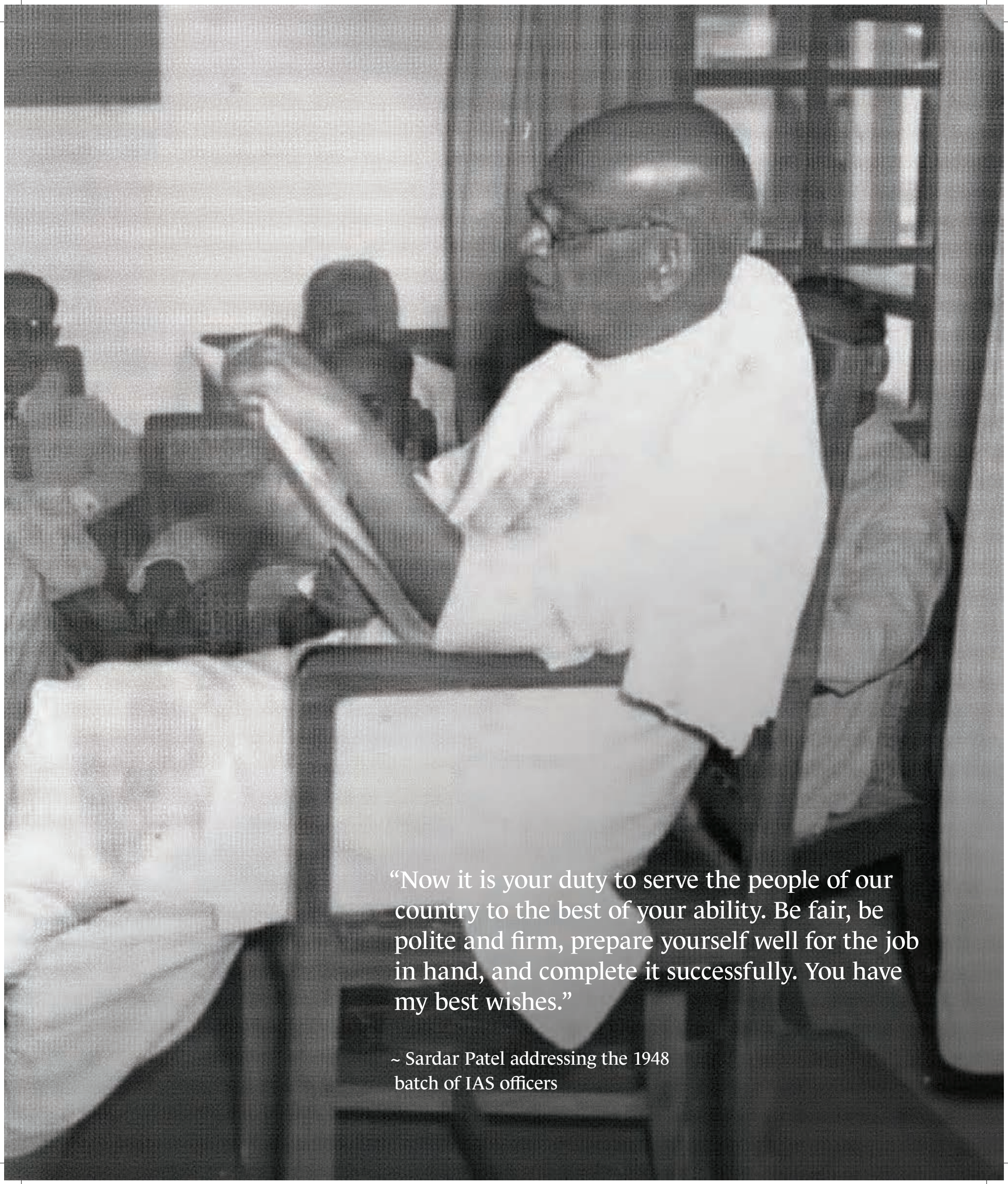

"Now it is your duty to serve the people of our country to the best of your ability. Be fair, be polite and firm, prepare yourself well for the job in hand, and complete it successfully. You have my best wishes."

~ Sardar Patel addressing the 1948 batch of IAS officers

Then. Now. Forever

Views of Metcalfe House, Delhi, 1843. Folio from 'Reminiscences of Imperial Delhi', commissioned by Sir Thomas Metcalfe. Source: British Library Board

The first Indian in the ICS, Shri Satyendranath Tagore, selected in June 1863, completed his training in England and returned to India in 1864

Shri Subhas Chandra Bose was selected to the ICS but chose to resign in 1921, saying, "Only on the soil of sacrifice and suffering can we raise our national edifice"

Civil servants at Metcalfe House being trained in the art of horse riding

The Civil Service in India has had a long, interesting journey since the days of the Company Raj. During the course of its transformation in the 21st century into a modern public institution, it was inevitable that the character of the Civil Service would alter significantly over decades of socio-economic change in an independent India.

The transfer of power to the British Crown in 1858 marked a paradigm shift in the nature of the Civil Services. The merchant administrators of the Company era now had an array of responsibilities to the state, and the fundamental nature of the offices they held changed drastically. The office of the Collector and District Magistrate played an important role in the enforcement of the empire.

The first merit-based competitive examination to the Civil Service was held in London in 1855. But the barriers to entry for Indians remained, with all senior and strategic-level posts being reserved for British personnel, leading to the debate on 'Indianisation' of the higher services. It was only after World War I that the process of 'Indianisation' really took off because of the changed circumstances, fuelled in part by the demand from the nationalist movement for self-rule. Deepak Gupta (IAS 1974) states in *The Steel Frame: History of the IAS*, *"...it [Indianisation] had a general positive effect because it reflected the capacity of Indians gaining entry into the service on merit competing with Europeans, and also displayed their ability in being able to discharge administrative responsibilities in a traditionally efficient and impartial manner. There was confidence that India could manage its own affairs quite capably with its own officers."* [1]

Thus began the evolution of the modern Civil Services in India. During the Crown's supremacy from 1858 to 1947, officers were given training at different institutions across the country and abroad. Candidates for the services, both foreign and Indian, under covenanted and uncovenanted services respectively, were trained at various colleges in Oxford, Cambridge and at Trinity College, Dublin. In later years, they were trained at the historic Metcalfe House, New Delhi, which now houses the Defence Research & Development Organization.

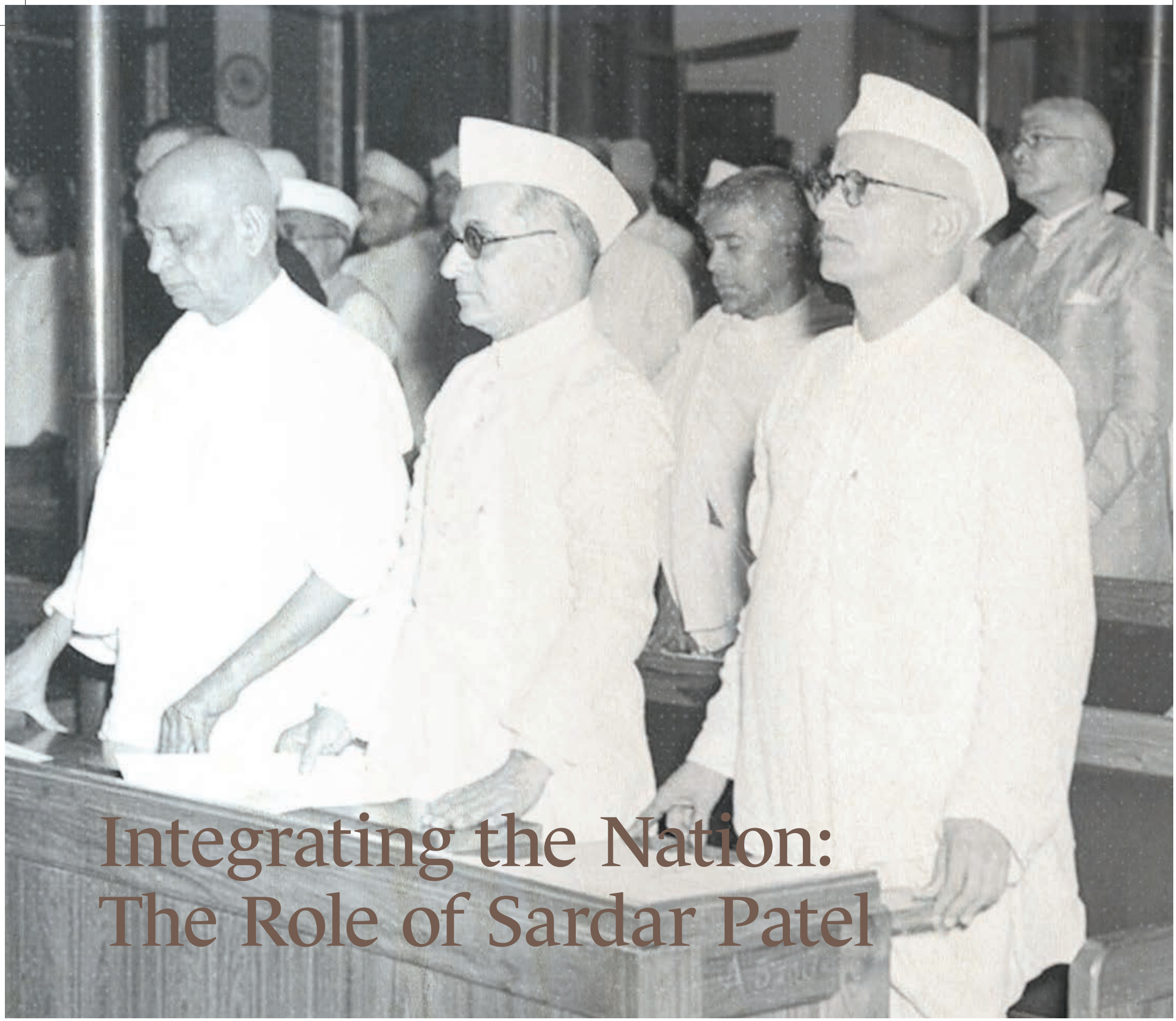

Integrating the Nation: The Role of Sardar Patel

The Indian Civil Service (ICS) continued to look over matters of administration for a few years after the independence of India. In view of the recently acquired sovereignty, there was a palpable realisation of the need to focus on national integration, and to make concerted efforts towards a cohesive India. The Constituent Assembly debates (3.37) read, *"In the context of the overriding concern for National Unity, an attempt was made, as part of the federal scheme, to ensure 'uniformity' in all the basic structures."* This uniformity was intended through an integrated judicial system, fundamental laws and a common All India Service. R.K. Dar (IAS 1968) in his work *Governance and the IAS: In Search of Resilience* states, *"A common All India Service was considered by the Constituent Assembly as being essential to maintain[ing] the unity of the nation."* [2]

Sardar Vallabhbhai Patel argued for a distinctive position for the All India Services in the administrative system of independent India. His experience in the Government of India as the Home Minister had caused him to recognise the need for according special status to these services.

During the provincial Premiers Conference held in October, 1946, he expressed the view, *"... it is not advisable, but essential, if you want to have an efficient service, to have a central administration service, in which, we fix strength as the provinces would require them and we draw a certain number of officers at the centre, as we are doing at present. This will give experience to the personnel at the centre leading to efficiency, and administrative experience of the district will give them an opportunity to contact the people."* [3]

In November 1949, when the question of providing constitutional guarantees to the All India Services was being debated in the Constituent Assembly (10:51), Sardar Patel sought to allay apprehensions in certain quarters:

"The Union will go—you will not have a united India, if you have not a good All India Service, which has the independence to speak out its mind, which has a sense of security...These people [All India Service officers] are the instruments. Remove them and I see nothing but a picture of chaos all over the country." [4]

In the final analysis, it was the persuasive efforts of Sardar Patel, Dr. B.R. Ambedkar and Shri N. Gopalaswami Ayyangar that convinced the Constituent Assembly to grant constitutional status to the All India Services. Article 312 of the Constitution gave constitutional status to the Indian Administrative Service and the Indian Police Service, and further provided that if the Council of States (Rajya Sabha) opined that it was in the national interest necessary or expedient to create one or more All India Services, Parliament may, by law, provide for the creation of such Services.

Dr. B.R. Ambedkar, Chairman of the Drafting Committee of the Constitution of India

Shri N. Gopalaswami Ayyangar, member of the Drafting Committee of the Constitution of India

The basic objectives in giving such a unique status to the All India Services were to ensure certain uniformity in the standards of administration and to enable the administrative machinery at the Union to keep in touch with the realities of the field in the states.

From Metcalfe House to Charleville: G.B. Pant, Mussoorie and the National Academy of Administration

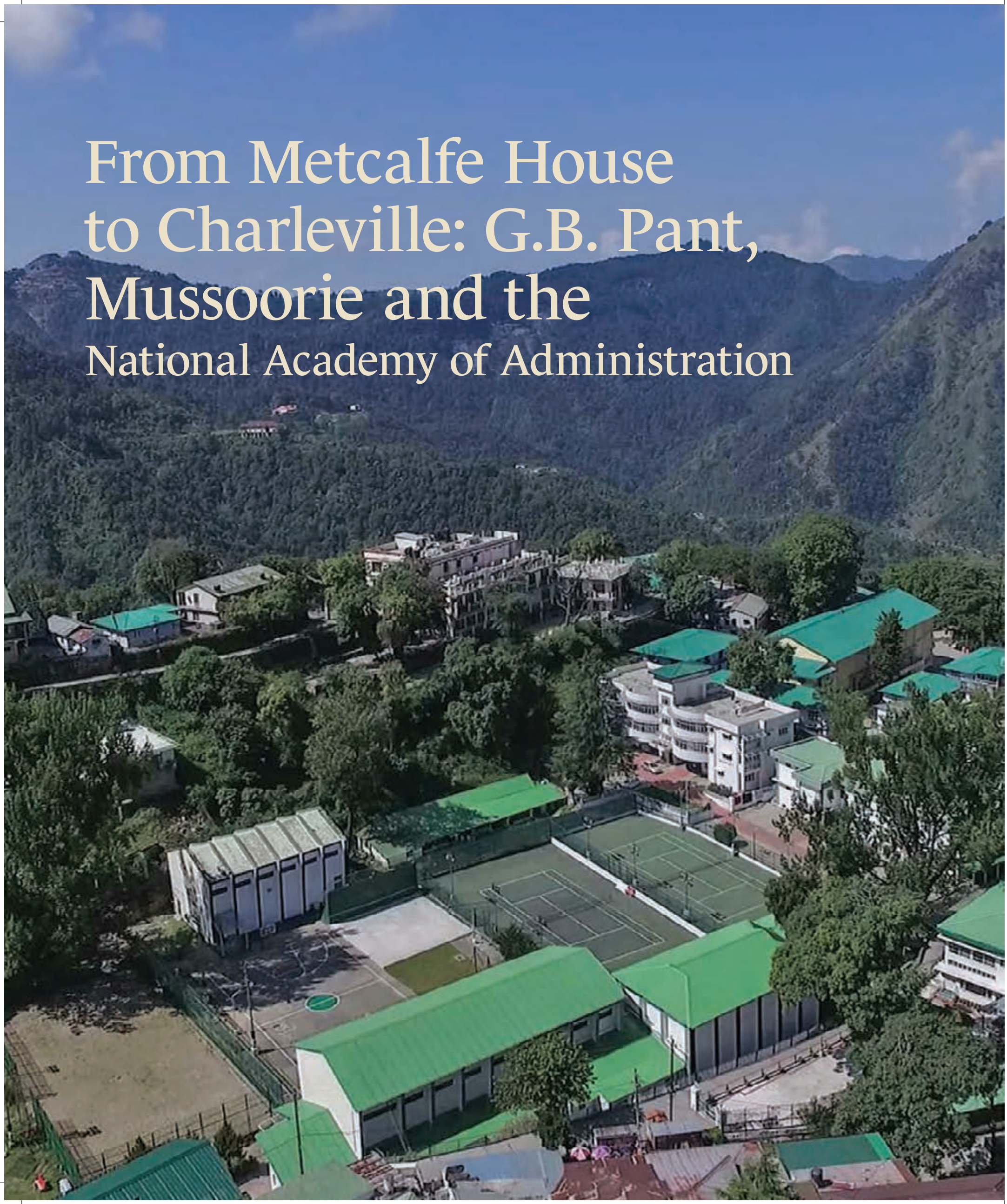

The Public Service Commission in India was first established in 1926 in accordance with the provisions of the Government of India Act, 1919. Its purpose was to protect the Civil Service from political influences and afford it stability and security. The Commission came to be known as the Federal Public Service Commission in 1937 as a result of provisions in the Government of India Act, 1935. In 1950, with the coming into force of the Constitution of India, it was renamed the Union Public Service Commission (UPSC). It conducts the recruitment of civil servants through a competitive examination. A report published by the UPSC in 1957 documented some of the issues that the institution faced. Interestingly, a month after this report was released, Pandit G.B. Pant, the then Minister of Home Affairs, expressed the need for the establishment of a separate training institute for the IAS and other cadre services. He felt that the Metcalfe House in Delhi, from where training had hitherto been imparted, would no longer suffice.

In 1958, Pandit Pant formally announced in the Lok Sabha that the government would set up a National Academy of Administration where training would be given to all recruits of the Civil Services to work towards upholding the values enshrined in the Constitution of India. The Ministry of Home Affairs also decided to amalgamate the IAS Training School, Delhi, and the IAS Staff College, Shimla, into an integrated National Academy of Administration to be located in Mussoorie's Charleville Estate. Pandit Pant felt that a single location for the officers' training would foster a sense of cooperation within the administrative services. In a speech in the Lok Sabha on April 15, 1958, he said:

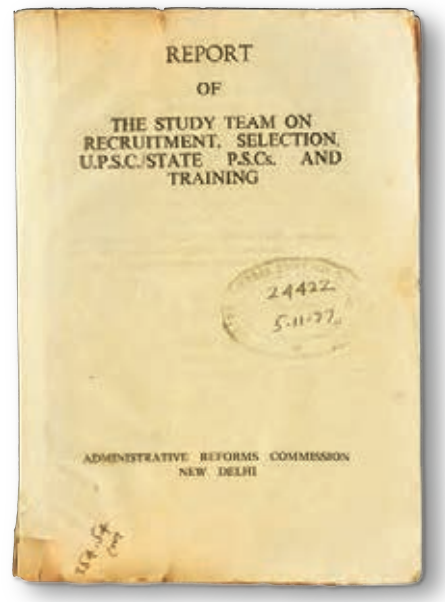

> "We have, since the achievement of independence, and some of those who were associated with administration even before that, made earnest efforts to bring about a suitable change in the outlook and approach of our services...We propose to set up a National Academy of Training so that the services, wherever they may function, whether as Administrative Officers, or as Accountants or as Revenue Officers, might imbibe the true spirit, and discharge their duties in a manner which will raise their efficiency and establish concord between them and the public completely." [5]

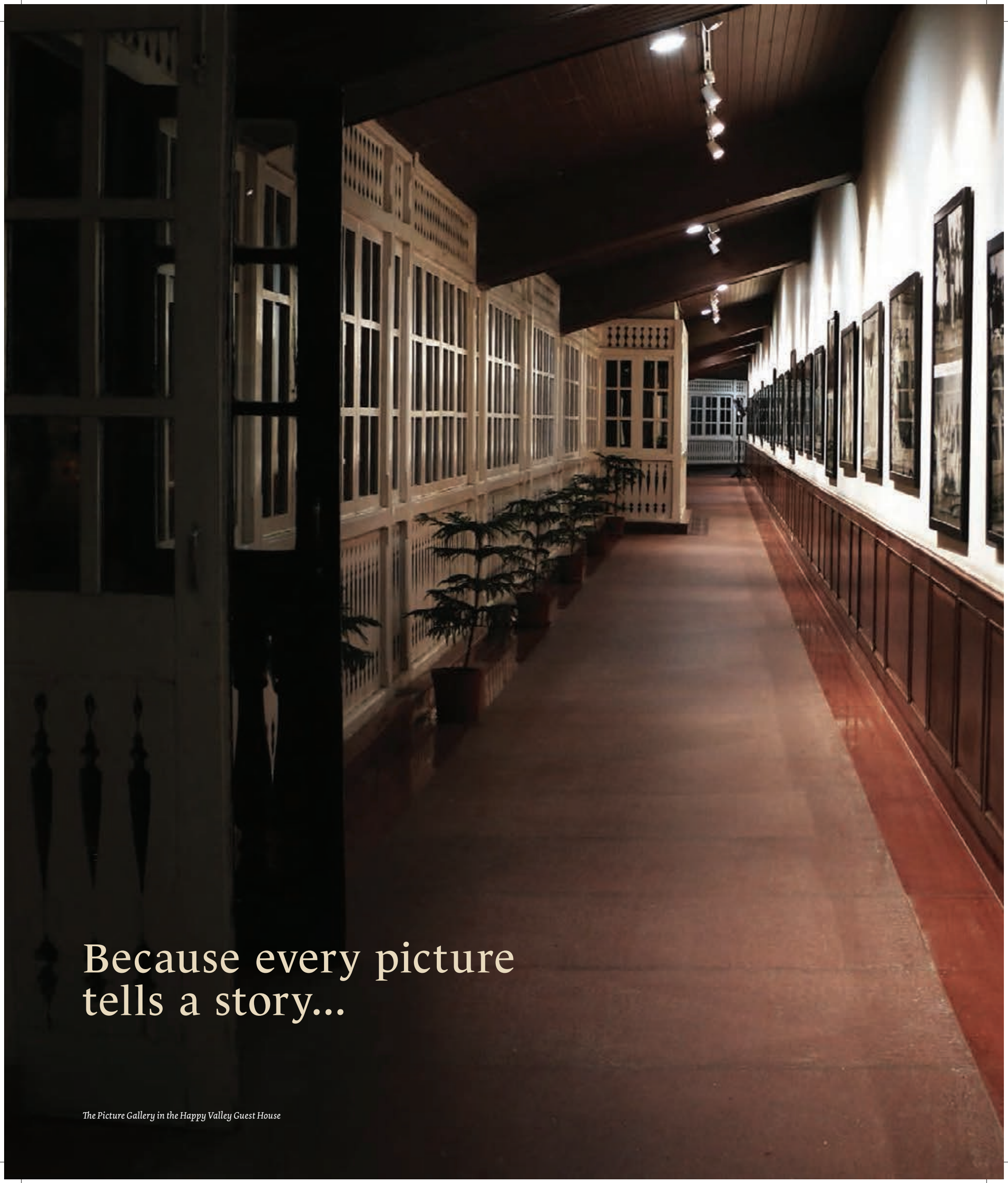

Because every picture tells a story...

The Picture Gallery in the Happy Valley Guest House

President of India with the Probationers of

Conversations in Parliament

April 15, 1958
Pandit G.B. Pant announces in Parliament his proposal to set up a National Training Academy so that all officers inculcate the true spirit of the administrative service.

April 16, 1958
Shri K.C. Reddy (then Minister of Works, Housing and Supply) states that the officers have personally visited Mussoorie [for the implied purpose of acquiring land] and are in talks with owners of various private properties.

November 20, 1958
Minister of Works, Housing and Supply asked to respond to questions regarding shifting of the IAS Training School to Mussoorie. The dialogue recreated from parliamentary records (Lok Sabha debates):

Shri Anil K. Chanda (Minister of Works, Housing and Supply): *"The question of acquisition of suitable accommodation for the IAS training school at Mussoorie is still under consideration."*

Question asked by Shri Bhakta Darshan: *"Why is there a delay despite the fact that our Home Minister Pandit G. B. Pant had himself suggested the Charleville Hotel for this purpose?"*

Shri Anil K. Chanda: *"It is a sort of commercial deal. We are going to acquire a private property and, naturally, we are trying to get the most favourable price."*

Question asked by Shri Vasudevan Nair: *"What is the special advantage in having this School at Mussoorie instead of at Delhi?"*

Shri Anil K. Chanda: *"There are certain special advantages in the sense that it is not very far away from Delhi. We are speaking of the whole of India. It is a school not for a particular state; it is for the whole of India. The advantages are: proximity to Delhi, climatic conditions, and also proximity to the Forest School and Military School at Dehradun where training for these officers would be easily available."*

August 14, 1959
Question number 449: What has been the progress regarding shifting of the IAS Training School to Mussoorie?

Answered by Shri Anil K Chanda: *"Arrangements for housing the institution at Mussoorie are nearing completion and it is expected that the school will move to that place by the end of the month."*

Asked why the matter is being delayed so much:
Shri Anil K. Chanda: *"We have sent our officers to take possession of the building. As I said, towards the end of the month, the School will possibly move out."*

Asked the truthfulness of whether the price at which the government is acquiring the estate is more than the market price:

Shri Anil K. Chanda: *"I do not think so Sir. It is a big property with land, building and furniture. Excepting crockery, cutlery and consumable goods, the entire property has been bought for a sum of* **4 lakhs**."[6]

The Academy: Early Years

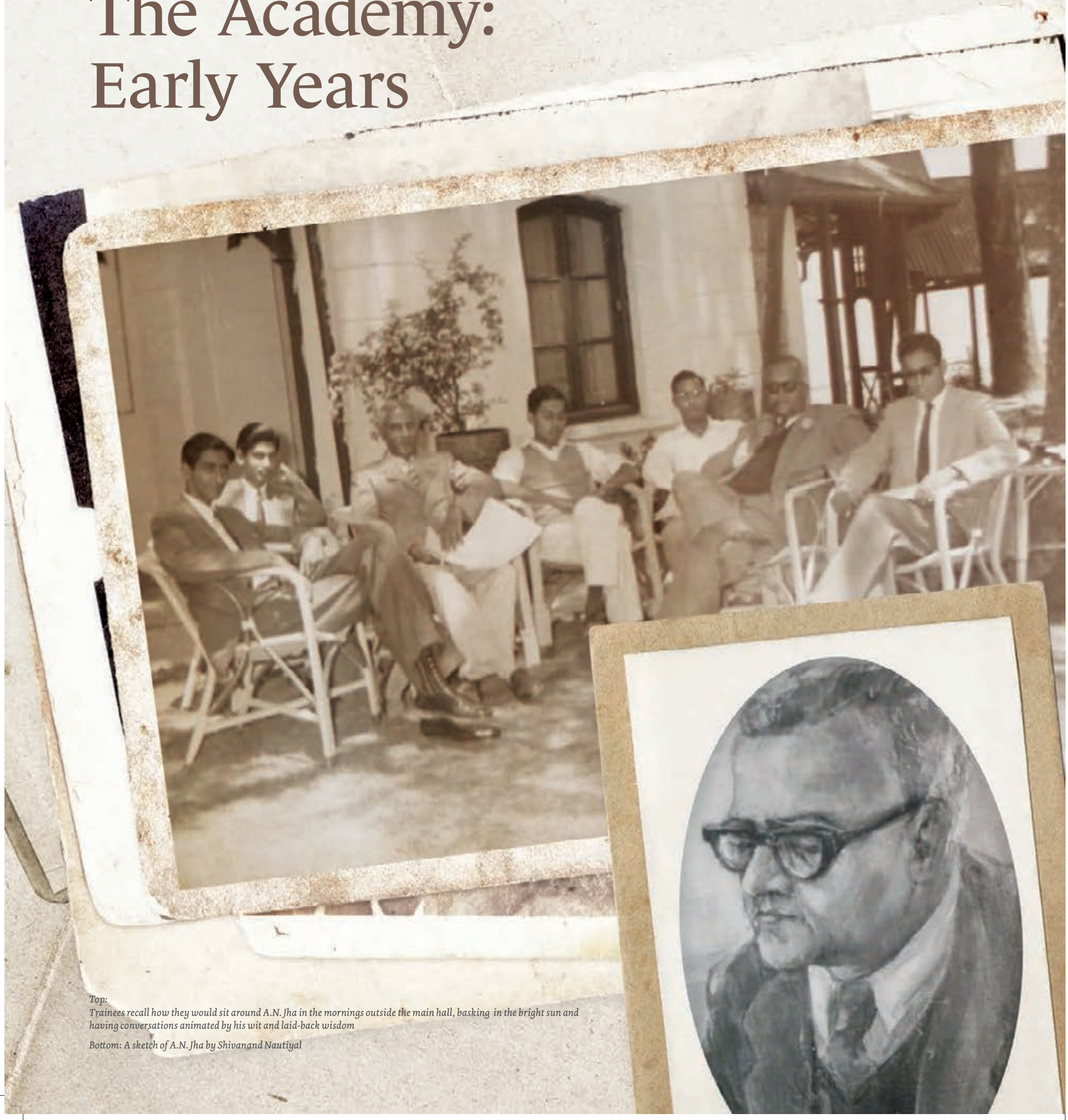

Top:
Trainees recall how they would sit around A.N. Jha in the mornings outside the main hall, basking in the bright sun and having conversations animated by his wit and laid-back wisdom

Bottom: A sketch of A.N. Jha by Shivanand Nautiyal

RK Trivedi

Happy Valley Guest House

"We had just about got used to living our new 'combined' life [at Metcalfe House] when, without notice, we were asked to pack up for moving to Mussoorie…a rather interesting explanation of this evacuation was: 'Up in the hills, the probationers shall not be disturbed by the attractions of Delhi, and they will get much better trained'," says N.N. Vohra (IAS 1959), commenting on the shift of the Academy from Metcalfe House to Mussoorie. [7]

The Academy was established in Mussoorie in 1959 along with the Director's Office, Language Block (renamed Charleville after renovation), Sardar Patel Hall and Happy Valley Guest House.

Aditya Nath Jha (ICS 1937), a stalwart leader who set the highest standards for the services for years to come, was appointed as the first Director of the Academy.

Talking about the Academy and its shift to Mussoorie, R.K. Trivedi (IAS 1943), the first Deputy Director, says that this idea was conceived and implemented by Pandit Pant. He says, "*While Sardar Patel created the All-India Services, its members selected through a tough merit-based competitive examination, and also provided for an even tougher training at the 'IAS Training School' in Delhi, it was Pandit Pant who envisioned setting up of the National Academy of Administration in Mussoorie. Panditji made some material changes to ensure 'training of the minds' with a rural-orientation. Bharat Darshan, attachment with the Block Development Officers, and regular visits to the villages, became an integral part of training.*" [8]

In this regard, the well-known Rajindra Kumar Hari from 'Hari's Stationery' reports, "*The process started with Mr. Trivedi taking a team of probationers to Mussoorie to inspect the site. My father was asked to join and see if the canteen could be shifted as well. We moved to Mussoorie in August 1959. There were at that time 113 (IAS, IFS and CS) probationers.*" [9]

Residents of Mussoorie recall how two events in 1959 changed Mussoorie forever; the Academy shifted here, and with the Dalai Lama, Tibetans came and settled in Happy Valley, making it their home. They feel that it suddenly became a place where every person in the bureaucracy was trained, and that made a big difference to the stature of the town.

Metcalfe House. Charleville. Post Office: NAA

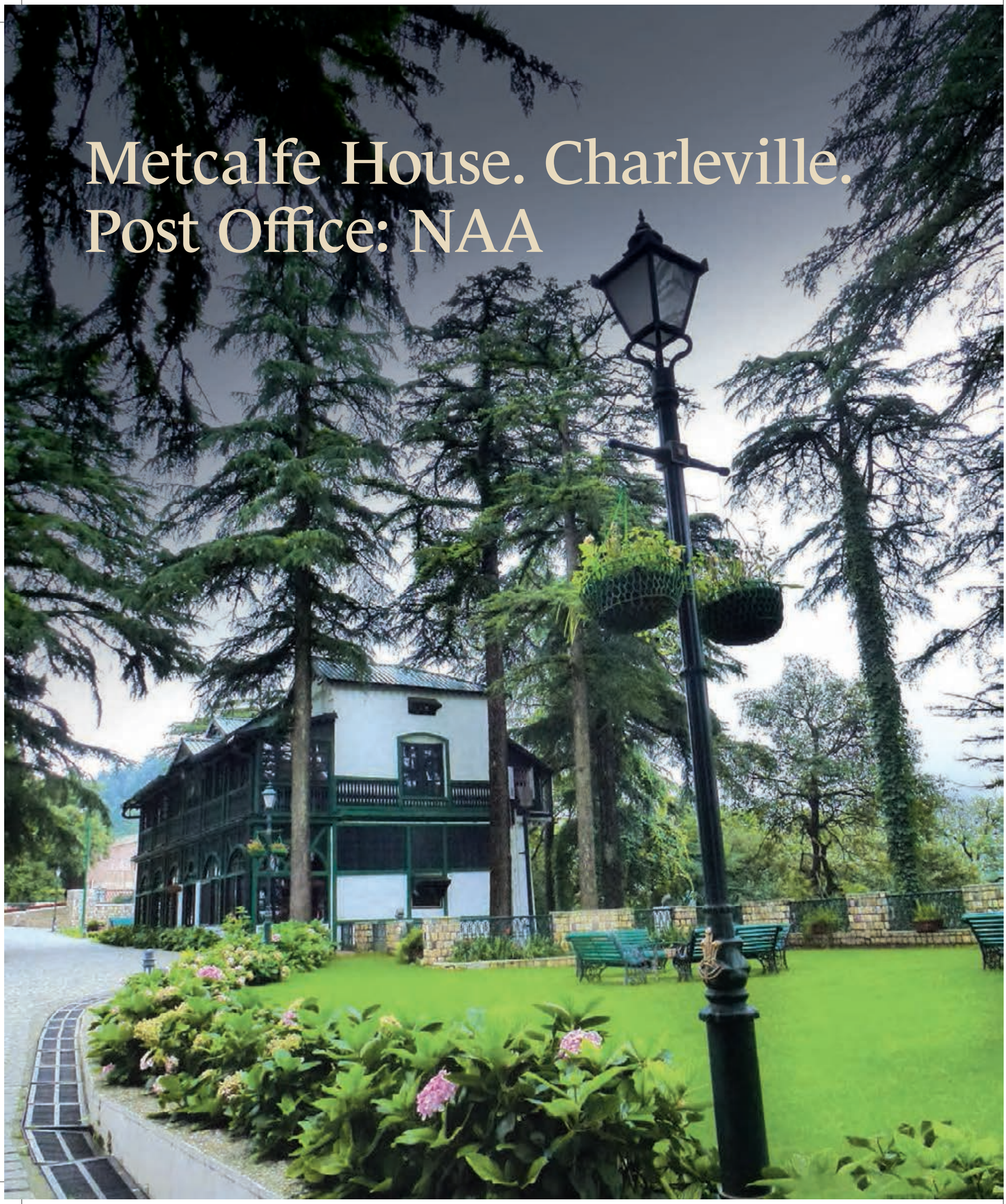

One of the earliest records of Charleville Hotel is found in the *Guide to Mussoorie* (1907) with notes on adjacent districts and routes into the interior, compiled from various sources by F. Bodycot where it is stated that "*...the main building was built by General Wilkinson, who acquired the Chajauli rent-free lands from the Mahant of Dehra in 1854...In 1884 it was taken over by Mr. Wutzler and has remained in his energetic and capable hands ever since.*" [10]

The grounds of Happy Valley were acquired in 1904 by the brewer V.A. Mackinnon. He started the Happy Valley Club with tennis courts, while gymkhanas were held on the Polo Ground. The last record of a '*Pagal Gymkhana*' dates back to 19th June 1943, to raise funds for the Red Cross during World War II.

By the time the government bought the Charleville property in 1958-59, its fortunes as a hotel had declined considerably.

After the parliamentary proceedings in the late fifties, the Academy was set to begin a new journey at Charleville in Mussoorie. Around two decades after this shift, its expansion transformed it rapidly within the premises of the Charleville Estate. The Academy saw a surge in the number of Officer Trainees (OTs) in successive years. In order to accommodate them two large halls were built, and new buildings like Stapleton and Indira Bhawan were acquired. Three multi-storeyed hostels, Ganga, Kaveri and Narmada, were constructed between 1975-78.

On 24th May, 1984, a fire caused by an electrical short circuit engulfed the VIP Guest Rooms, the library, the dining hall, the Director's residence and the Main Block. Most of the old buildings of the erstwhile Charleville Estate were gutted in the fire.

In 1991, severe tremors from the Uttarkashi earthquake damaged the Ladies' Block and the G.B. Pant Block. These buildings were pulled down to build the Kalindi Guest House and Dhruvshila.

The Academy has evolved over the years and new infrastructure has been added to create a world-class facility.

The Sub Post Office at the Academy

Sampoornanand Auditorium

Dhruvshila Block

The Royal Civil Service Commission of Bhutan

The Academy has not only moulded Indian citizens into officers; it has imparted excellent training to the civil servants of neighbouring Bhutan as well. Every year, members of the Royal Bhutan Civil Services come to Mussoorie to undergo training at the Academy.

The first Memorandum of Understanding (MoU) between the Royal Civil Service Commission (RCSC) of Bhutan and Union Public Service Commission (UPSC) was signed in 2005 to develop an institutional link between the Public Service Commissions of both countries that share common ideals.[11]

Sixty Years of Excellence

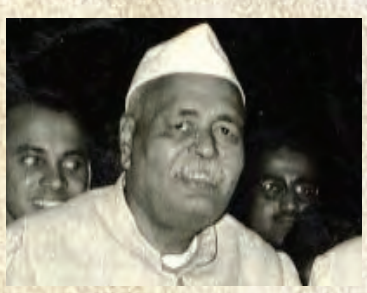

1958
Announcement in the Lok Sabha by the then Union Home Minister Pandit Govind Ballabh Pant to set up the National Academy of Administration.

1959
The Academy was established in Mussoorie along with Director's Office, Language Block (later renamed Charleville after renovation), Sardar Patel Hall (SPH) and Happy Valley Guest House.

1960
A common Foundation Course for the I.A.S., I.F.S., I.P.S. and the Central Services was introduced.

1969
A sandwich pattern of training was introduced in the Academy which included Phase-I, District Training in the respective State Cadres, followed by Phase-II.

1970
The Academy functioned under the Ministry of Home Affairs from the date of inception till 1970 and again from 1977 to 1985.

1970 – 1977
The Academy functioned under the Cabinet Secretariat.

1972
Name changed to 'Lal Bahadur Shastri Academy of Administration'.

1973
Subsequently, the word 'National' was added and it became 'Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration'.

1975 – 1978
Ganga, Kaveri and Narmada hostels constructed.

1984
In May, 1984, a portion of the Campus which housed the Officers' Mess, the library, VIP Guest House and Director's residence was destroyed in a fire accident.

1985
The Academy began functioning under the Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions, Government of India.

1988
NIC Training Unit established.

1989
Centre for Rural Studies (initially called the Land Reform Unit) established.

1991
In October, 1991, the Uttarkashi earthquake severely damaged the Ladies' Block and the G.B. Pant Block, and on these two sites, Kalindi and Dhruvshila were built.

Sampoornanand Auditorium, named after the second Chief Minister of Uttar Pradesh, was constructed by the state government of U.P.

1996
Kalindi Guest House and Dhruvshila inaugurated by the then Union Minister of State for Personnel, Public Grievances and Pensions, and Parliamentary Affairs, Shri S.R. Balasubramaniam.

2015
Aadharshila Block inaugurated by Minister of State for Personnel, Public Grievances and Pensions, Dr. Jitendra Singh.

2016
Centre for Cooperatives and Rural Development renamed as Centre for Public Systems Management (CPSM).

2018
The Chanakya Hall inaugurated.

1992
Karmshila Block inaugurated by the then Vice President of India, Shri K.R. Narayanan.

1995
National Gender Centre, a registered society under the Societies Registration Act-1860, set up.

2004
Hospital block inaugurated by the then Minister of Home Affairs, Shri Shivraj V. Patil. The Centre for Disaster Management was also inaugurated.

2010
Gyanshila Academic Block and Silverwood Executive Hostel were inaugurated.

2012
Mahanadi Executive Hostel inaugurated.

2017
Prime Minister Shri Narendra Modi laid the foundation stone of the new hostel at Monastery Estate, horse stables and residences for the horse-riding establishment and a synthetic track at Polo Ground.

CHAPTER 2

SHEELAM PARAM BHŪSHANAM

Sardar Vallabhbhai Patel's special address to IAS officers at Metcalfe House, published in the Bombay Chronicle on 21st April, 1947, gives an insight into what was expected of administrators in an independent India. In this speech, Sardar Patel outlined the task before them and laid down certain principles of *Surajya* or good governance, the most important of these being impartiality, incorruptibility and integrity.

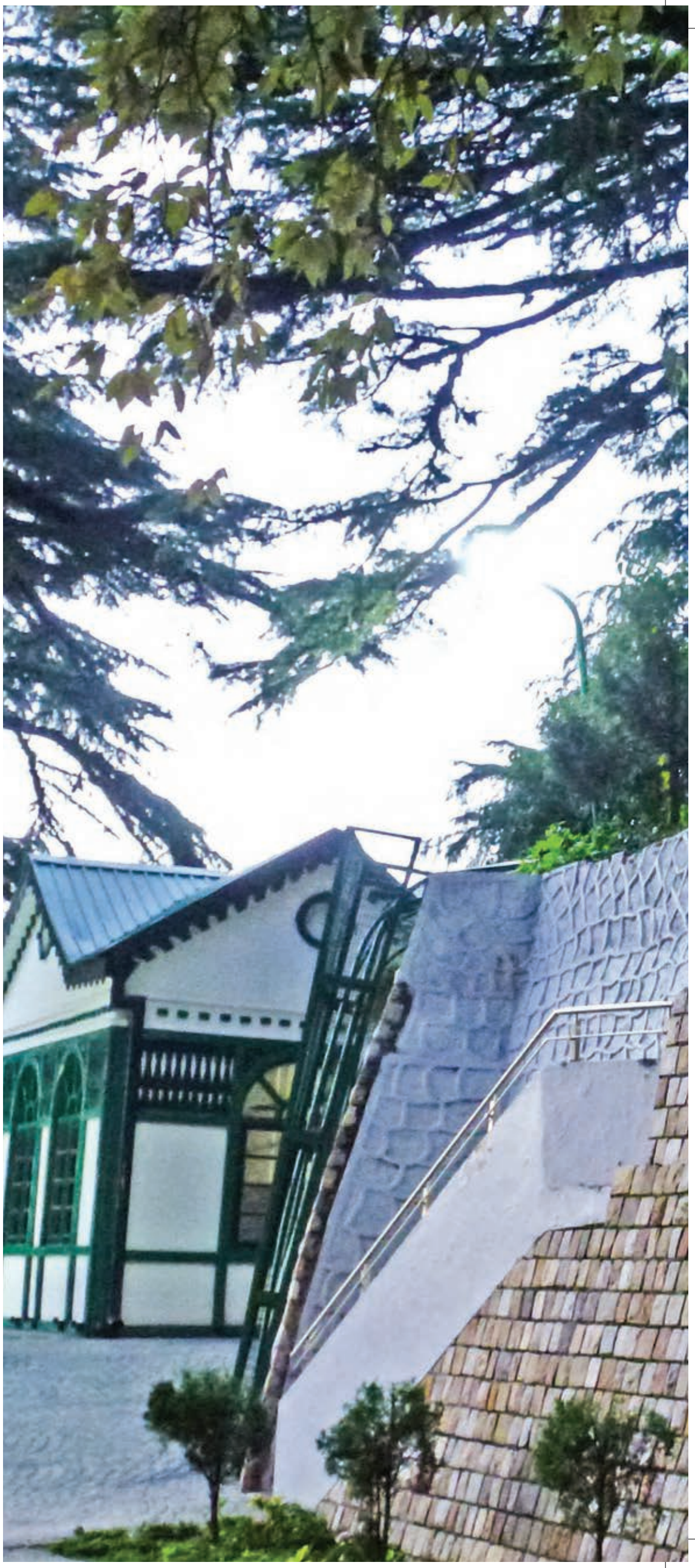

शीलं परम भूषणम्

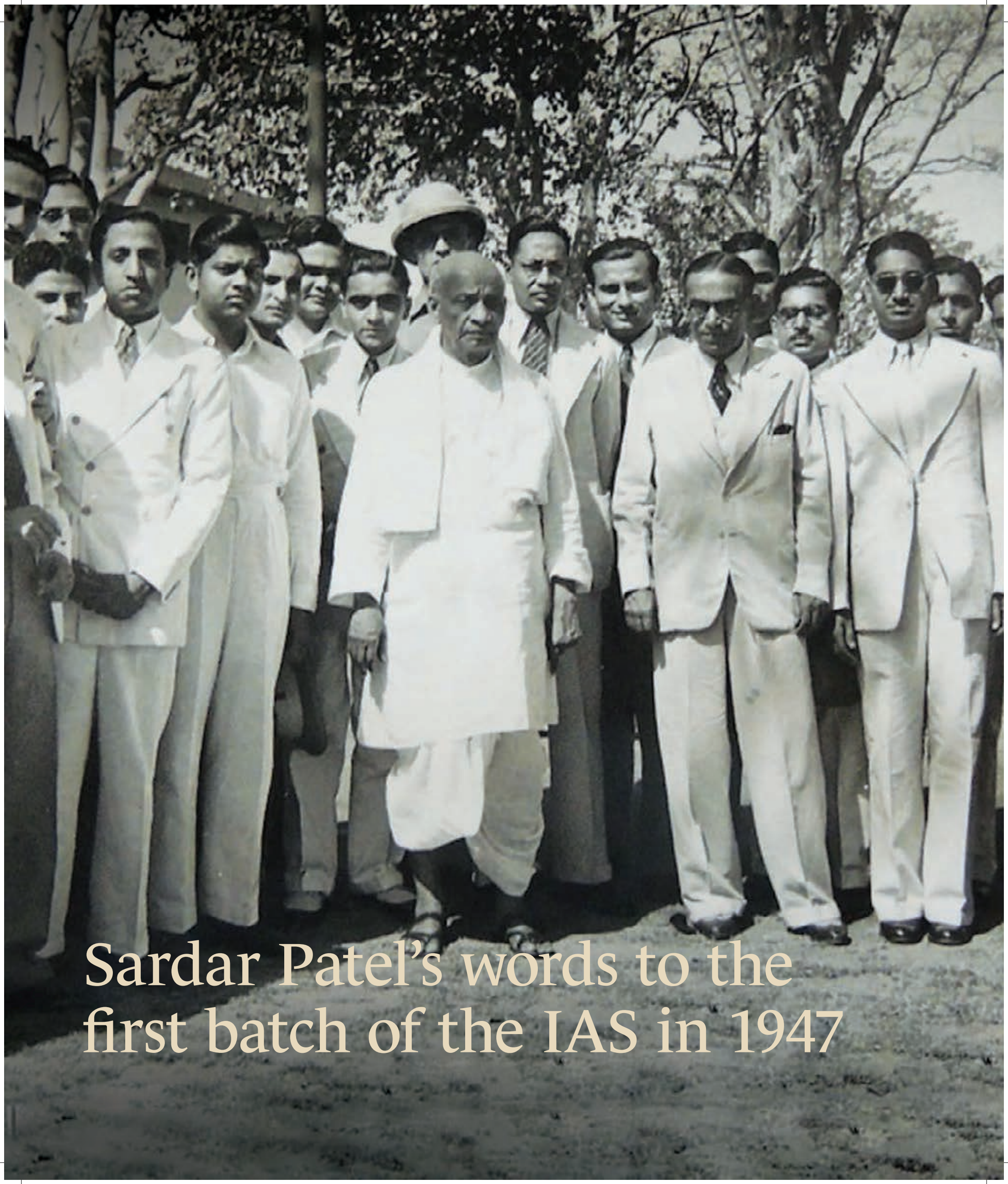

Sardar Patel's words to the first batch of the IAS in 1947

He urged civil servants to uphold these principles, and to *"...cultivate an 'esprit de corps' without which a service as such has little meaning."* He said, *"You should regard it as a proud privilege to belong to the service, covenants of which you will sign and uphold throughout your service—its dignity and integrity."* In his speech he advised the civil servants to work without any expectations of extraneous rewards and to be *"... guided by a real spirit of service in [their] day-to-day administration."* [12]

Kripa Narain (IAS 1948) recalls Sardar Patel's words to the 1948 batch:

Sardar Patel with the first batch of IAS officers, post-independence

"You have been selected for the premier service of the country, assuring you of a decent livelihood and security. Remember, you are going to occupy important positions in the future. Now it is your duty to serve the people of our country to the best of your ability. Be fair, be polite and firm, prepare yourself well for the job in hand, and complete it successfully." [13]

It is these tenets of good governance that the Academy tries to instill in its trainees. Given the varied nature of the Civil Services and the opportunities it offers, it also provides them with the necessary skills to use these opportunities to their full potential.

Core Values

The core values that the Academy upholds have been defined thus:

Serve the underprivileged

Be humane in your approach while dealing with people; be the voice of the underprivileged and be proactive in addressing any injustice against them. You can achieve success in this endeavour if you act with integrity, respect, professionalism and collaboration.

Integrity

Be consistent in your thoughts, words, and actions which will make you trustworthy. Have courage of conviction and always speak the truth to even the most powerful, without fear. Never ever tolerate any degree of corruption, be it in cash, kind, or of an intellectual nature.

Respect

Embrace diversity of caste, religion, colour, gender, age, language, region, ideology, and socio-economic status. Reach out to all with humility and empathy. Be emotionally stable, grow with confidence, and without arrogance.

Professionalism

Be judicious and apolitical in your approach; be professional and completely committed to your job with a bias for action and results; and continuously pursue improvement and excellence.

Collaboration

Collaborate in thoughts and actions by engaging deeply with all to evolve consensus. Encourage others, promote team spirit, and be open to learning from others. Take initiative, and own responsibility.

Mission Statement

हमारा लक्ष्य है
गुणात्मक प्रशिक्षण द्वारा कार्यकुशल और जवाबदेह सिविल सेवा का निर्माण करके, सुशासन स्थापित करने में हाथ बटाना और इसके लिए अकादमी में सहयोगपूर्ण, नैतिक–मूल्य प्रधान व पारदर्शी परिवेश स्थापित करना।

MISSION STATEMENT
We seek to promote good governance, by providing quality training towards building a professional and responsive civil service in a caring, ethical and transparent framework.

The training process at the Academy is designed in such a way that the Officer Trainees find themselves experiencing an intimate sense of belonging unique to the institution. People from different spheres, different parts of the country, and from abroad, are equally a part of the solidarity that the Academy tries to foster. A strong belief in the traditions and values of the Academy, and an aspiration to take its legacy forward defines their outlook thereafter.

The Academy song and motto reinforce this sense of belonging from the very beginning.

Special Cover released to mark the Diamond Jubilee of the Academy in 2019

Commemorative stamp released on the occasion of the Golden Jubilee of the Academy in 2009

Dr. Jitendra Singh, Hon'ble Minister of State, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions, Government of India, at the Academy's Diamond Jubilee celebrations

Raho Dharma Mein Dheer

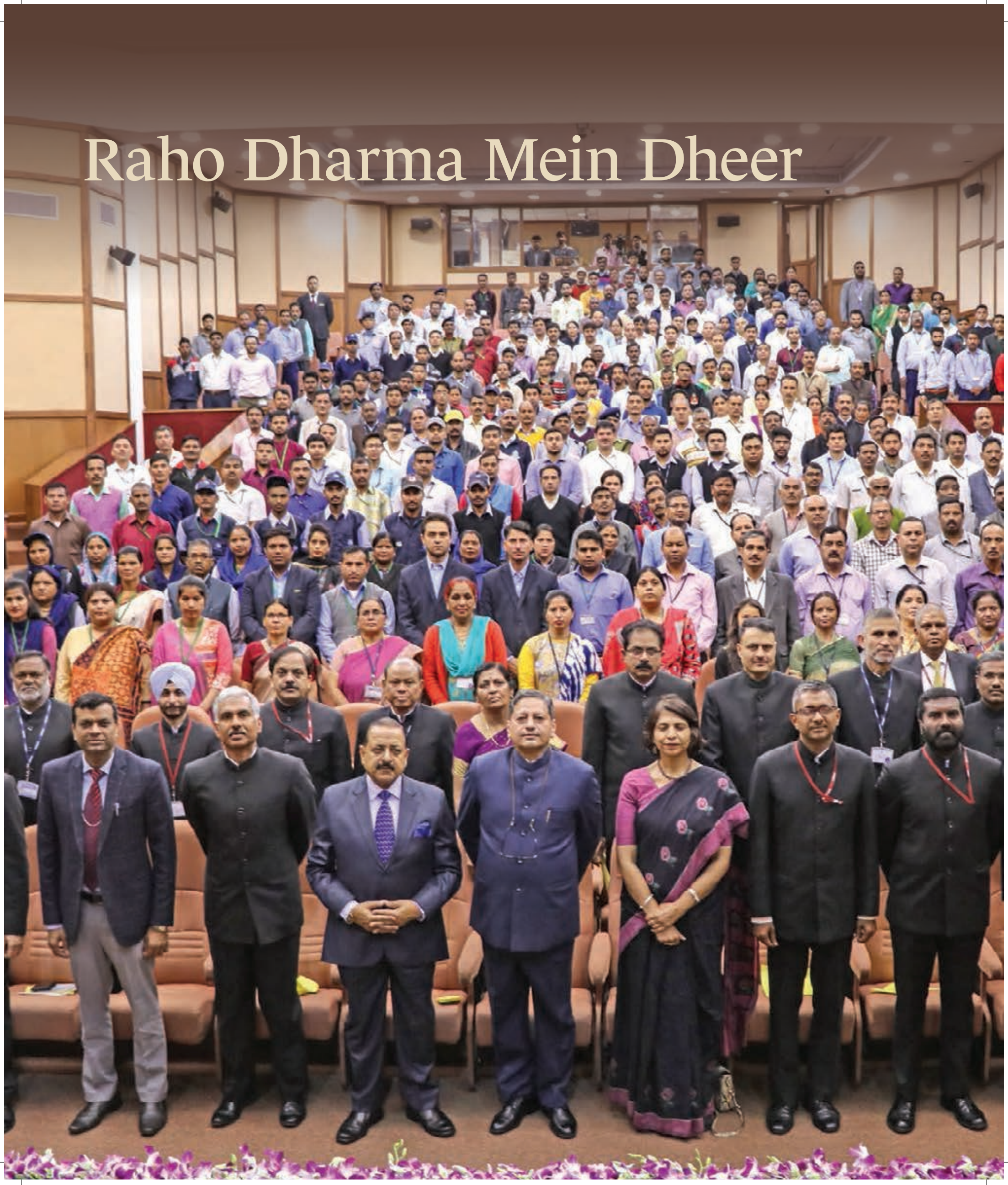

This song was composed by Atul Prasad Sen (1871–1934), a Bengali composer, lyricist and singer. It has been restructured by the Academy to include lines from three other languages—Hindi, Tamil and Marathi—thus lyrically capturing the linguistic diversity found in the east, north, south and west of the country.

हओ धरमेते धीर, हओ करमेते बीर,	। बंगला ।	*Be firm in your faith,*
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय।		*Be courageous in action*
भूलि भेदाभेद ज्ञान, हओ शबे आगुआन		*Hold your head aloft: fear not;*
शाथे आछे भगबान – हबे जॉय।	(धुन)	*Forget all your differences,*
रहो धर्म में धीर, रहो कर्म में वीर	। हिंदी।	*March forward,*
रखो उन्नत शिर – डरो ना।		*God is with us – victory is assured;*
नाना भाषा, नाना मत, नाना परिधान,	। बंगला।	*Many languages, many creeds,*
बिबिधेर माझे देखो मिलन महान।		*many costumes,*
देखिया भारते महाजातिर उत्थान		*Let there be unity in this diversity,*
जागो जान मानिबे बिश्शय।		*Watching the rise of the*
जागो मान मानिबे बिश्शय।	(धुन)	*great Indian Nation,*
उल्लत्तिल उरूडियाय सेयल विरमुडन	। तमिल।	*The world will be filled with wonder*
तलै निमरिन्दु निर्पाय नी।		*The world will be filled with wonder* [14]
रहो धर्म में धीर, रहो कर्म में वीर	। हिंदी।	
रखो उन्नत शिर – डरो ना।		
भूलि भेदाभेद ज्ञान, हओ शबे आगुआन,	। बंगला।	
शाथे आछे भगबान – हबे जॉय।	(धुन)	
व्हा धर्मात धीर, व्हा करणीत वीर।	। मराठी।	
व्हा उन्नत शिर – नाही भय		
नाना भाषा, नाना मत, नाना परिधान,	। बंगला।	
बिबिधेर माझे देखो मिलन महान।		
देखिया भारते महाजातिर उत्थान		
जागो जान मानिबे बिश्शय		
जागो मान मानिबे बिश्शय।		
हओ धरमेते धीर, हओ करमेते बीर		
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय।		
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय		
हओ उन्नतो शिर – नाहि भॉय।।		

शीलं परम भूषणम्

Sheelam Param Bhūshanam

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक् संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा बलवतां धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं **शीलं परम भूषणम्** ।।

~ From Bhartṛhari Nitiśatakam

Affluence is adorned by goodness, valour by not boasting, knowledge by control of the senses, scholarship by modesty, wealth by giving to the deserving, *tapas* by the absence of anger, power by forgiveness and *dharma* by truth. Character is the supreme embellishment.

योगः कर्मसु कौशलम्

Yogaḥ Karmasu Kauśalam

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व
योगः कर्मसु कौशलम्।।२.५०।।

~ From The Bhagavad Gita,
Chapter 2, Verse 50

In Chapter 2, Verse 50, of the Bhagavad Gita, Krishna talks to Arjuna about *Sthithpragya*—a person endowed with the wisdom of equanimity, who is firm in his thought and action under all circumstances. The ideal person is not swayed by every gust of wind; he is committed to excellence in action. Perfection in action is Yogaḥ.

A Bird's-eye View

01
[Towards] Indira Bhawan Complex

02
Charleville Cafe and Souvenir Shop

03
Front Gate

04
Silverwood Executive Hostel

05
Sampoornanand Auditorium

06
Old Reception

07
Sardar Patel Hall

08
Chanakya Hall

09
Language Block

10
Kalindi Guest House

11
Director's Office

12
Karmshila Block

** The Red-billed Blue Magpie is represented in the Academy Logo*

LBSNAA

Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration

12A
G.B. Pant Hall

13
Dhruvshila Block

14
A. N. Jha Plaza

15
Gyanshila Block

16
Mahanadi Executive Hostel
and Happy Valley Block

17
Narmada
Executive Hostel

18
Kaveri
Executive Hostel

19
Ganga
Executive Hostel

20
Happy Valley
Sports Complex

21
Community Centre

22
Riding Ground

23
[Towards] Polo Ground

CHAPTER 3

WINDS OF CHANGE AND WINGS TO FLY

The mission of creating a generation of civil servants that would have the responsibility of first building and then steering the nation forward, depends largely on inputs that stimulate the highest degree of commitment, passion and the spirit of service amongst the participants.

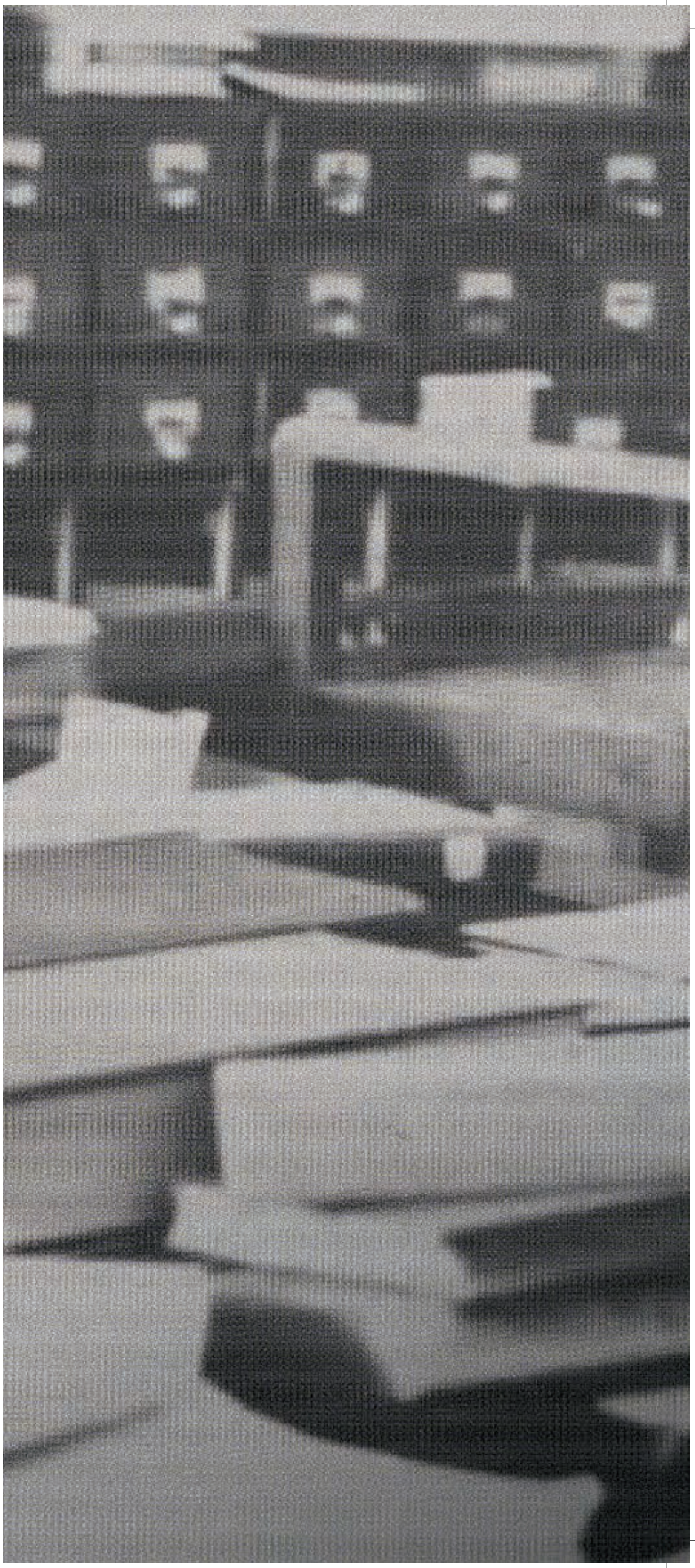

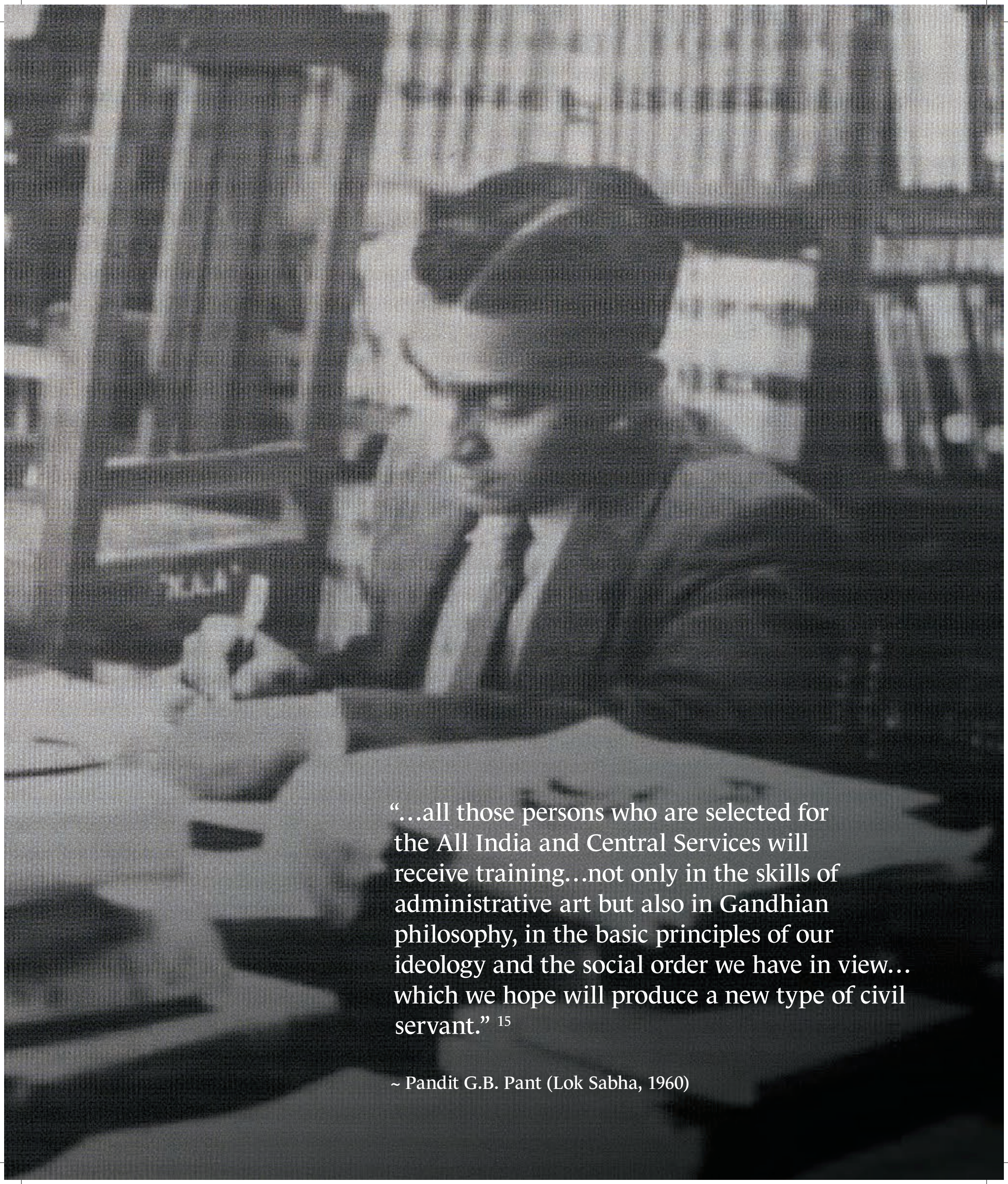

"…all those persons who are selected for the All India and Central Services will receive training…not only in the skills of administrative art but also in Gandhian philosophy, in the basic principles of our ideology and the social order we have in view… which we hope will produce a new type of civil servant." [15]

~ Pandit G.B. Pant (Lok Sabha, 1960)

Winds of Change...

In a country where most issues are multi-layered and constantly evolving, this is by no means a small feat. The Academy has the complex objective of making Officer Trainees intellectually field-ready, and instil the values, attitude and discipline required for greater public responsibility through mandatory sports and other physical activities.

In order to stay ahead of the game, the singular solution is to evolve constantly; to create and re-create training modules and material, syllabi and pedagogy through a strong feedback system. *"The Academy is a great institution with a strong link with the field and a very active curriculum,"* says B. Bhamathi (IAS 1979), at her batch's forty years reunion. Zohra Chatterji of the same batch adds, *"The LBSNAA now possesses state-of-the-art infrastructure and a dynamic faculty, and one can see that the Officer Trainees are being encouraged to participate through the use of technology."*

In the sixties, the subjects taught at the Academy were largely focussed on the issues of relevance then. Apart from changes in curriculum and pedagogy, there has been a transformation in the way the Civil Services are being looked at today. The present Director, Sanjeev Chopra (IAS 1985), points out that from being administrators and governance professionals, officers have gradually moved towards being development facilitators with a distinct focus on reaching out to the poorest and most vulnerable sections of the society.

The core structure from the initial years is yet relevant, especially the daily physical fitness regime, the much-awaited Winter Study Tour (still fondly referred to as *Bharat Darshan*) with its various attachments and the involvement in various activities. However, the subjects, content, and the methods of learning have undergone a tremendous change to become more interactive and inclusive. The new approach has looked at minimising lectures and incorporating case studies, role-play and field visits to enable greater empathy towards prevalent issues. Special Director Arti Ahuja (IAS 1990) explains, *"The current generation is more questioning and very keen on learning. It would be doing a great disservice if we didn't measure up to that."* A changing world has necessitated an engagement with issues such as acid attack victims, transgenders, sex-workers, victims of forced marriages and child sexual abuse, among others.

And yet, what has not changed over time is the spirit of commitment to learning. Senior officers talk about the quality of debate that was generated and how they we were expected to think for themselves and challenge assumptions. Happily, that remains the same. Anudeep Durishetty (IAS 2018) says,

A classroom session in progress

> "…as the debate grew on, I wasn't so much interested in guessing which team was going to win, because the discussion in itself was more enjoyable. What held my attention was something more fundamental: the power of conversations." [16]

Firm Foundations for FC

...And Wings to Fly

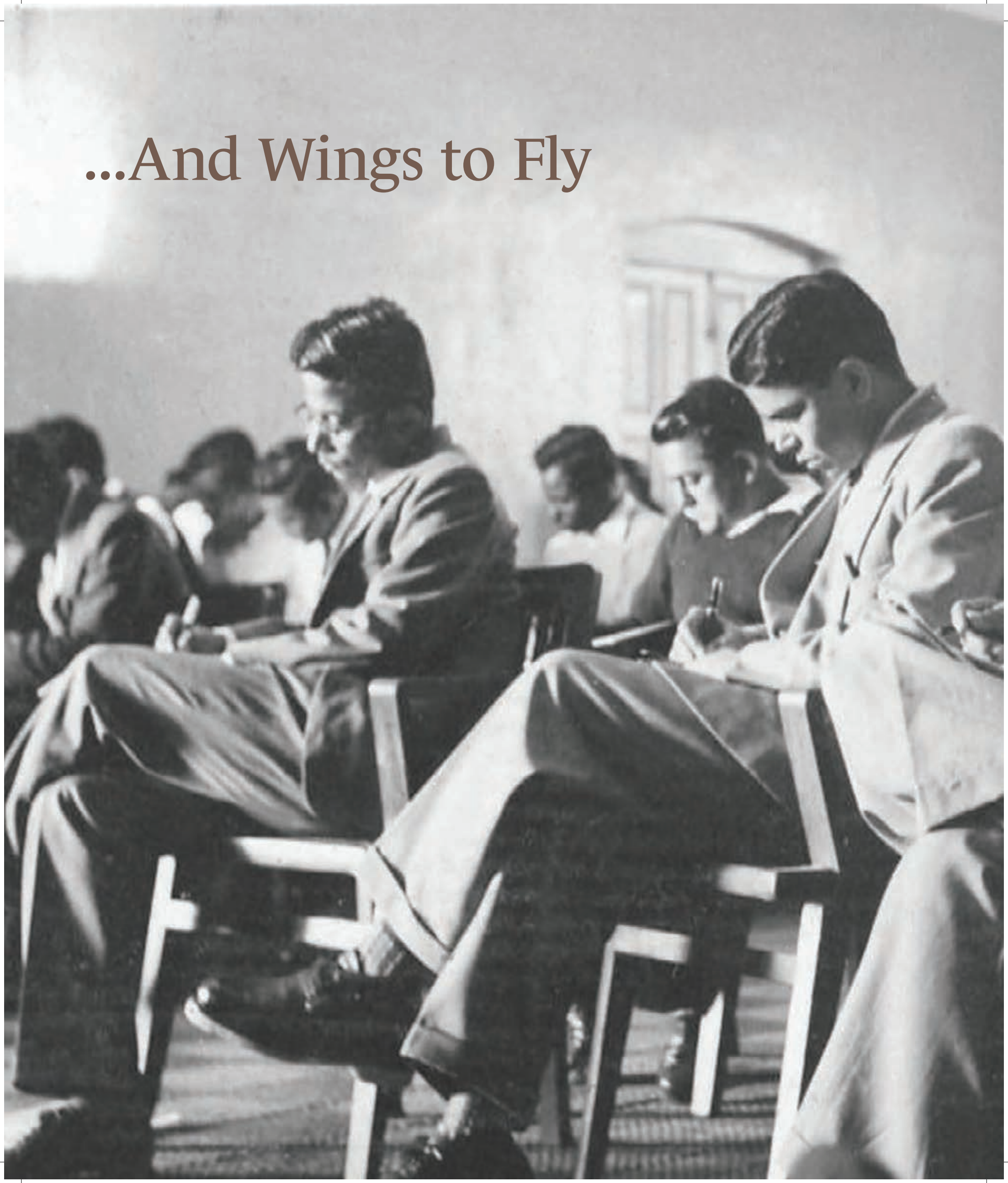

Testing their mettle—Officer Trainees at the Armed Forces Attachment during the Winter Study Tour

The Foundation Course at the Academy brings together the All India Services and the Central Services under one roof and epitomises the *esprit de corps* that the Academy seeks to inculcate in the new recruits.

A gamut of activities that challenge the physical endurance of the Officer Trainees and offer intellectual stimulation make the fifteen weeks of the Foundation Course an unforgettable experience.

While the other services proceed to their respective institutions to complete their service-specific training after the Foundation Course, those belonging to the IAS stay back at the Academy for a longer period. The subsequent year for them involves a sandwich pattern of experiencing, analysing and assimilating. The Winter Study Tour and the various attachments and visits to civil society organisations offer a way to get close to the realities of this vast democracy. Phase I followed by District Training under the Collector and District Magistrate for a year gives the trainees rigorous exposure to the field activities. Phase II for IAS officers, back at the Academy, serves as a time to reflect on and absorb what they have learnt in the field.

The association with the Academy, however, does not end here. Various mid-career programmes have been added over the years where officers at various levels in their career must return to share, interact and learn from each other's experiences.

The Joint Civil-Military Programme on National Security was started in 2001 after the Kargil War to create a structured platform where civil servants and the armed forces officers could exchange ideas and share their understanding of national security and its challenges.

The Academy has set up world-class facilities, whether it be the extensive refurbished library, the digitised education processes including long-distance learning of languages (from a time stencils were used to teach language) or the addition of new centres of research which enrich the pedagogy and curriculum.

Centres of Excellence

The **Centre for Rural Studies** is responsible for the concurrent evaluation of land reform policies implemented by the states, and evaluation of poverty alleviation schemes, on the basis of socio-economic survey of the villages done by the Officer Trainees undergoing district training. [17]

The **Centre for Disaster Management** conducts training programmes and develops modules in various aspects of disaster management. It sponsors seminars and conferences, workshops, study circles and working groups, for promoting research in disaster management.[18]

At the **National Gender Centre,** training is delivered through courses and workshops for understanding the conceptual and analytical gender relations framework. It aims at providing active support for policy formulation and advice for clients and gender networks in India and abroad. [19]

The **Centre for Public Systems Management** aims at strengthening skills of officers involved in ensuring that the state's mechanisms of service delivery function effectively. Seminars and workshops to expose officers to new theory and best practice in various aspects of administration are organised from time to time through this Centre.

The Academy is intent on making its way meaningfully through the challenges thrown up by our 21st century world. There is a sense of preparedness in every aspect of work and life at the Academy, with its mission to support knowledge practice by a strong grounding in discipline, creating a perfect ambience for people to continue learning and re-learning through time.

As Padamvir Singh (IAS 1977), former Director of the Academy, puts it:

> "…in exciting times, where the softer issues of character and ethics would combine with competencies, to realize a vision of the future that gets created in the new age, connected world." [20]

Inauguration of the Aadharshila Block in 2015 by Dr. Jitendra Singh, Hon'ble Minister of State, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions, Government of India

Top: Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, interacts with Officer Trainees at the Academy
Bottom: Officer Trainees keen to learn and grow

The Mentors

Honouring the contribution of former Directors*

A.N. JHA
01.09.1959 – 30.09.1962

M.G. PIMPUTKAR
04.09.1965 – 29.04.1968

D.D. SATHE
19.03.1969 – 11.05.1973

S.K. DUTTA
13.08.1963 – 02.07.1965

K.K. DAS
12.07.1968 – 24.02.1969

** Each Director's tenure is indicated below his or her name*

RAJESHWAR PRASAD
11.05.1973 – 11.04.1977

G.C.L. JONEJA
23.07.1977 – 30.06.1980

I.C. PURI
16.06.1982 – 11.10.1982

B.C. MATHUR
17.05.1977 – 23.07.1977

P.S. APPU
02.08.1980 – 01.03.1982

R.K. SHASTRI
09.11.1982 – 27.02.1984

The Mentors

K. RAMANUJAM
27.02.1984 – 24.02.1985

B.N. YUGANDHAR
26.05.1988 – 25.01.1993

B.S. BASWAN
06.10.1996 – 08.11.2000

R.N. CHOPRA
06.06.1985 – 29.04.1988

N.C. SAXENA
25.05.1993 – 06.10.1996

WAJAHAT HABIBULLAH
08.11.2000 – 13.01.2003

BINOD KUMAR
20.01.2003 – 15.10.2004

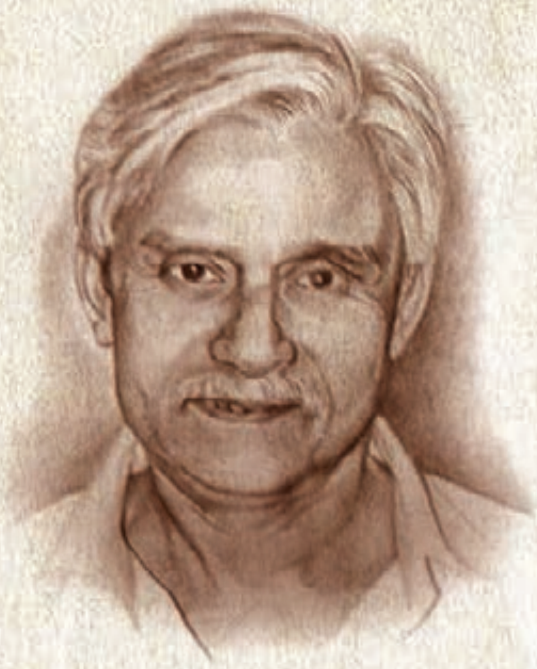

RUDHRA GANGADHARAN
06.04.2006 – 02.09.2009

RAJEEV KAPOOR
20.05.2014 – 09.12.2016

PADAMVIR SINGH
02.12.2010 – 28.02.2014

D.S. MATHUR
29.10.2004 – 06.04.2006

UPMA CHAWDHRY
11.12.2016 – 31.12.2018

Sketch artist: Anjali Thapa

CHAPTER 4

IN SERVICE OF THE NATION

The process of selection for the Civil Services—which involves passing the gruelling UPSC examination—is one of the toughest in the country, as many would attest to. However, this is but a fraction of the trajectory that an officer's life will chart.

The Academy is really where it all starts. This is the training ground where young recruits are chiselled into able administrators.

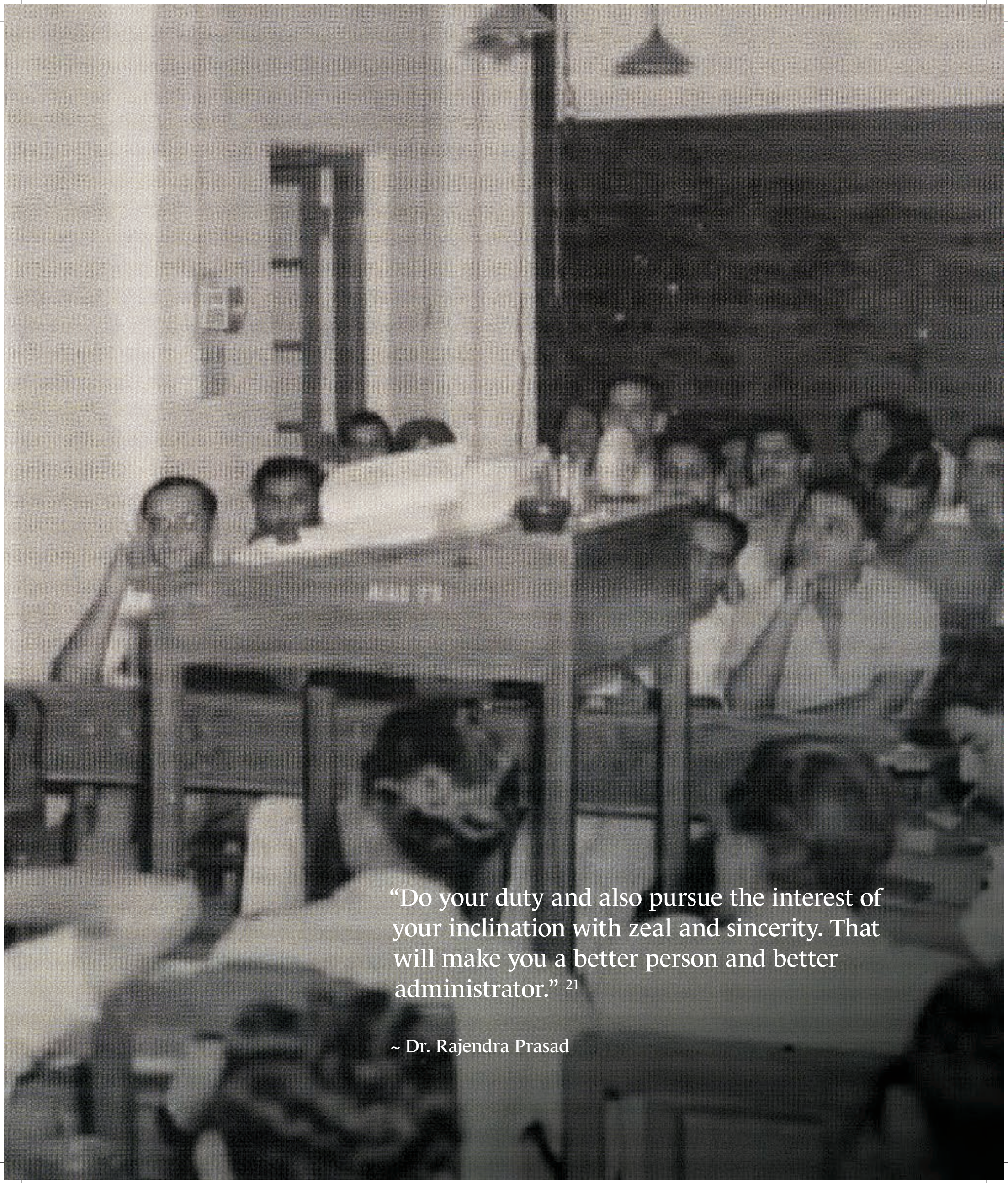

"Do your duty and also pursue the interest of your inclination with zeal and sincerity. That will make you a better person and better administrator." [21]

~ Dr. Rajendra Prasad

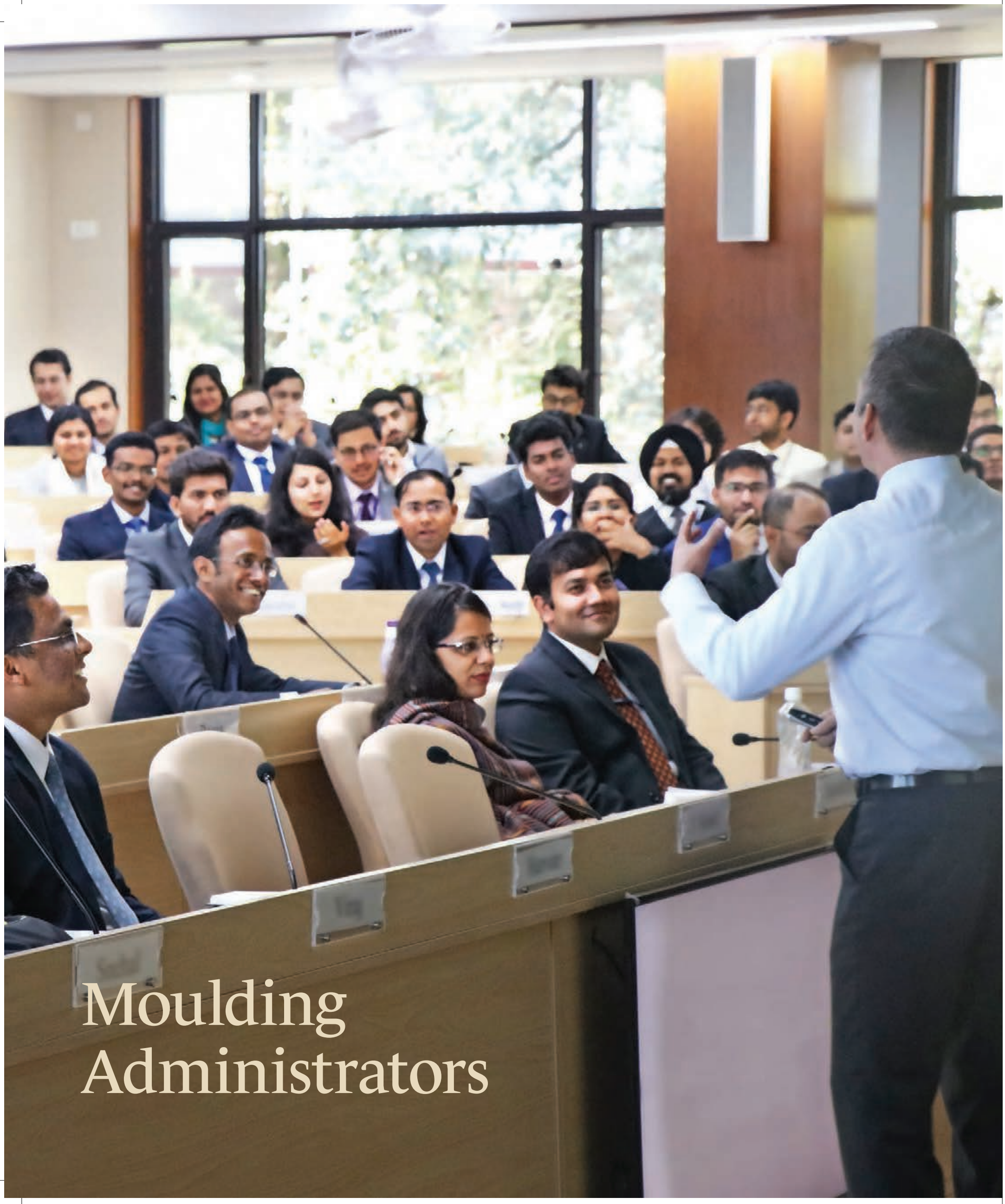

Moulding Administrators

Javid Chowdhury (IAS 1967) in his work, *The Insider's View: Memoirs of a Public Servant*, says, *"The behaviour, views and values of our instructors stamped on us indelibly the credo of public interest and commitment to service in an objective and even-handed manner. As an irreducible requirement, our personal conduct had to remain impeccable."* [22]

Classroom sessions, interactions with guest speakers, debates and quizzes are planned to stimulate the mind. Physical training, adventure sports and cultural activities are aimed at developing leadership qualities, confidence and skills for cooperation and problem-solving. No one understands this better than S.S. Rana, veteran PT instructor, who avers that physical exercise in the morning keeps one disciplined and prepares one for the day's work while adventure activities like rafting and trekking help improve one's confidence and endurance levels. He considers Officer Trainees the real pillars of India *"... whose duty it is to serve the people, and it is the job of the faculty to demonstrate this aspect to them."* Mansoor Hasan Khan (IDAS 2002), Senior Deputy Director, puts it succinctly,

"Be it running the course, sports, academics, food, hostels, or anything else, we have not failed. This is because we have a very strong mechanism of coordinating and monitoring everything. We also have a fall-back option ready. It is an institution where people feel good about working."

Physical fitness is an important component of the training process

Trainees are placed in situations where they have to rise up to face responsibilities. From their first day in the Academy they are up at the crack of dawn! As Ilezhe Himato Zhimomi (IFS 1993) declares, *"Was it six, or was it five in the morning, it did not quite matter. For most of us, Rana's whistle blew at the dead end of the night. Before we even got to know our new mates, we pretty quickly got to know the early morning chill of Mussoorie."* [23] From dawn to dusk, the day goes in juggling studies and activities. Many trainees note that there is not a single day spent without a special event or activity being organised. Alankrita Singh (IPS 2008), who has experienced life in the Academy as an Officer Trainee as well as a member of the faculty, feels, *"It has been a roller-coaster ride, then and even now."*

Building Character

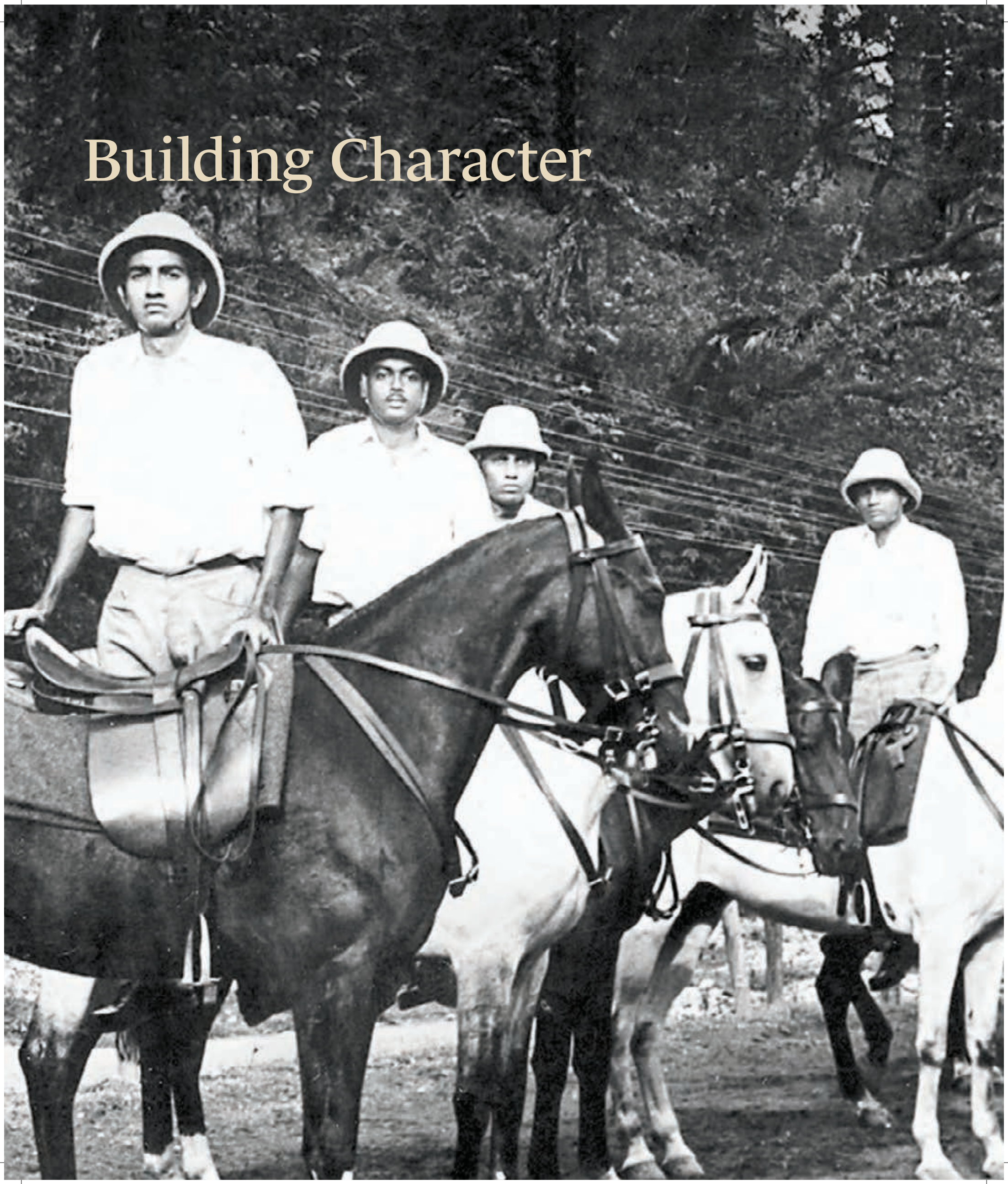

Participation in activities and in various societies is aimed at challenging preconceived notions and orienting the trainees in the core values and principled thinking required of future administrators. As Prasanta Kumar Mishra (IAS 1972) explains in his work, *In Quest of A Meaningful Life: Autobiogaphy of A Civil Servant*,

Horse-riding instructor Nawal Singh secures the hoisted flag in presence of former Director S.K. Dutta

"During the training in Mussoorie, we were practically taught the value and importance of *shramdaan.* Every day, we used to contribute physical labour while singing the song *dhana-dhan faware*. We even prepared the horse riding track through *shramdaan* under the guidance of the Director." [24]

Horse-riding has been a sensitive and tendentious topic of discussion amongst Officer Trainees, especially in the days when it was a compulsory activity. P Abraham (IAS 1962) in his book, *Memoirs of an IAS Officer: From Powerless Village to Union Power Secretary*, states that horse-riding "*... as part of the initial training...has relevance in the overall context of grooming an officer to face very difficult situations with composure and confidence.*" [25] For others, it is an exercise that treads the fine line between tolerance and revolt.

While writing their parting comments at the time of leaving the Academy, one Officer Trainee wrote, 'Riding was great fun'; another observed wryly, 'Riding was great fun...for the horses!' K.J.S. Chatrath (IAS 1967) adds, "*Every probationer who had gone through riding training in the Academy would remember the clear and stern voice of Nawal Singh Sa'ab and his lament: 'Ghoda nahi sambhalta, district kaisay sambhalogey'.*" [26]

Mrinalini Garde (IAS 1962), the only lady probationer of the batch, fell from her horse during horse-riding so often that even the stern Nawal Singh recommended that she be exempted from the activity. But she would not accept that and continued practising and trying. In the end, she passed the dreaded mandatory horse-riding test in her first attempt, where many 'seasoned' officers had failed and had to come back in subsequent years. This spirit of 'not giving up' amplifies what develops an Officer Trainee into a true professional in the service of the nation.

On trekking in the Himalayas, Atul Anand (IAS 1994) remarks that it "*...was a test of endurance coupled with the spirit of adventure.*" He light-heartedly adds, "*There was no pampering in the Academy and those who expected it were soon cut to size... [so when we asked] what to do in the case of a snake bite, our Course Coordinator, known*

for his straightforwardness, replied, 'We have taken all precautions, but in case you are careless enough to get bitten by a snake...speak your last famous words and prepare to meet your maker'." [27]

Although some of these activities may not have been entirely to the liking of Officer Trainees during their stay here, most of them are known to have admitted to their relevance. Soumya Pandey (IAS 2017), who initially questioned why trekking was necessary (as she is an 'officer, not a climber') says she later realised how important physical fitness is, especially for maintaining law and order. Zafar Iqbal (IAS 2017) acknowledges, *"If I can implement even 80 % of this on the ground, then it will be a good thing. The environment here is really good in terms of learning, friendships...it will really help us later in our lives."*

The turning point towards a firmer understanding of the country for many trainees happens whilst traversing the country on a journey of discovery and a fresh perspective on the nation's diversity during *Bharat Darshan*. Many discover their *raison d'être* for joining the Civil Service. The 6-7 week journey across India is designed to help them connect with the ground realities of the country—in terms of geography, culture and socio-economic issues. This eye-opening experience through its various attachments (armed forces, NGO, tribal village, public sector) enables them to grasp the complex, multi-layered problems that they will go on to potentially handle in the future. The Officer Trainees appreciate how each place they visit has something to teach and inspire and how the country's diversity is not only a source of unity but also its strength and beauty. They learn to understand the value of first-hand experience. Vandana Garg's (IAS 2017) batch was taken to Gumla in Jharkhand to understand the problem of left-wing extremism. She *"...was surprised by the fact that we were being welcomed so affectionately. It made me believe that there is a bigger purpose in being an IAS [officer] and we have to work for it."*

CHAPTER 5

A SHARED DESTINY

The invitation to stroll down memory lane can spiral many an alumnus of the Academy into a kaleidoscopic world of vivid images and memories. On this journey of emotions and associations, the word 'dull' has no place. For most, the dizzying pace of the Foundation Course gives way to a gentler sort of amble in Phases I, II and the courses thereafter which are not without a strong element of learning and activity.

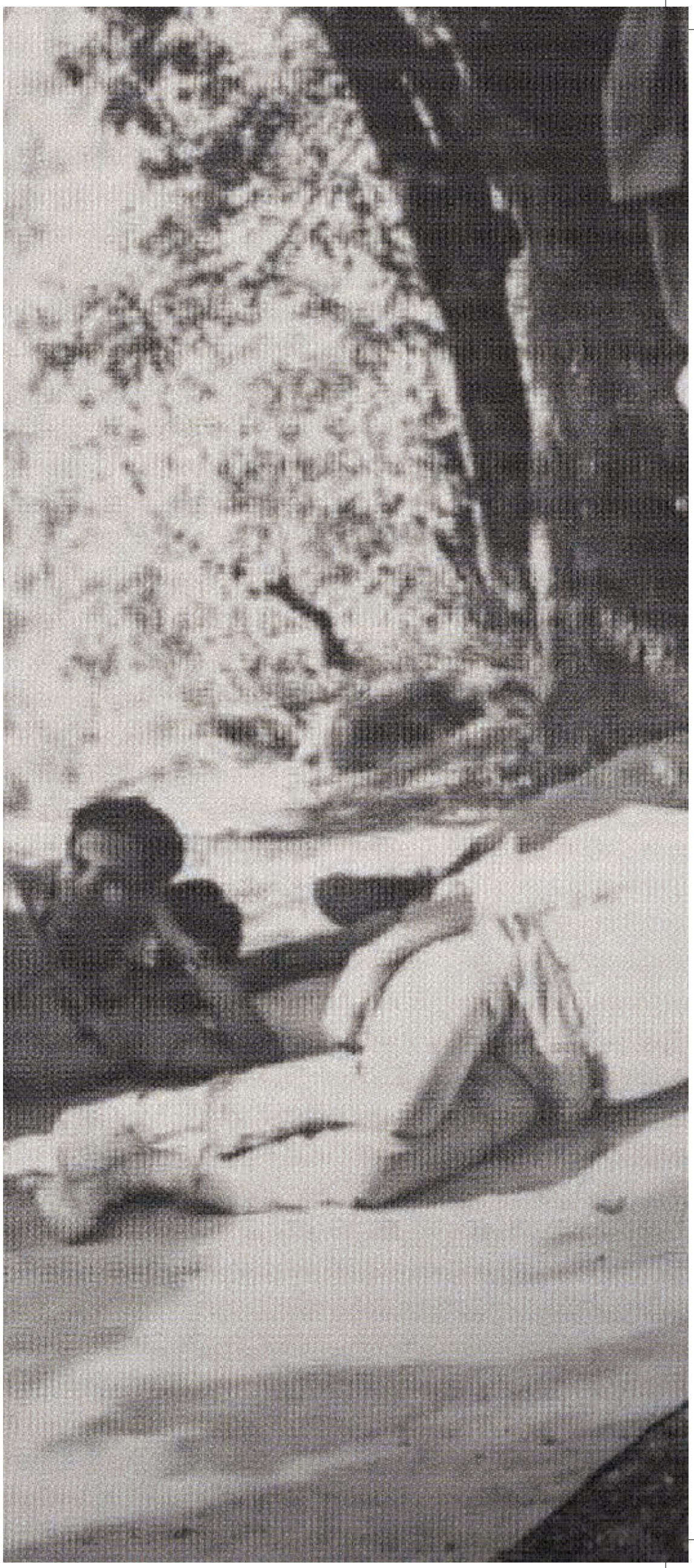

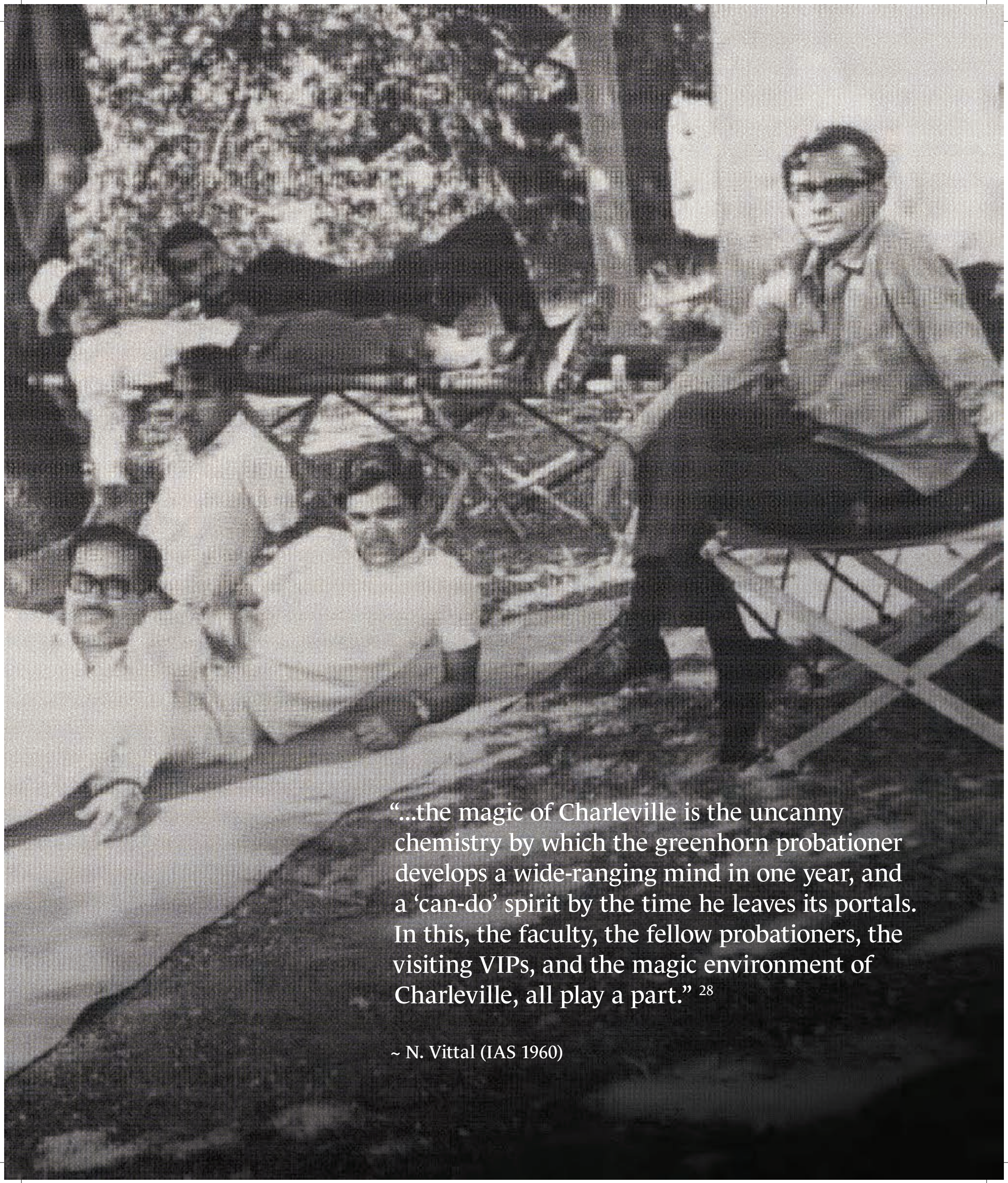

"...the magic of Charleville is the uncanny chemistry by which the greenhorn probationer develops a wide-ranging mind in one year, and a 'can-do' spirit by the time he leaves its portals. In this, the faculty, the fellow probationers, the visiting VIPs, and the magic environment of Charleville, all play a part." [28]

~ N. Vittal (IAS 1960)

A Shared Destiny

The understandable yearning to recreate their former idyll is most pronounced in how each reunion-batch celebrates its time together at the Academy. It is interesting to note the particularly endearing tradition where reunions for former alumni are organised by the young batch in residence. And why not? Such a custom reinforces already powerful bonds, promotes kinship between generations, and fosters a sense of homecoming that is deeply appreciated. The fresh memories thus created are inter-woven with reminiscences of decades past.

What is it about this institution that forges the links that compel all batches, old and new, to remember it with such fondness? What makes it exceptional?

Kalyani Choudhari (IAS 1973) refers to it as an *"... alchemy wrought in Mussoorie to develop those fierce ties of loyalty, which bind us across the nation and even the globe, so that a network is created."* She recalls

"... a world of ideals and aspirations, incongruously punctuated by binges and mad acts of defiance, batchmates of all services, saints and sinners in equal mixture." [29]

For Chuden Tshering (IAS 1972), *"It is the making of a fraternity…a lifelong community of diverse people, and a sense of 'destiny together'."* Lalit Mathur (IAS 1968) avers, *"It was when I travelled as Joint Director that I realised, and understood, the amazing goodwill for Charleville—wherever I went, I found unexpected enthusiasm and overwhelming affection, from people of different vintage, no matter where they were, or how busy. Perhaps the probationer within can never leave us!"*

Lasting alliances are formed across the usual barriers of polite detachment when officers under training find themselves in the sort of situations that make kindred spirits of strangers: sharing rooms with each other; hiking daily, come rain or snow, from the interiors of Ganga Hostel uphill to the classrooms; dragging themselves out of bed at ungodly hours for PT; braving terrifying, unforgiving horses at the risk of breaking a limb; rushing to meet deadlines for difficult assignments; and, of course, navigating complex friendships and relationships. Randeep D. (IAS 2006) terms this a *"…process of 'baptism' into the Civil Service [which] begins from the moment one sets foot in the Academy."* [30]

Invigorating sports and heated discussions at one end of the spectrum; quiet evenings and budding romances at the other—Academy life tends to follow a cadence all its own. Add to this mix the thrill of adventure sports attempted perhaps for the first time, or summoning of inner resilience and team spirit on a tough trek and one understands why the special camaraderie that develops here is embedded for life.

Home Away from Home

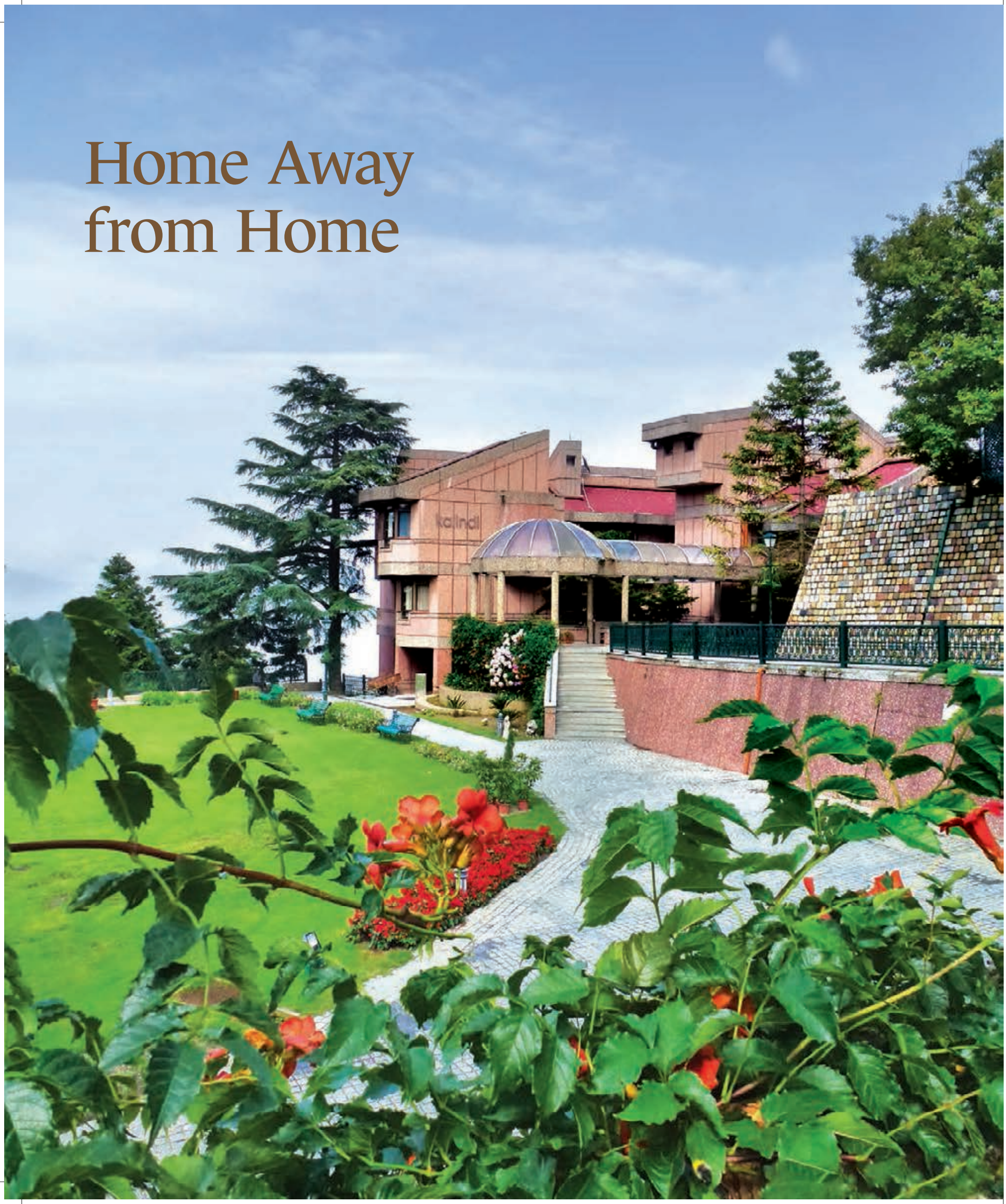

The salubrious mountain air and serene landscapes of Mussoorie create a sublime setting and have the *"... capability to tousle your hair with a fresh breeze of hope,"*[31] as Gopalkrishna Gandhi (IAS 1968) so lyrically puts it. Senior batches recall instances of Nawal Singh commiserating with the horse instead of the fallen rider, the inimitable Barreto managing his restaurant, Hari who could produce anything from a pocket Constitution of India to a solar *topee*, and the welcome 'jolt-up' brew dispensed from cannisters by Agam Chand and Dil Bahadur.

Despite the many changes, Brian Albuquerque (IPS 1969), after attending their batch's Golden Jubilee Reunion at the Academy, is pleased about *"...how this Academy has maintained its soul...it all takes you back to those 50 odd years ago...I think they have done a wonderful job in keeping up with the times and at the same time maintaining the soul of the place."* G. R. Joshi (IAS 1969) is glad to be present at the reunion as well, and remarks, *"Wonderful memories here! ...and now coming back to the family of my alma mater, you really feel proud of it. It has gone through changes but our Happy Valley remains and our Director's Block remains. So we are very proud of this, as these two spaces still exist for us old people; we are archaic now so naturally for us these things hold value."*

This sense of continuity imbues the atmosphere at the Academy, and cuts across generations, batches, faculty, service providers, and older retainers. The mess bearers, gardeners, cleaning staff, and clerical staff go about their job with efficiency and quiet grace and speak of satisfaction with the facilities provided to them. Jagdish, who recently retired as Head Waiter at the Academy, is glad to have been a part of an institution that looks after its people: *"If you are in need, the Academy and the OTs will be the first to support you. They will even pull you back from the brink of death, as happened in the case of my wife and many others."* Narayan Bunkar, who has worked at the Academy for the last 30 years, says, *"All that I have learnt in life is because of this Academy."* Atma Ram, the gardener responsible, along with his team, for the brilliant splashes of colour seen in the Academy lawns all through the year, says, *"The Academy not only trains the future IAS officers of this country, it also grooms us and trains us to always look forward in life."*

With his salon located just outside the gates of the Academy, Mohammad Waseem, hair dresser to countless trainees over the decades, remembers, *"When I first came to the Academy in 1975, I used to cut hair for 25 paise. If I didn't have change for a rupee and if the customer was generous enough to let me keep the rest, I would close the shop and retire for the day...the Academy has given me a lot, and I have tried to reciprocate its generosity. During the fire of 1984, we were overcome with grief as if someone we loved and cherished had died."*

An initiative for the well-being of the women at the Academy is *Vani*, a support group. Alka Kulkarni of the Language Department explains, *"Vani is our small in-house women's group. It is for every woman employee here. Vani is our own thing— the women get together, discuss their problems and experiences. We have health check-ups. We tell them about savings, gender issues. They take up other activities, they celebrate festivals."*

Mohammad Waseem at his hair dresser's salon

The Vani initiative at the Academy

In Sync with the Times

The Academy has kept pace with the times, upgrading its facilities over the years with the aim of improving the quality of life for its residents. The earlier batches of officers may recall many tragicomic tales of hardship, not without dashes of true nostalgia. Each generation chose to battle on gamely with whatever facilities they had and focused on getting the most out of their experience. As Prateep Kumar Lahiri (IAS 1959) wryly notes,

> "We were Metcalfians and Charlevilleans, a distinction only our batch had. In the peak of summer from May till September we remained in Delhi, and then shifted to Mussoorie, to face the severe winter."[32]

Today, gone are the days of hot water delivered in buckets and the Stapleton hostel outside the main gate with 'thunder boxes' and no modern toilets. Gone too are the days of signing a *parchi* for extra butter and milk. But looking after the Mess was and no doubt remains a contentious job. S.K. Modwel (IAS 1959) recalls the '*Aloo Andolan*', *"As President of the Mess Committee, I insisted that Pinto, the caterer, serve potatoes for every meal since I love potatoes. This caused an uproar, especially among our sambaar-deprived friends from the South, who marched in a procession shouting 'Aloo hi Aloo, Aloo Hatao', before R.K. Trivedi, our wise and highly popular Deputy Director. Much negotiation followed; aloo and sambaar henceforth co-existed in uneasy equilibrium."* Now, the modernised Mess serves up a balanced menu, catering to hundreds of officers throughout the year.

Much has changed since the eighties, especially after the Academy underwent a challenging phase following the fire of 1984. Reminisces Yaduvendra Mathur (IAS 1986), *"The facilities are tremendous [now]. In our time there were two computers for the whole Academy. We were all in Ganga [hostel]. If a telephone call came for us, we had to run from Ganga to that one telephone. The struggle caused great bonding!"*

Bonhomie

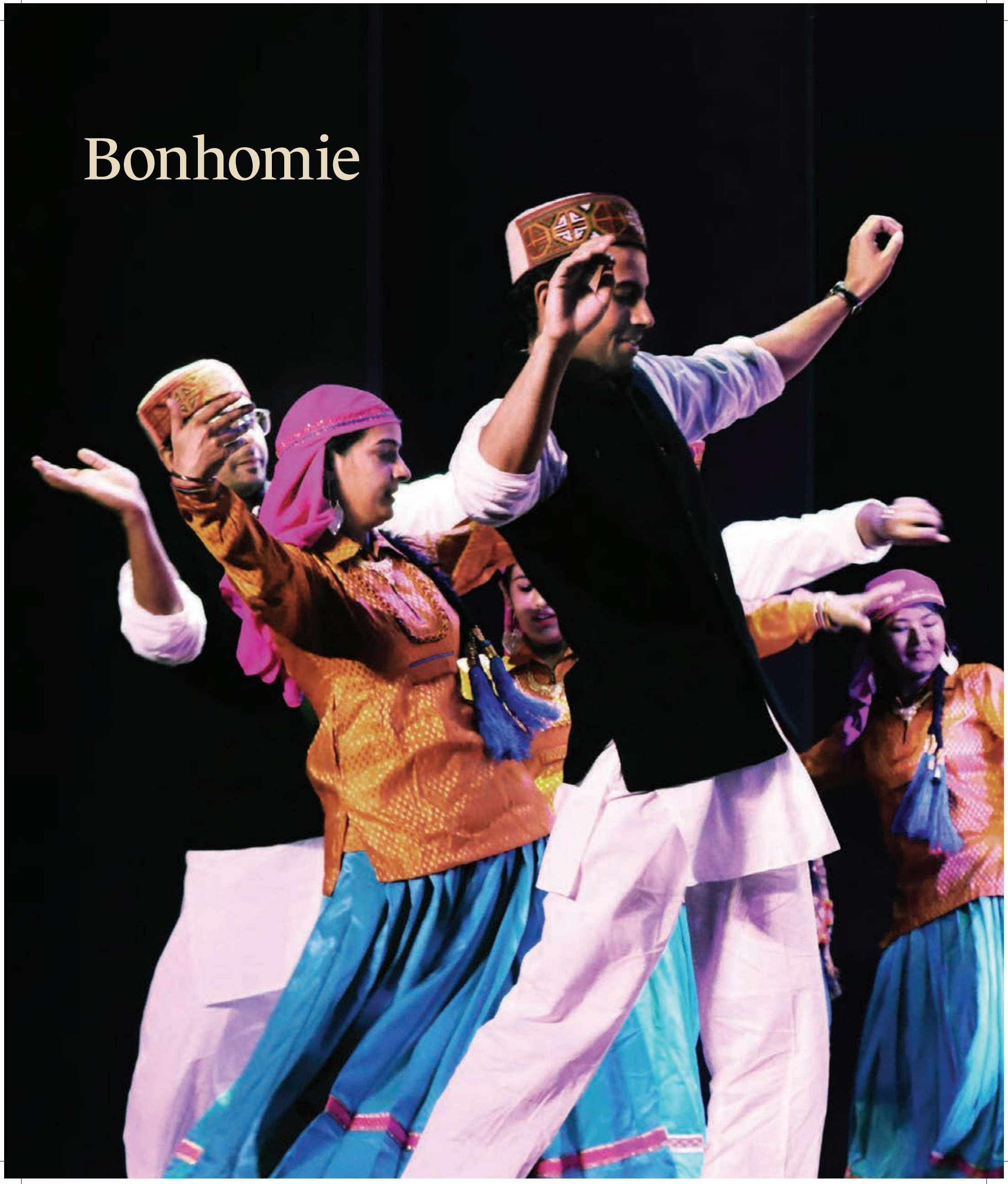

A riot of colour and tradition on India Day

"An Officer Trainee at the Academy is ebullient; her hard work has finally paid off and now she has the right to celebrate. But at the same time she is aware of her responsibility."

The Academy trains men and women to be the kind of officers that people need; possessing integrity, skills and passion. Thus, it becomes natural to assume that such an institution would be filled with a solemn, intimidating air; where commandments are to be taught, learnt and implemented. However, assumptions of this kind are immediately dissipated with the first step through the hallowed portals of the Academy. It has a noticeably vibrant, jubilant atmosphere "*...where everyone [trainer and trainee alike] comes by choice, and that is why it hasn't failed*", says Sanjeev Chopra. He points out that "*...everyone is celebrating here, but it is a conscious kind of celebration.*"

Cultural activities are an important part of an officer's training, offering an opportunity to showcase not only individual talent but to appreciate each other's heritage, and in the process to discover the country's composite culture. Each generation has found its outlet for creative expression through dance, drama, music, literature and the visual arts, encouraged whole-heartedly by the Academy. India Day is a riot of colour, dramatic flair, and bonhomie. Trainees dress in their traditional clothes; a mélange of regional cuisines is served, and the pride of sharing one's own micro-culture with friends from elsewhere in the nation leaves lasting, treasured memories.

Vox Populi

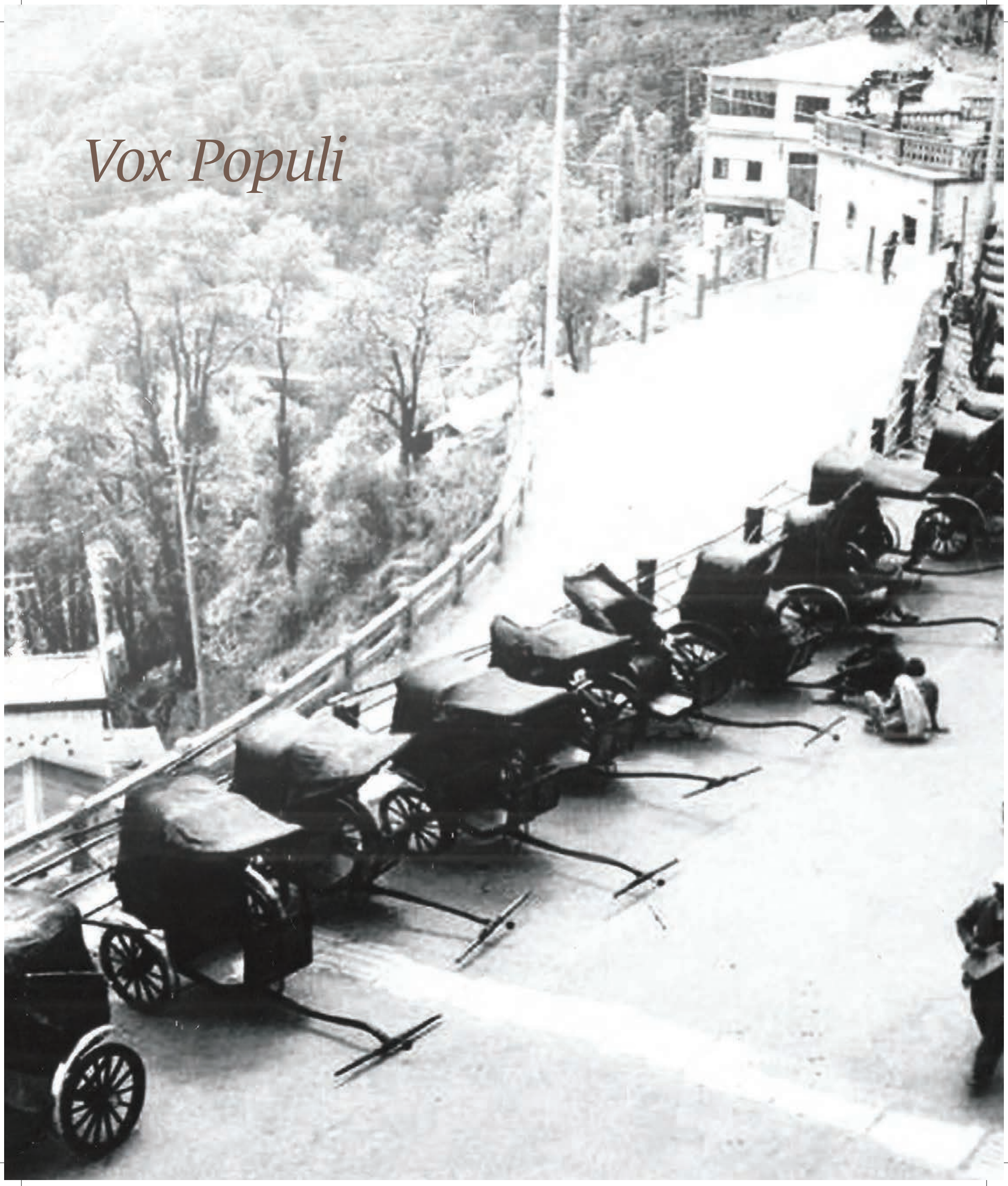

A symbiotic relationship has emerged between the town and the Academy amidst the lush hills of the Himalayas. Gopal Bhardwaj, a historian and long-term resident of the town, reflects, *"The Academy has no doubt benefited the economy of Mussoorie a lot. Even today, the supplies for kitchen, bakery, all go from the locality. Mussoorie's prestige increases...the Academy is a premier institute of the country, and since it shifted [here], tourism built up, the area got lively and Happy Valley became one of the posh areas."*

Adds Milkhi Ram, who runs a tailoring and fabric shop at Library Point, *"The Academy is the pride of Mussoorie and its people. The Academy has always helped the people and the town in many ways. One project that springs to mind is the one undertaken by the Academy to alleviate the condition of rickshaw-pullers in the town."*

Requiem For the Hand-Pulled Rickshaw

Since colonial times, a rickshaw plied on the streets of Mussoorie, in which man pulled other humans. This symbol of slavery was brought to an end by three batches of Officer Trainees in LBSNAA, 1993, 1994 and 1995. They built bonds with the rickshaw pullers, visited the impoverished villages from where they had migrated, lived in their homes and also ran a TB health clinic for the rickshaw pullers. The Officer Trainees designed a new model of a cycle rickshaw appropriate for the hills, advocated with the municipal civil authorities to outlaw hand-pulled rickshaws and permit cycle rickshaws. They also organised grants for purchasing the rickshaw, organised their manufacture and finally all the hand-pulled rickshaws were replaced with cycle rickshaws. In doing so they learnt and demonstrated the best traditions of the Civil Service: *compassion, innovation, partnership and persistence* for building a more just and humane India.

Plaque at Karmshila Block

The Academy has witnessed plenty of change over the years. Many new areas were acquired to build hostels and staff quarters. Dhundup, an old resident of the Tibetan settlement in Happy Valley, used to help teach the trainees basketball and recalls a time when the officers at the Academy would play friendly matches with the local schools. He says, *"I remember that in 1962-63, there was only one tennis court in the Academy. We had a ball-picker called Gangaram who was very famous among the officers. He was also an amazing player of both badminton and tennis. The Academy continues to shine; it is one of the best institutions in India."*

R.K. Khanna (owner of Jackson Tailors) has been in Mussoorie since 1951, when his father bought their shop from an Englishman. He has been associated with the Academy since the day it shifted from Delhi in 1959. He relates, *"During Diwali every year, hundreds of probationers used to come to celebrate at my place. Mr. M.G. Pimputkar was a very strict officer and many probationers and officers were scared of even talking to him. They came to me and challenged me to go talk to him. I casually went up to him and told him that the suit he was wearing was of an old design and style, and I could fix it in accordance with the new style and fashion. He took it well and we became good friends since."*

Photographer and writer Ganesh Saili speaks of his long association with the Academy, recalling that the classes were smaller, with only 80 to 100 probationers, when he first went there to teach in 1995. *"Now it's like being in a champagne bath, always bubbly! It's amazing teaching those kids, you had better know what you are talking about because those kids are on the ball! And there is no bluffing them. Either you know [your subject] or you don't know! It has been a tremendous experience."*

The renowned author, Ruskin Bond, recalls, *"I liked the library at the Academy, which was extensive, but it was burned down in 1984. As a writer, it gives me pleasure to know that there is a new extensive library which people can use."*

E^3–Empathy. Energy. Excellence

In the final analysis, the Academy is not merely a training institution for the Civil Services, but an establishment with its own idealism and *joie de vivre*, composed of people with a lot of heart and spirit; of people with a sense of kinship, fraternity and the earnest desire to better the lot of their countrymen. Here is where people's roots meet their personal growth, where compassion meets excellence.

The brilliance of such a place—only some scattered, charming buildings in a small mountain town, in the end—deeply astonishes. Here, something human, full of hope and strength, underpins the environs, year after year. And like all homes, this one beckons again and again.

The Batch of 94th Foundation Course at the Academy

BEYOND CLOUDS END

Sometimes I revisit
Dreams that
Exist no more.
As life evolves
We often move on
To a distant shore.
A familiar lane
Well-trod is now
Beyond cloud's-end.

I linger awhile
And pause
To reminisce
About gentle
Treasured moments
Lost in the mist.

And then
Turn around
To face the sun
With a firm belief
That if it was more than a mirage
The flowers will grow again. [33]

Rajni Sekhri Sibal (IAS 1986)

OLD PHOTOGRAPHS – BATCH OF 1990

Old photographs
Sepia tinged memories,
Quaint and charming,
A pictorial script
Of a vanished time,
A vanished way of being.

Old photographs
A hundred odd black and white
Mugshots. Amusing relics –
Unstained by colour,
Unmarked by character,
Disparate, yet bearing
An elusive resemblance to each other
A certain youthful vacuity, perhaps.

Old photographs,
What do you speak of?
A time, when life stood
Poised, on the edge,
An arc of endless possibility.
When we viewed the world
Instead of smugness,
Vigorous, determined eager to leave. [34]

Sumita Misra (IAS 1990)

From sea level

To a thousand eight hundred and eighty meters above

From Forty Five degrees of scorching sun

To sublime salubrious surroundings

From the reluctant, late riser

To the early morning yoga enthusiast

Oh phase five !!!

We rediscovered the golden path
to good health, knowledge and happiness.

T. K. Jawahar (IAS 1990)

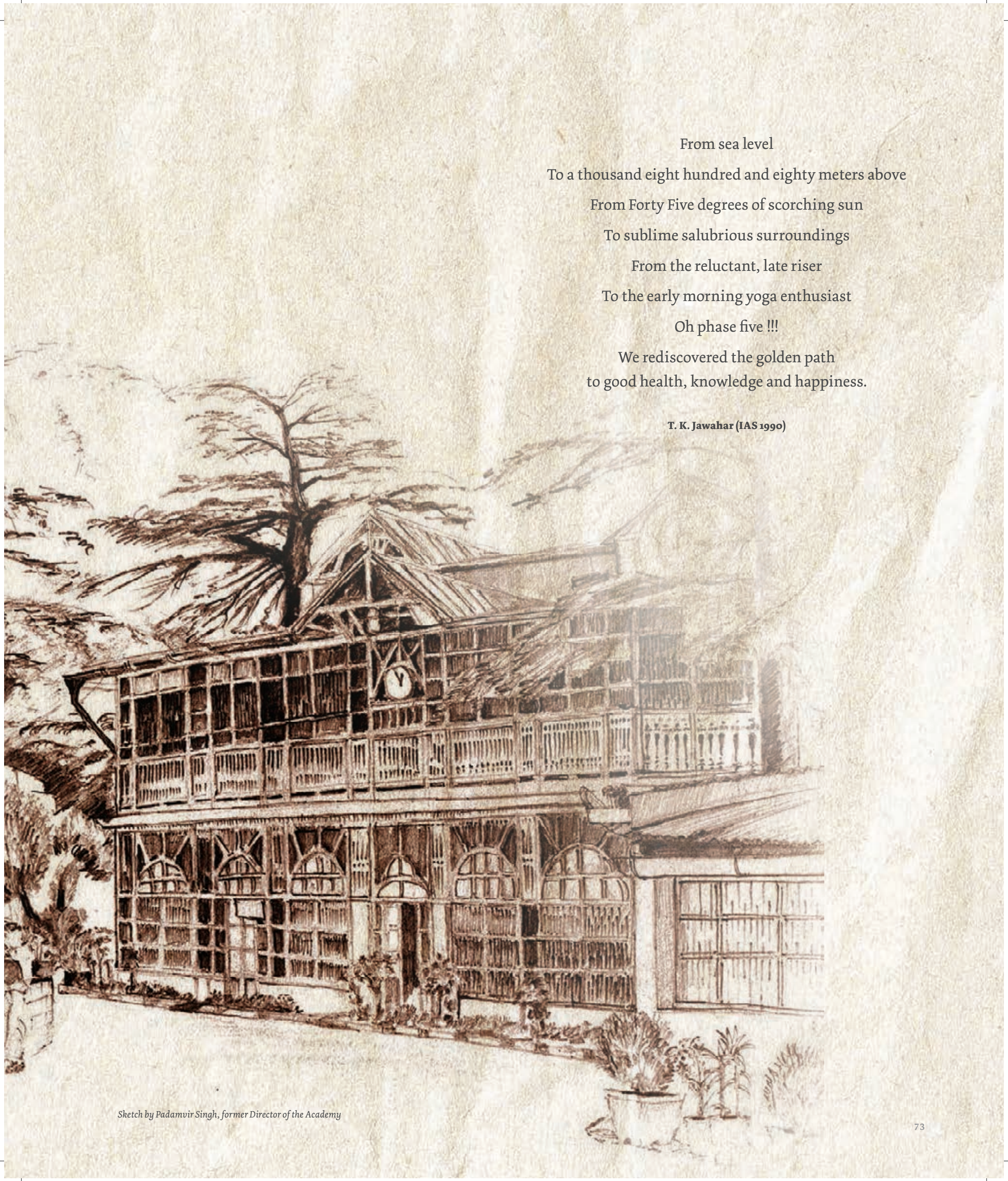

Sketch by Padamvir Singh, former Director of the Academy

The Office of the Director

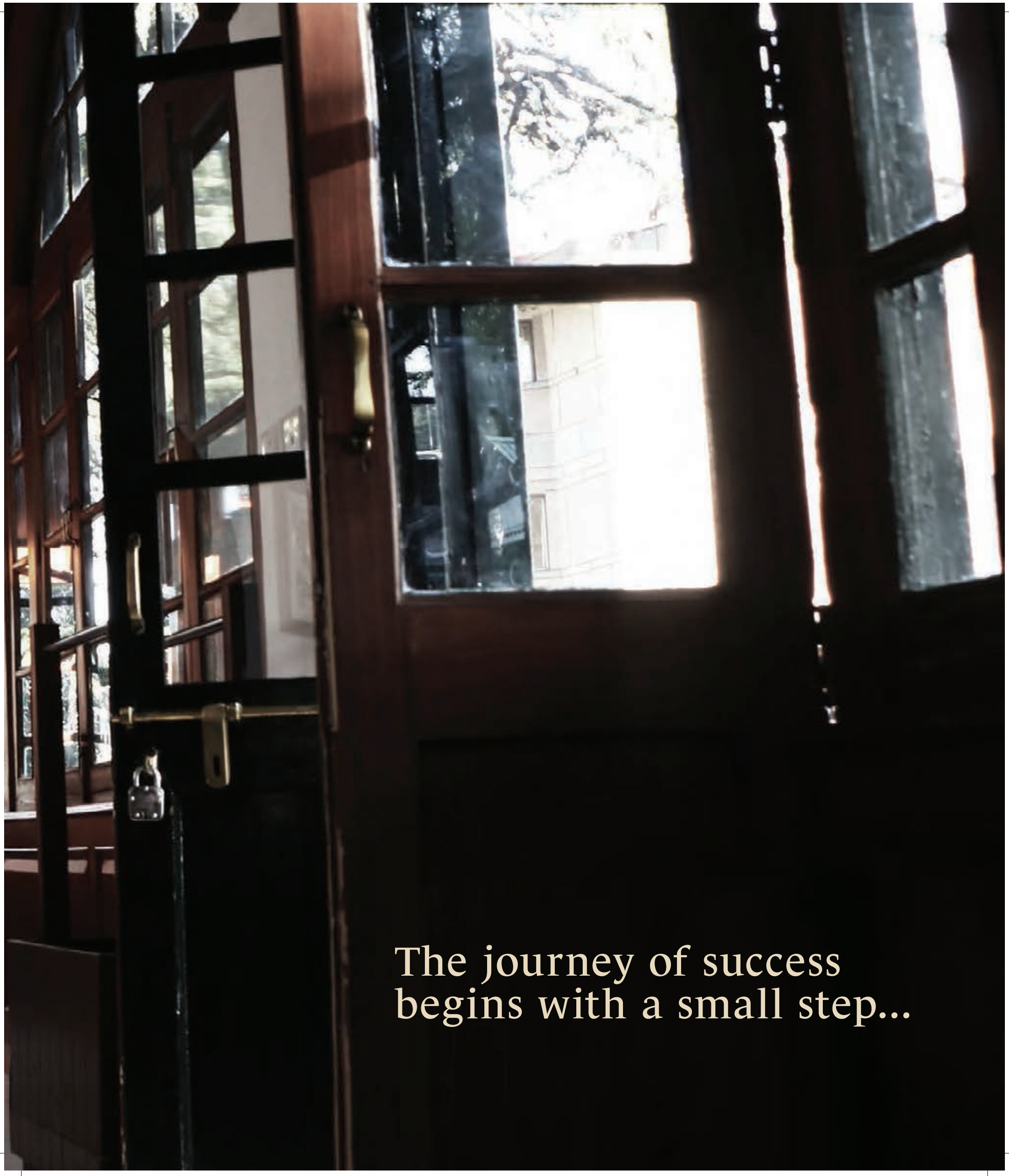
The journey of success
begins with a small step...

WORKS CITED

1. **Gupta, Deepak.** 2019. *The Steel Frame: History of the IAS.* New Delhi: Roli Books.
2. **Dar, R.K.** 1999. *Governance and the IAS: In Search of Resilience.* New Delhi: McGraw Hill.
3. **Dar, R.K.** 1999. *Governance and the IAS: In Search of Resilience.* New Delhi: McGraw Hill.
4. **Centre for Law and Policy Research.** 2017. *Constituent Assembly Debates.* http://cadindia.clpr.org.in/constitution_assembly_debates/volume/10.
5. **Lok Sabha Secretariat.** 1958. *Lok Sabha Debates of March – April 1958.* New Delhi: National Archives of India.
6. **Lok Sabha Secretariat.** 1959. *Lok Sabha Debates of August-Novemeber 1959.* New Delhi: National Arvhives of India.
7. **Vohra, N.N. 2010.** "Remembering our Alta Mater". In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 44. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
8. **Trivedi, R.K. 2010.** "Operation Charleville." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 1-2. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
9. **Hari, Rajinder Kumar. 2010.** "Golden Jubilee of the Academy." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 209. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
10. **Bodycot, F. 1907.** *Guide to Mussoorie.* Mussorie: Mafasilite Printing Works.
11. **India. Prime Minister's Office. 2016.** *Cabinet approves MoU between UPSC and Royal Civil Service Commission, Bhutan* https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/cabinet-approves-mou-between-upsc-and-royal-civil-service-commission-bhutan/.
12. **Wangchuk, Rinchen Norbu. 2018.** *The Better India.* https://www.thebetterindia.com/163334/sardar-vallabhbhai-patel-ias-news/.
13. **Narain, Kripa. 2010.** "Reflections in the Mirror." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnhotri, 6. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
14. **Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration. 2016.** *Academy Song.* https://www.lbsnaa.gov.in/cms/academy-song.php.
15. **Lok Sabha Secretariat.** 1960. *Lok Sabha Debates of March – April 1960.* New Delhi: National Archives of India.
16. **Durishetty, Anudeep. 2018.** "Why Conversations Matter." *Anudeep Durishetty's Blog (blog)*, October 14, 2018. https://anudeepdurishetty.in/why-conversations-matter/.
17. **Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration. 2016.** *Centre for Rural Studies.* **https://www.lbsnaa.gov.in/lbsnaa_sub/index.php?crs**
18. **Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration. 2016.** *Centre for Disaster Management.* **https://www.lbsnaa.gov.in/lbsnaa_sub/index.php?cdm**
19. **Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration. 2016.** *National Gender Centre.* **https://www.lbsnaa.gov.in/lbsnaa_sub/index.php?ngc**
20. **Singh, Padamvir. 2010.** "Academy: Past, Present and Future." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 218. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
21. **Dhar, T.N. 2010.** "Recollecting India's First President." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 26. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
22. **Chowdhury, Javid. 2012.** *The Insider's View: Memoirs of a Public Servant.* N.A.: Penguin Viking.
23. **Zhimomi, Ilezhe Himato. 2010.** "Rana's Whistle." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 179. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
24. **Mishra, Prashanta Kumar. 2017.** *In Quest of a Meaningful Life: Autobiography of a Civil Servant.* New Delhi: Konark Publications.
25. **Abraham, P. 2009.** *Memoirs of an IAS Officer: From Powerless Village To Union Power Secretary.* New Delhi: Concept Publications.
26. **Chatrath, K.J.S. 2010.** "Mussoorie – Sweet and Sour." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 77. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
27. **Anand, Atul. 2010.** "Looking Back." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 182. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
28. **Vittal, N. 2010.** "My Year at Charleville." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 51. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
29. **Chaudhuri, Kalyani. 2010.** "Mussoorie Mix." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 114-15. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
30. **Dev, Randeep. 2010.** "Life and Times at the Academy: Memoirs of a 2006 Batch Probationer." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 201. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
31. **Gandhi, Gopalkrishna. 2010.** "Reminiscences of the Academy." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 86. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
32. **Lahiri, Prateep Kumar. 2010.** "Recalling 1959." In *From Metcalfe House to Charleville*, edited by K.J.S. Chatrath and V.K. Agnihotri, 37. Mussoorie: Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration.
33. **Sibal, Rajni Sekhri. 2016.** *Clouds End and Beyond.* New Delhi: Wisdom Tree
34. **Misra, Sumita. 2012.** *A Life of Light.* Punjab: Unistarbooks Publication

---

Photograph Credits:

Page 6: Folio from *Reminiscences of Imperial Delhi*, Delhi, 1843. Commissioned by Sir Thomas Metcalfe. Source: http://www.bl.uk/onlinegallery/onlineex/apac/addorimss/f/019addor0005475u00084vrb.html.

Bhardwaj, Gopal. Page 14-15: *top*; Page 20: *bottom left*; Page 68: *Background.*

Kamble, Chandrakant. (IAS 1991). Page 32: *top left corner.*

Modwel, Rajat. (IAS 1990). Page 20: *top right; Page 39: bottom left; Page 41: top; Page 56: top.*

Sinha, Samir. (IFoS 1990). Page 39: *middle right, bottom right.*

Srivastava, Vaibhava. (IAS 2018). Page 56: *bottom left; Endpaper.*